পবিত্র প্রণয়

কাবা।

औत्नाभीन्द्र, (माम) अर्थ

अर्ग क

কলিকাতা '

বিশাপুর প্রাকৃত ময়ে

শ্রীমপুরানাথ তর্করত্ন দার:

- 150

सम १३४२ माल

উপস্থার।

পারন পূজনীয় জীয়ুক্ত বার জয়ক্ত্ত মুধোপাধ্যায় মহাশয় জীচরণেয়

প্রশতি বিনতি নিবেদন মিদং

থামার বচিত প্রিয়দর্শন, হিতবাধ ও নীতিগর্জ

নামক তিন থও পুত্তক দেখিয়া মহালয় সন্তোধ

া চাল করিয়াছিলেন বলিয়া, লামি প্রবল উৎসাহে

ভৌগাবির প্রনিয় নামক কান্য লিখিতে প্রবৃত্ত

ভৌগাবির প্রনিয় নামক কান্য লিখিতে প্রবৃত্ত

ভৌগাবির প্রনিয় প্রনির প্রনিয় মুদ্রিত হইয়াছে। এই

ভৌগান লাডের জন্য উপস্থিত হইয়াছে। এই

শুলার অভিলাধিত কিন্তু ক্রতকার্য্য ভইতে পারিবে,

আম্যোগ্য ব্যক্তির প্রস্থকারের উৎসাহ বিষদৃশ, এই

ব্যা স্বরণ করাইয়া মহাশ্য়কে অস্থলী করিবে,

শ্রামিইহার কিছুই জানিনা।

তেই এন্থ সম্বন্ধে আমার বক্তব্য এই যে,কোন পুত্তক পুন্তের লিখিয়া দেখি কেমন হয়, এই ইচ্ছার বলীভূত ভূটিয়া পবিত্র প্রভাষ পদ্যে লিখিয়াছি, ন্তুবা ক্র এইব এমত দুরভিলাধ করিনাই। বদি মহাশ্র ও মন্য পাঠকগণ ইহার প্রতি একা করেন তরে

পুনরায় কোন পুস্তক লিখিতে ইচ্ছা হইলে পদে। লিখিতে চেটাকরিব, তাহা না হইলে আফার পদ্য লিখিবার উৎসাশ্হর আদি, মধ্য ও শেষ এই মাত্র।

মহাশত্ন ও পাত্রকার খনে ফরিনত পারেন এই এছের মর্নাকাই কাম্পন্তিক, কিন্তু ভাষা নহে; ওকটা সমূলক গণ্প অবলয়ন করিয়া কেবল প্রিক্ত थ्रांत्र मानमे द्रशिक्षाह इता स्म १५ है। कहा হটয়াছে ভাহাই কাম্পনিক,

रकान अस्मात्र हेशा था ग्रांस ह्या १ साम १ रुखता स्थमन मुह्छ, उहै कोटा-बिदिके लेगा सकल (मर्वे त्रुप महक क्रियांत छेटम्मर्ग हेश्ट अहिन्छ অগ্ৰেণ্ড শুৰ্ফ বাহুল্য রূপে নিবেশিত করা ফারাছে, এবং এক রূপ **ছদ্দে**র পদ্য পুষঃ ২ পাল করিতে বিরক্তি জন্মিতে পারে এই নিমিতে প্রায় কোন ছন্দই দ্বিভীয় বার লিখিত হয় নাই। ইতি

मन ३२-२ माल लातिथ ५५८म आयाङ्।

নিবাস বর্দ্দানাতঃপাতী অনুগতস্য শ্রীষ্ণ প্রশাসীনাথ গুওস

পবিত্রপ্রগয়।

00000

মজ্লাদ্রণ।

্হ শিব শহর । লহ মম প্রণতি।
হর রূপা-লোচনে শুনক বিনতি।
স্তুত্ত দুরাশার, চিত্ত-শুদ্ধ-কান,
শক্তি কি হেন তুবি, প্রকাশি ভক্তি।
কিলোক-শরণ, আশুচোব-মহিম,
ভাই ডাকি সক্সা এমতি।

গুরো - গুক প্রার্থনা কিছু নাহি করিব।
আশা গাঁথি ভাষাকৃলে গাথা বিরচিব ॥
উচ্চ বিষমতম, ভাষা-কুত্মমতক,
মূলে বসি ভালে ফুল, কেমনে তুলিব।
নাও হে মহেশ, শক্তি বিশেষ হেন,
বাঞ্চামভ সেফ্ল লভিব।

ভাব-সৌরভ রস-মকরক্ষ ক্ষুরিবে।
ক্রেক্টল চাহি ভাতি গাঁধনি হইবে।
ক্ষীয় মধুকর, বিজ্ঞ হুদাক্ষাদে
ভাল বিনা যাজে ভাতে, ভুষিতে নারিবে।
নতুবা অফিঞ্চন, বর যাচে পদতলে,
ভাতো। ইহা ক্রেপে রাখিবে।।

এন্থারন্ত।

श्यम मर्ग।

জন্মির তীরে করে, উড়িয়া উজ্জ্ল ।
জনমাথ ক্ষেত্র, বার খ্যাতি নীলাচল ।
জনমাথ দ্যুশনে, পাপ ক্ষর আশে।
অবিরঙ কড যাতি সেথা যায় আশে।
মাধবের দোলে, আরু বরিষার রপে।
লোকারণা হ'য়ে বায়, ঘরে ঘাটে পথে।।
বিশেষোৎস্থ, হলে নর কলেবর।
বায়ু প্রবেশিন্তে নারে, ভিঁড়ের ভিতর।।
জনিই সম্ব হয়, তখন কেমন।
সৈ জানে ভা, সে জনভা, দেখেছে যে জন।।
সন্দিগর্মি, রিক্চিকা, হইয়া মুর্যার।
স্বাধায় নাশে যাত্রে হাজার হাজার।

পুণ্যধামে কেৰ হয় এমন দুৰ্গতি? জানে তত্ত জগন্নাথ অপর নিয়তি।। বড় শোকাবহ কাও, ঘটে এক বার। প্রতিদিন মরে লোক, বিংশতি হাজার !! ষেধানে সেথানে শব পচিতে লাগিল। मानाब, उम्हि, श्या, म्याब इहेल ॥ যে ছুর্গন্ধ হ'লো, যেন ওকভু যাবেনা। ছুদিনের পথেতেও, নাসিকা ভোলেম।।। একে সে তুর্গস্ত্র, ভার রোগ সংক্রোমক। বাঁচিড কি. না পলালে, অৰ্থাই লোক 🖖 বাঁচিবার বিলক্ষণ, আশা যার আছে। চিকিৎসা, সুজাবাভাবে, সেও নাহি বাঁচে।। निमार्च ठाउक यन, भाष ठाउ छल। मुन, घरत (कर करत, रन फल रम सन ॥ অঞ্পূর্ণ নেতে কেচ, সঙ্গীগণে কয় ৷ " हाजिहा (यउना छन, मीरनत विनत् "।: আগড ঠেলিয়া শিবা, ঘ'রে টানে কারে: প্রাণ আছে বল নাই, আহা, কে নিবারে १। বঁটে বাঁখা অর্থ কারে।, চোরে লয়ে যার। वन, वांका, नाहि सुधु, (कल (कन हांस ।। বাডা ভাত কেলি কেহ. বহিদ্দেশে যায় ৷ मिलमा उलाहे छुछी. कितिए छाहा ॥

बिष्ट्रमाल शिहा (म्बि, ७३ केंद्रि (कर) शालके (हथि कि नारी केंद्रित, माहि सिर । (कामराही हैं।एन, गुलका छ (कांग्रा कहि । बाल, "भाष ! (कांधा शाल स्याप्त शतिकांत । বভাষণ বিদ্যা ছাপ্ৰিনীয়ে কে আছে সংযায়ে । জেনে গুনে একা কেন, ভাজিলে আমারে । কজ জ্ঞান কালিজে, ছালিকে চেয়েখ চোট্ছ। ভাজে (কন ফেলিসে, এ নিদ কণ শেষক), रुष्ट भीगा किरिएस प्रताल उन्हांक । बहे शुन्र रमन्न भी क दावानाय माथ ।" (शाशनीत भारत, । कर शांस (लड शांध मुक्त स्मार बंदित लाह्या, छाईछिएक माणार ।। भट्ट "शिएरा। यहा सहत. व्याधि गांव संग्र । প্তি হ'ংগ পতী দিব, অন্য কার ছাতে লা अरला भदला भाव, झमरशब धन। সে যাবে কৰিব আমি, হয় কি এমন **গ** शहे याव (नैत्व रेन्स्म किवाद (अव्यक्त : कारनमा कि विधि, धकशांग छूहे कांग्र १। নিভান্ত না শোনে বিধি, গাঁৱ প্রিয়াগলে। নিভাব বিচ্ছেদানল, ডুবি অ**ব্ধি-জলে** ॥" जनक जननी कैंग्टन, शांख्या धूनात्र। निकटि कालत (एता. कीय-मून) कात !

প্রথম সর্গ।

এবাপার দেখি ক্রমে, যা**ত্তি পলাই**ল ৷ রথ টানে কেবা, শেষ এমন হ**ই**ল ৷৷

বান দাবানল প্রায় সহামারী বেডা দায়, যোর দায় আর কি এমন ? বৈৰেশে বিপাৰ হ'লে কি বিজ্ঞত করে ভোগেল, সেই জানে ভুগেছে যে জন। ५ ५२१ कि. खादण. सिक्स्सित केंग्स भन. समह (मधिरत कि शकात । দ্যানুত নিজ্যান্থ্য প্র উপকরে কথা शरपः पुष्यदे जिल्ला ।। के विरान्दत था अबाहेगा व बखहीतन वस्त्र निया. कार्डाशः दिलास्य कश्चे कृतः ! रियाम्बर मारा करि, वानारथ मनाथ करि, भनावस्य मन्द्रतत **मृद्रत मृद्रस** ∦ ्यु व्यानतम् ऋष्ठेयन. यद्भात शक्त शक्त धन, कंग्रेंक विषय कार्या कि छि। भूतो-मार्ट्य (म नगरः, **डीवांत्र है**। পর উপকারে পেতে গ্রীভি।।

*ইইার নাম ৬ ঠাকুরদাস রায়, বর্দ্ধমান জ্বেলার অন্তর্গত বাংক্রো প্রাম ইহার জন্মভূমি, ইনি গ্রন্থেটের নিম্ক বাংলার দেওয়ানী কার্যোপলকে এটকে অবস্থিতি করিংতন। যথা দাধ্য যভনেতে, দে বিপদ সময়েতে, সাহায্য করেন কভজনে। উচিত ঔষধ পথ্য, বিভরেন লয়ে ভথ্য, ফে যেমন রোগী যে কারণে।। এঁরি শুণে কভ লোক, না দিয়া কাহারে শোক,

জীবন পাইয়া দেখে দেশ। এঁরি দানশীলভায়, ছংখা যাত্তি কত পায়.

আম, বজা, পাথেয় বিশেষ।। সে সাধুর পরিচয়, এই যাতে ভার নয়

ভাষা নয়, প্রভি লোলে রথে? যত দিন ছিল প্রাণ, এ প্রকারে মভিমান, করেছেন পুরণ এ রভে !!

क निन इक्रनीटल, क्रावाय महिम्स्ल,

वानिएउ वानिएउ रेनवाशीन । तांधूक खंदग-दादित, खंदरिनिन वास्त वास्त.

বালকের স্বর অতি ক্ষীণ।।' সারি সারি প'ড়ে শব, ভার মাঝে অসম্ভব, জীবিতের স্বর একি একি"!

চমকি চঞ্চল মনে, কহিলেন ভৃত্যগণে,

"আলো দেখা অবেষিয়া দেখি"।।

মড়াকি ছুঁইতে আছে, খোৱাল কুকুরে পাছে.

দংশে ডবে খোর দায় হবে।

ভূতের আড়েক এই, এর মাঝে যেতে নেই,"
নিষেধ করিল ভৃত্য সবে ॥
নাশুনিয়া দে বারণ, নিজে করি অন্বেষণ,
দেখিলেন জীবিত বালক,
প্রম-স্ক্র কায়, কাঁনিভেছে উত্রায়,

পডিতেছে চক্ষের পলক।। গগো যাগো কোলে নেগো, ওগো মাগোমাইনেগো" ব'লে সকাভর আধস্তরে।

গতাড়িছে ছুই ধ'র, আছে কে নিকটে ভার, কোখা আছে নাজানে অন্তরে॥ অবাহামরি কার ছেলে, জীবন্তে দিয়েছে ফেলে.

মৃত্যুমাঝে মৃত্যুর শ্যায়ে। কে করিল এ কুকাব. মকক সে পড়ি বাজ. ছেলে ফেলে প্রীণ লয়ে যায়।। হেলে ব'লে ছেলে হায়, ম'লেও মা ফেলাযায়,

কেলেঁযাৰে মনে নাহি লয়। মরেছে জননী ভাত, তাতিই হ'য়ে অনাথ.

প'ড়ে আছে এই জান হয় । আহা, কিদশা ভোষার, কিছুই জাননা ভার, জান পেলে এপ্রাণ যাইত।

নিরাতার অস্ত্রকারে, শব সহ প্রাকারে, নাজানিয়া আছহ জীবিত া

প্ৰিনে প্ৰবয় !

শৈশ্ব ছঃখের নয়, বিগ'ড়া ভোর সদয়, मजुरा अक्रांश (करा देएहा বুঝিলাম জগরাথ, দেখিয়া ভোৱে অন্প প্রহরী ছিলেন ভেবে কাছে !! ष्ठवर याध्याणी कड. किरिएस हे हे उत्पर्क : ভারাও কি করি মনুপ্রহ ৷ ক্রিয়াছে প্রক্ষিত, সিঁচে খেলে কি হয়ত ভোৱে বছ অনুকুল এভ 🔭; गांध वहे कथा बील. (धीन कति स्मक्ष आल. ক্লোড ভুলি অনিলা বারায়। कार्य भिष्ठ चुन्ड बीटना. मधरहरून हर्छ । এই বিবরণ সমূদায় 🖯 কৌথাকার কার ছেলে, কেল্লা সন্থান পেলে, কেবল কহিল এক ভন ৷ 'বাসা ক'রে. যোর**ঘরে**, ছিল এক ভা**র**নরে. এবালক ভাছার নক্ষ ।। नंतर इंशाह नाम, शिक्-नाम প্রভুরাম, भाक्षिल क्रममी हेश्रा . अत्र विश्व कि के हे ला, हा द्वारान मला मला, र्वें हिरांत्र ना (मिथ धाकांत्र ॥ नजीशाल চলিयात्र, छाई. छाजिया देशह.

এর মাতা পিতা গেছে দেশে।

111

প্রথম সর্গ।

আমিও দেখিনি পরে, মরিয়াছে মনে ক'রে, মেতরে ফেলিয়া দেয় শোষে'। "
লাবং ইহার নাম, শিতা হয় প্রভুরাম,
এই মাত্র পেয়ে পরিচয়।
আনি ভাষ কটকেতে, দ্যা পূর্ণ ষভনেতে,
পালে সাধু যেমন ভনয়।।

> एक श्रामाञ्चल, श्रामान्यस्यः ভাহে বজু শিশুমতি । বিশেষ ভাহার, কেহু নাহি আর. সৰে ভাল বাসে অভি॥ স্থেহ বা দ্ৰাইয়া, দিন গুড়াইয়া, বাভিতে সাগিলা কৈমে। লিখিতে পডিতে, শিধিলা ক্রমেনে, অকাতর পরিশ্রমে ॥ সাধুর যে মতি, শরতের প্রতি. দহা মায়া অভিশ্য ৷ শরং তেমতি, প্রকাশি ভক্তি, করে ভার বিনিময়।। कति छेणार्ड्सन, स्थी क्राय मन, করি এই অভিলায়।

বিষয় কাথেতে, নিয়োজি শরুডে माधु शोश भगुलाम ॥ তণ থাকে যার, মান কি ভাঙার. অভ্তরে থাকিতে পারে / कुष्ट्रम कृष्टिल, अब्ब कृष्टिल, অলি সমাদরে ভারে ॥ कार्यंत्र (किन्टल, ज्रांश्क नकरन, সাধুর বাড়িল কেই ! .द्रायां अपन, क्रिक्ट अर्द्धन. অক্ম হয় কি কেছ গ र्थावन डेमिन, खखान हृष्टिन, व्यक्तित शथ (शाला। जुन सुध नावे, भात्र भनावे, ভাবিয়া হয় বিভোলা !! 'মাতা পিতা কোথা, ভাহার বারকা, (किंदिर किंद्धार्थ भाग । কেন থাকি হেখা, মাভা পিভা যেখা थुं जि लातु (मथा गांव ॥" করি এই স্থির, স্বর্থীর, (इन काल (कान फन) इल इल व्हाथ, श्रकाणिया (माक. ' व्यामिन माधु-मनम् ॥

ध्ययं मर्ग ।

नविनद्य क्य. "यम छांदगामित्र, (मिथिञ् (म खांशायत्र । দয়া অবভার, স্থান সাধুড়ার. যে গুণগণ-আকর ।। যেবিনা যাহার. নাহি উপমার, স্থান আন কোন জনে। (घाट्य यात यम), धरे मिक् मम, ভাঁরে হেরি ধনরনে।। विश्व-खार्खाः मीरन महागद्र, যাচকের তুথ-ভাতা। (प्रदे समाजूब, धरहन श्रेक्य, · শরুতে জীবনদাতা " !! कहिएक किएक, नश्न-वाहिएक. অভিথি আকুল হয় ! শস্তা্যিয়া ভায়, সাধু নমু ভায়, জিজাসিলা পরিচয় !! ''পরিচয় দিতে, লাজ পাই চিভে, আমি অভি অভাজন। অনুভাণী ভাই, বলিবারে চাই, यपूर्व शाश-वहमा। अत्त भाभागत, जीवन जागात, প্রস্তুত হও এখনি।

श्रीतृष्ठश्च मित्रा, विमाश लहेशा. যেতে চাও রে ভগনি ॥ (त शीश खोदन! क्यांति कांत्रत. হয়েছি গহিত কারী : কেন খেয়ে লাজ, করেছি দে কাছ अक्रश करिएक नाजि। क्न वाहिलाइ. आधि अवहार. **उन्हार माज के ए**ए । আর কেন নহু শর্থ ভনহু, **ভাষে ভাঙি অনাভাৱে ।।** এতেক কৰিয়া, যেন আছাডিয়া, भ'एड गार अखांगड। माध गाउ ध'रह. खामन डेलाइ. বসান আদরি কত।। शनः कांनि बल. "आय बाहा काल, अंतर होतान धन। (तशुक नशन, शुख्राक छोरन. त्रथी (हा'क त्रशीयन। করেছি যে পাপ, ভাতে ভোর বাপ, वहेगात (याशा नहे। इथः जन-मंडा, এবে পিতা মাতা,

নাহি ভোর সাধু বই !!

গভারুশোচনা, দিভেছে বেদনা, जारे जावि जावि गता। ভাতে বেঁচে থাকা, পাব ভোর দেখা, वृत्वि अहे (म कांत्ररण ।। আমাহ'তে ভোৱে, বিপদ বিখোরে, পড়ি হ'লো ছুখ পেডে ৷ একথা তোমার, নহে ভূলিবার, জাগিবেক অন্তরেতে। ত্তপুকি ভোমার ? এসব আমার, জানিবে ভালের ফের। दब्रक्ति मम. आधार अ छ म. তোর দশা মিহিরের॥ ভাগোডে या हिल প্রাক্ত কলিল, ভূলে সব পরিভাপ। হ'য়েছ কেমন, দেখাও এখন, ৰাবা ব'লে ডাক বাপ "। এসব কথায়, সাধুর সভায়, পরিচর প্রকাশিল। যিলাইল থাতা, শরতের পিতা, ঘরে পরে প্রচারিল। শরতেরে ডাকি. সাধু মাঝে থাকি, इ.रे **ज**त्न चिनारेना i

शिका श्रेख (मैं। दि, विद्युत स्मार्ट, माधु भाधु बुबाहेला॥ च्रभारत्रत्र थन, (পায়ে সাধুজন, যথে পেয় করে ভার। হাৰিড বেমদ, হয় ভার মন. माधु-यन (म श्रंकांत्र । আঁধার ছাড়িয়া, অংলোকে আদিয়া (रयन मत्स्राप्त मिला। ति कर्ण मरकारमः भररक्रात कार्यः कूश युवि स्था नित्न । मात्र मिण्डिल, मुदा प्रचा प्रात. সহসা পেলে রভনে। কত বুধ ভার, দে জ্বানে যে পাহ, প্রভুরাম পার মনে ॥

পরে প্রকাশিল প্রতুষ্থাম, "ঢাকার নিকটে মোর ধাম।
লোক মুখে তত্ত্ব শুনি, দিন রাজি নাহি গুনি,
এলাম ধাইরা অবিপ্রাম।
দেখির সাধুর সাধুতায়, শরতে পোলাম পুনরায়।
সাধুর কল্যাণ হোক, এবশং মুরুক লোক.
দীর্ঘ আয়ুং বিধি দিন তাঁয়"।
সাধু স্বিনয়ী অভিশয়, কহিলা "কি বল মহাশয়?

किया किया करत काह, निधि या करतम यात्र.

অবশাই তার ডাই হয় ৷

শরতের ভাগো ধাহা ছিল, বিধির বিধানে তা ঘটিল।
আমি উপ্লক্ষ ভায়, ধন্য-বাদ বিধাতায়,

कांबा-धन छै। (कांट्रफ मिलिन । "

সাধু প্রভু উভয়ে বিশুর, শিষ্টাচার হ'লে ভার পর। অনেকে আলাপ করে, প্রভু হবিত অন্তরে,

প্রভুর বাড়িল সমাদর।

শিক্ষজনে করে যেপ্রকার, পিভাব সহিত ব্যবহার। শরৎ ডেমনি ধারা, তুই করে ভক্তি হারা.

আজাকারী সদাই পিতার ॥ এই রূপে কিছুকালাজীত, প্রভুরাম হ'য়ে হরবিড় । সাধু প্রতি প্রিরভাবে, কহিল বড় উল্লায়ে,

" আজি এক ইচ্ছা উপস্থিত।

উপার্জ্বনে হ'য়েছে সক্ষম আঠার বংসর বয়:ক্রম। এসময় শরভেম, উপযুক্ত বিবাহের,

আজা হ'লে করি উপক্রম ।

ইফীবাকো ছাউ সাধুবর, হাঁসি-মুখে করিলা উত্তর। "শরতের বিভা দেই, আমারো বাসনা এই,

कना काथा ५ (य प्रभासत"।

প্রভুরাম কছে পুনরার, "দেশ হ'তে আনাব কন্যার ৷ করেছি সর্ব স্থলা, আছে কন্যা স্থলকণা, হেন কন্যা খুজে যেলা দায়।
পিতা নাই মাতা বর্ত্তমান, অমবস্তা নাহি সংস্থান।
ুতাতে কি ক্ষতি আমার, কন্যাই আনিব তার,

ভারেভ দিবনা কন্যা দান ?
বিন-কন্যা গরিবের ছেলে, এবিবাহে স্থা নাহি মেলেঃ
বিবাহ সমান ঘরে, সুখী হয় পরক্ষারে,

চাহিনা রাজার কন্যা পেলে "৷
সাধু শুনি হইলা সম্মত, কহিলা "বিলম্ব আর কত।
পাথেয় পাঠায়ে দাও, ছরিতে ভারে আনাও,

এই লও মুক্তা ছুইশভ ,।।

পাঁতি লিখি পাখেয় নহিত, প্রভুৱাম পাঠান ভ্রিত : ছুই মাস গত হয়, কন্যার হ'লো উদয়,

বাসা দিলা অভি সন্নিহিত। বিবাহে বিলম্ব নাহি আর, প্রভুরামে সব কার্য্য-ভার। বভ টাকা হবে ব্যয়, আরু মভ সমুদয়,

সাধু আনি দিলা হাতে ভার । শরতের বিবাহ ব্যাপার, নগরেতে হইলে প্রচার। যে ভাহারে ভাল বাদে, দেই আনন্দেভে ভাদে,

শরভের আমোদ অপার । প্রথম বিবাহ স্থচনায়, কড ভাব মনে আসে যায়। শরৎ সেভাবে ভোর, স্থানয় বাঁধিল যোর, আমোদে রোমাঞ্চ সদা গায়। আহা মরি, ভালবাসী-গুণের কি গুণ!' আরো কত গুণ আছে, সবাই ভাহার পাছে,

দে যেথা তথার সবে স্থান। ভেবে দেখ, ভালবাসা থাকে বার প্রতি।

ভারে অনাদর করি, কোন্তণে পায়ে ধরি.

ফিরাইডে অনা-প্রতি মতি ? জালবাসা কেমন, উপায়া নাহি ভার। নয়া, ভক্তি, জানি যত, নহে কেহ ভার মত,

ভবে কি পাইৰ উপমারন

মনের সৃষ্ঠিত, ভালবাদে, হে কাই[†]ের।

मिडे तुर्ब मि कि क्रेश. किंचु ग्रंथाल एकी

(में अंदिक त्याहे कार्या

ভালবাসা যারপ্রতি, সেও ভা নাজানে ৷ ভার মধ্য সে কি পায়, পাঁড়ে পাঁওয়া ভাল খায়.

মনের মন কি জানে প্রাণে।? ভালবান্য চাহেনা, কাহারো বিনিময়। ভাহার স্বভাব হেন, যে হোক সে হোক কেন,

ভায় চায় মন বারে লয়।
ভালবাদা এমন, না হ'লে একি হয়।
শরতের বিভা এলো, নিদাব চলিয়া গোল,

বরষার হইল উদয়া। বুঝিলাম শরুডের, দে বিপদ কালে ৷ বিধি ডালবেদেছিল, ভাই সাধু মিলাইল,

নতুবা ছাড়িত নাকি কালে ?

বিধাতার ভালবানা, তাই এত ঘটে।

'সেই শিশু যুবা হয়, বিদ্যা-ধন-মান্যালয়,

পরিণয় এসেছে নিকটে।
বিবাহের আমোদেতে, লাগে ছলুছুল।
জীখেতে হবেনা হুধ, বিভি ভাবি সেই মুধ,

করিলা বর্ধার অনুক্ল ॥
ধন্য ভালবাসা, কিবা প্রভাব ডোমার ।
পিতা মাতা নতে তুল, বিধি কেন অনুকূল !
কার গুণে হয় এপ্রকার ?

বিধির অভিনয় বর্গা, ভুবনে আদিয়া। লাগাইল ধূম ধাম, নিনাম কেবল নাম.

রাখিয়া, লুকায় পল্টিয়া। এল বর্ষার সেনা জলদের জাল। প্রথমে ধেরিল ধরা, ভালু, ভেজ ঢাকি ছ্রা

গুপু হয় দেখি গোলমাল।
গভীর গরজে মেঘ, চমকে চপলা।
বেৰ মেদ দিতে দও, গ্রীম্মে করি খণ্ড খণ্ড।

কাটি পাড়ে তারি এ উজনা। বর্ষা যেন চক্ষে দেখি, তপ্ত দিগ-দশ। ডক্ষ রক্ষ, গুলাু, লভা, মৃত্ত তৃণ বথাতথা। कक्षांत्र इहेल नत्म।

বারি বর্ষে, হর্ষে পূর্ব, সজীব-মণ্ডল। খাল ডোবা ভরে এল, উদ্ভিদ বাঁচিয়া গোল,

ज्थ-ध्रा इक्त भोजन।।

কিছু পূর্বে আই ঢাই, ক'রেছিল প্রাণ।

এরি মধ্যে বদলিল, তপ্ত অক শিছরিল,

চমৎকার বিধির বিধান।।

জ্বলে পূর্ণ মাঠ, ঘাট, তক্ তক্ করে ?

श्वानि जिटक जन यात्र, त्यर्का शथ हिना मात्र,

যাভায়াভ ৰুদ্ধ পথ ধ'রে।।

কত স্থান জলে ডুবে. হ'লো একাকার।

এবাড়ী ওবাড়ী যেন, ভিন্ন ভিন্ন দ্বীপ হেন,

ভরি বিনা গতি নাছি কার।।

পूर्व-नम-नमी-जल, चित्राम शांत्र।

বিলম্ব সহেনা ভায়, পাছে দেশ ডুবে যায়-

ব্যস্ত সদা প্রকৃতি-সাজ্ঞায়।।

জন-বেগে কত রঙ্গ, তরঙ্গ সহিত।

খুরিছে নাচিছে যেন, প্রমে উগারিছে ফেন,

ভারুকে ভা দেখে বিমোহিত।।

ক্ষকেরা বড় ব্যস্ত, নাহি অবসর।

(कह हक मः दार्थाः।, (कह हालि मक्षालान,

(कर चानि वाँशिष्ठ मध्द ।

আরানে প্রস্কৃতি-শোডা, দেখে ভাগ্যবান। কেহ আরামের ধরে, গোঁজা দিয়া রক্ষা করে,

খর বার কার্ছারো সমান ॥

খর বার কার্ছারো সমান ॥

আড়া পাতি কেহবা, উজানে মাছ গরে।

ছাড়ার বঁচােরে মাধা, গাইয়া ছুঃখের গ'থা.

কেহবা চলেছে স্থানান্তরে॥

কাদা পেচ পেচ করে, সব পথে প্রার। নিজ কিছা ভাড়াটিয়া, গাড়া পাল্কী আরোভিয়া,

ধনীগণ স্থেতে বেড়াএ ৷

अञ्चयक करके करत, निक्रम शिक्षम । गाड़ी श्रीत्की काथा शाह, इतन-वाकरन वाह.

কালাপায়, ভিজায়ে বসন।
লাস, দাসী, আর, নীচ কর্মচারী যভ !
ঘোড়া গোকে মেব প্রায়, বেটে মরে বরবায়

ৰন্পশু নকৈ এই মত।
. গুহা, গৰ্ভ, লভাকুঞ্জ, রক্ষের ংকটির।
. যেখা সুবিধা পায়, বন্যপশু বর্ষাল,

সুখে রয় নয়ত নফর ॥
নার নার বর্ষে বারি, রাজে নিরবধি।
পাকাবাড়ী নাহি ছংখ, দম্পতীর বড় সুখ,
"পাছু টান" নাহি থাকে যদি।।
কাঁচা ঘর ডাও ফুটা, বিছানা বগ্যে।

একোন ওকোন করে, খেরদীর হাতে ধ'রে, তরু স্থী মুবজানি হ'লে।। এক দিন শরৎ, ভাবিয়া উৎসব। মনে কড় সুধ পার, দিবা অবসান প্রায়,

চেয়ে দেখে বরষা-বিভব ॥ আকাশ ঘিরেছে, স্তরে স্তরে কাদদ্বিনী। নলাকা উড়িছে কাছে, সিলিশিরে শিখী নাচে,

র্থাসছে চঞ্চলা সোদামিনী।। প্রকৃতির সে শোভা, দেখিতে কে নাচার । স্থানিতে ধম্কাইল, তবু বায়ু পথ দিল,

গুপ্ত ভারু উকি মারে ভায়।
শরৎ বুবিল ভাহে, প্রকৃতি রাগিল।
বাড়িল রাগ সে রাগে, ধরণী ভার সোহাগে

ইনি শিরে পীডাম্বর দিল।।

এত শোভা আশা পুরি, দেখা না ছইল।
বাস্তভাবে কাদম্বিনী, সঙ্গে করি সোদামিনী,

দেখিতে দেখিতে লুকাইল ॥

সঙ্গে সঙ্গে ভামুও, হইল অশুর্হিত ।

সরোবরে অন্ধকার, বডেক নলিনী ভার,

সেই কণে হইল মুদ্রিত।।
ভাবে বুঝাগেল, প্রকৃতির পানে চেয়ে।
নোবী হ'লো বিবখান, নলিনা করিল মান,

পবিত্রপ্রথা

প্ৰকৃতি সুকাল লাজ পেয়ে।।
হাতে নোতে ধৰা পড়ি, লম্পট যেমন।
লাজে মুখ লুকাইয়া, দূরে যায় পলাইয়া।

ভারু আজি করিল ভেষন।। ক্রমেন্ডে উদিল শশী, কৌমুদী ছুটিল।। শাদাবাড়ী বরবার ধোয়া মাজা শাধ প্রায়

ভায় যেন স্পটিক ফটিল !। চক্চকে লভা, পাতা, ভাতিল জ্যোৎসায়। যেখানে দেখানে জল, চাঁদ করে ঝল মল,

বেন রড়ে খচিল ধরায় ।।

সানাইয়ের পুঁ, যেন, ঝিঁ ঝিঁ করে রব।

মঙ্কের বাজ খাই, মুশার ভন্তনাই,

শুনি মুমাইল লোক সব।।

भनी निला অবসর প্রকাশিলা দিবাকর,
সাধুর বাসার লোকে, ভাজিল প্রবায়।
সকলে দেখিল পরে, শরৎ বারুর ঘরে,
লুটেছে সর্বান্থ কে বা ভাজি মঞ্চু বার!।
"হেন কর্ম কে করিল, প্রভুরাম ঘরে ছিল,
কোথা গোল, সেই কি, করিল এই কার?
নতের বিষম কাপ, কপটে হইরা বাপ,
শেষে এই ক'রে গোল, না ভাবিল লাজ।।

माधिए जाशन हेके, मार्ठ कर कर विके. ভাষা না বুঝিয়া। ছুফে করিয়া বিশাস। मविर्मय পরিচর, ना জানি দিলে আতার, ভাষার যে পরিণাম, হটল প্রকাশ।। পরম-সোভাগা মানি, কাছারো প্রাণের হানি. হয় নাই অসম্ভব, কি ছিল ডাছার :" मत्य उश्च अञ्चाल, भराउद्र कान वाल. চোর জানি অম্বেহণ, করে অমিবার ॥ নহে সেত কাঁচা চোর, না হইতে নিশিভোর. পলায়েছে দে, বিনা, কে, জানে সে সন্ধানে। ना भारेल व्यवस्था. भारत करह व्यागमन. শরতের ভাবি-খঞা, আছে বেই স্থানে।! गां विष्ठादिल मान, " धरे आदि तमरे आति, পীড়াপীড়ী করিলে, কহিখে পরিচয়।।" যা ভাবিল ভাহা নয়, সে ভনে এ পরিচয়, আকাশ ২ইতে যেন, নিপতিত হয়।। कॅम्प्रिश करत श्रकाम, " आभारता (य मर्समान, যা কিছু আযার ছিল, সব তারি হাত। গহনা গড়াবে ব'লে, কালি ডুলাইরা ছলে, একরাল রূপা, সোনা, ইকল আত্মসাহ !!" দে নারীর সে কথায়, বিশ্বাস না করি ভায়, गर्ठत मिन्नो छादि, माबूत चल्राम ।

धमकि भामन करत, मांगी श्रकानित शरत, আপন নিগৃত কথা, বাছিল গোপনে।। "আমি নাহি চিনি ভারে: এই জানি সে আমারে. উপপড়ী ক'রেছিল, ভলাতে কেশিলে। বেডাইত দাঁও চেলে. নারুষ আমারি খেয়ে. আজি কাল শরতের, বাপ হয় ছলে।। মোর কন্যা ও যেমন, তার পত্ত সে তেমন, विवाह निर्दाह ह'ला लाख हाव (यम । এই লোভে আনি মোরে, আপন পটলি ভ'রে, चामारहरू काकि निशा शेलाईल (भेरा 11° একখা কহিয়া নারী, চরণে বরি সবারি, काँकिल अपनक छाहे श्रतिवांग शासा চোর কি চাতুরা জানে, যে শুনে আশ্রেষ্য মানে, বিবরণ হ'লো রাউ পাডায় পাডায়।। द्रः भ करत विज्ञानला नावा श्रांत्राम एला, व्यासीम करता नना. महत्त नहेशा। বেশ্যা দেখাইয়া কয়, " শরতের ফশ্রা হয়, " "শরতের পিতা" বলে. চোর দেখাইয়া ।। লোকে সংকতিকে কয়, শরতের লজ্জা হয়, ক্ৰে বড ছণা **জন্মে**, সচিত্তিত মনে ! इश र दा पूर्व शाल, बाना देवतामा अल. কটক ভাজিতে ইচ্ছা, হইল একণে ।।

"পরিচয় জানা নাই, চোরে পিতা হয় তাই, জামাতা করিতে চায়, কুলটা বে নারী। कारत निल अर्थ शंता. लाक डेलशाम करत्र लाटक दृः एवं यर्प्राथा, महिट्ड नाशाहि॥ সংসারে যে সুখ হয়, আমার হবার নয়, তবে কেন সহি এত, অসুখের ভার? প্রাণত্যজি যাক দায়, ত্যজিলে পাবনা তায়. এস্থান তাজিয়া বাই, উচিত আমার। এম্বান ভাজিয়া গিয়া, নানা স্থান অমেষিয়া, পেলেও পেতেও পারি, বাসের সন্ধান ! মাতা পিতা উভয়ের, যদি কভু পাই টের, এজমের সাধ পুরি, সুথী হবে প্রাণ॥" এই সব চিন্তা করি, সাধু-সন্ম পরিহরি, भार हिनना र'स्य. छेख्यालियुथ ! চলিলা छेशांना छत्त, यन किंखु छ्छ् करत, क्षियात्र कटलिक् ভाবि, डेबलिल इस ॥

বধার নিবাস যার, তথা হ'তে যেতে কার। হৃদর ভেদিয়া, নেত্র-পথ দিয়া, বহেনা ছ:খের ধার।?

শরৎ ব্যাকুল হ'রে, কটকেরে সবিনয়ে। ্র প্রণতি করিল, কভই কাঁছিল,

পবিত্রপ্রধার।

ু অঞ্চ ঝরে বুক ব'রে।।
নিবারিয়া নেতা নীর, মনে মনে কছে ধীর :
"কেমন করিয়া, ধৈরজ ধরিয়া,

দেশাস্থারে হব স্থির।?
নিভাস্ত শৈশবে আসি, হয়েছি কটক-বাসী।
তবেকি ছাডিভ, এযদি বুঝিভ,
আমি এরে ভালবাসি।?

নগর স্থাবর হয়, শরৎ স্থাবর নয়।
সে যে ভালবেসে, ভ্যাজি বায় শেবে,

এছ्थ नार्धिक मरा ।?

যাবং জীবিভ রবে, সদাই শারণ হবে। কটকের শোভা, অভি মনোলোভা,

जूनिय महित गरंत।। यात्रामनी या श्रांकात, किएकत हुई बात। अ शाबादाण याँथा, त्माथ लाग बाना,

কোখায় এমন আর।?

কিবা ছুর্গ পুরাতন, গভ রাজার লাঞ্চল। *
মহরমে মেলা, দ্বীপালীর খেলা, †
মনে রবে অনুক্রণ।।

कार्छ-यूड़ी नही-कूल, भाष्ड छेशवन-कृत्तः

এই ছুইটিই কটিকের মধ্যে উত্তম দ্রেফীব্য ।
 কটকের সকল উৎসবের মধ্যে এই ছুই ইইৎসব প্রাধান।

एका मर्ग ।

माधुद मनम, माधुद छ्दन, ७। कि कड़ त्रव ज़्रान ।? अमीतित कोट-माजा, याँदि कानि शिकामाजा ! ভার জীচরণ, পুজিবেক মন, গাব তাঁর গুণ-গাখা।। সাধু বিনা আপনার হ'তে পারে কে আমার। अगैरनानिभ, अम तिरि यमि, কিছু শোধ হয় ভার। কর্ত্তব্য স্থন্যথা করি, ক্লভজ্ঞতা পরিহরি। সাধুরে ছাড়িয়া, যাব পলাইয়া ?" আদে ফিরি ইহা শ্রি !! ই ভক্ত ভঃ বিচরণে, পুনঃমুক্তি মনে মনে। यदन बुबाइशा, नशन मुनिशा, "वरल याहे अहेकरन ॥" চরণ চলিরা যার, পাছু পানে মন ধার। नाड़ी यूँडिडिशा, याशाश्च याहिशा, পথ আগলিল প্রায় ॥ "এ মারা কিসে বা কাটে, এখনি মরম ফাটে। ना जिथि माधुरत, वौहियना जृत्त," ভাবিতে দে গতি ঘাটে।। इलिए यन क्लामात्र, नवीन महानि थात्र ! मंबर रूजन, छादि किहूकन,

*

প'ড়ে পায় সতুপায়।।

"পুৰুষে বিদেশে যেডে, গোহ পেলে অন্তরেডে
বলে কাপুৰুষ, সেই কাপুৰুষ,
হইব কি এ মোহেডে।?"

এতেক বিচার পরে, মন বাঁধে জ্যোর ক'রে।
দিতে নির্ফাসন, দোষীরে বেমন,

রাজ-দৃতে বাঁধে ধ'রে।। স্মেছ-পূর্ণ দয়াবান, সাধু দেব-মৃর্ভিমান। পুনঃ মনে এল, গতি বেধে গেল, উদিল ভকতি জ্ঞান।।

" ভক্তি ক্রিয়া তাঁয়, মাগিয়া লব বিদায়। চরণে বন্দিয়া, সুবাত্রা করিয়া, না গেলে হবে অন্যায়।।"

এই স্থির করি মনে, চলে সাধুসন্তাষণে।

পদ না চলিল, হৃদয় বৃলিল,

"যেওনা তাঁর সদনে।।"

"সাধু কি ছাড়িয়া দিবে? স্বেছ বাক্যে ভুলাইবে। বাবনা নিকটে. বদি বাধা ষটে,

আজ গতি না ফিরিবে।।"
বাধা ভেদি এইবার, মহানদী হ'য়ে পার।
ধীরি ধীরিন্যায়, ফিরি ফিরি চায়,
ভবু ফিরিল না আ'র।।

শারং আসিয়া ক্রেমে উভরিলা, দর্পণ রাজ্যেতে। भ मगरश पिरांकड डेठिएइन, डेम्डाइटनएड ॥ किकार एक थिला एक, यन कति, यन चितिशास्त्र । কিন্তু সেই ঘনঘটা, অভি অপ্প, স্থানে স্থিত আছে ৷৷ क्षेंजूक राजिल यान, अकि काछ, मिथिनात आमा। বাড়িলে ভাবুর ছটা, অল ভেদি, গিরীশ প্রকাশে।। मत्माक इहेल "यम, मित्मामत तथ कि कांत्रा । ঠারে ল'য়ে যাবে কোথা, ভাই বুঝি, উচিছে গগণে॥ এ রখে উচিয়া দেখি, নির্মাণ-কৌশল কি প্রকার। পেয়েছি সম্থে, ভাল, দেখে লই, কেম্ন আকার।। এইড নিকটে, স্পাউ দেখা যায়, পথেরিভ ধারে।" এত ভাবি মনের উল্লাসে চলি, যান দেখিবারে ।। যভ যান ফুরায়না পথ, ডবু. যেন সেই ভাব! ভাবিলা " दुविया मछा, अञ्चर्याम, छात्र रेमय-छात ॥" এই যে এই য়ে করি, যোজনেক, পথ হ'য়ে পার 🞼 উপত্যকা দেখি তবু, বুৰিতে নারিলা, কি আকার 🎄 अहमा बुबारे खांत्र, छाट्य र'ल खाद्राशे नदीन ! क्यान वृक्तित व या, क्राम छेक, आकृष्ठ विशिन ।। অধিত্যকা হ'তে দেখে উপত্যকা-বাসীর ভবন। তালের নির্মিত-বর বেন, হেন কুজ আরতন !৷ ত্ৰন উঠিতে বাকি, শিশবির, উর্ব্ অর্কভাগ । विना कृत्वे अञ्चल केठि जात्ता, बाटफ अञ्चलांग ।।

এভাগ বিজন নয়, মাঝে মাঝে, লোকের আবাস। **म्हिलाक अम**ला, किन्तु नरह कारता, अक्षीन वा नाम । বিচিত্র-গঠিত ধর, ভৰু, গুল্মু, লভার, মিলিয়া. সেই ঘরে স্থাং থাকে, অসুখ না বায়, কাছ দিয়া।। অযত্নসম্ভূত ফলমুল, আর মৃগ মৃগয়ার। অতি উপাদেয় ভাবি, ভারা করে, ভাষাই আহার 11? वनन, नर्ग, रेजन, (मथा नाहें; ना हें लिंछ नग्न। वानीयिक, ७क कार्क, मह, जारे कात्र विनिमन्न ।। खी शूक्रव मृष्कांत्र, श्रुकेशूके, निर्श्वत-मानम । नरहरू द्वराथ जाहे, वाक्ष्ठात, त्रभाग्न कर्तम ।। মহিষ, গোধন, শিবা, ছাগ, মেষ্, ভরকু, শৃকর। ভল্পুক, উরগ, আদি, বাদকরে, ভাহার উপর।। বিবিধ বিহঙ্গ যত দেখা, ডভ লোকায়য়ে নাই। ভাদের ধ্বনিভে, প্রতিধ্বনিময়, পর্বত সদাই।। কুরক কতই রক্ষ করে, ছেরে, যুড়ায় নৱন। ময়ুর পেকম ধরি, নৃত্যকরে, প্রিয়-দরশন !। थ नकल र'ऊ, यित, हक्तरीन रेगल कि, कांद्वारत । শোভিডনা শোভে কোথা,কেশহান শির:জলফারে। একে বভ ছায়াতক সখন, কে যেন সাজায়েছে, ৰাৰে মাৰে কভ গুলু, লভা,কলে ফুলে শোভিভেছে। ুড়াহে নানা জাডি পাধী, ডালে বনি, ক্রে কলরব। গ্রাহ্মবহ ফেরে লয়ে, নানা কলফুলের সেরিছ ।

হেথা যভজাতি **হক্ষ, গুলা, লভা, ফুলের ফলে**র। লাকালয়ে ভত নাই, চেনা দায়, কোন্টা কিসের। শপর আশ্র্য্য দৃশ্য, इক্ষাদির প্রত্যেকেরি বন। प्राथ यान लग्न कारता, अनिर्स्व हशोश छेशवन ॥ ন'লেও হইতে পারে, স্বভাবের সাধের আরাম্। ভাই শান্ত, হিংত্রজীব, দবে সম করিছে আরাম। এদব দেখিয়া হর্ষে চুড়াদেশে, উঠিয়া শরৎ। (नविला (मा**ভिছে (मथा, (नवालग्न, सम्मा इर्**र ॥ দেব-মৃত্তি স্থাপিত তথায়, তায় পরম কৌশল। বিএহের পদ হ'তে, অবিরত, ঝরিতেছে জল। এব্যাপার গুপ্তস্থানে, অনেকেই, বিশেষ জানেনা। প্রবাদ হ'য়েছে ভাই, বিষ্ণুপদোস্তবা ভবায়না॥ এত ভাবি প্রণমি দেবেরে, নিমে নামিতে লাগিলা। অপর দিগের, উপত্যকা ভাগে, আসি উত্তরিলা ॥ দেখিলা তথায় কৃত, বড় বড় শৃপের মতন। জিজাসি জানিলা ভাগা, পর্বতের প্রথম পওন॥ पिथिया अनिया आर्त, उथाकांत्र लारक धरेमछ। বল্মীকের প্রায় ধাকি, বাড়িভেছে **ও সব পর্মাত**।। हुजन क्रकेवा सिथि, कात वा नाहत द्वरशास्त्र ? বিশেষতঃ যেই জন, প্রকৃতির ভাবে ভাবী হয়।। क्ति छत्न स्थी हेरत, ख्या हेर्ड क्तिना शंगन । শরতের বাহুগ শীত্র, বঙ্গ দেশে করি দর্গন ৷৷

धमन मानूष (नहे, जना-जृपि यांत्र (यहे, ভাহার মায়ায় মুগ্ধ, হয় না হবেনা। এরপ ক্ষেহের স্থান, দ্বিতীয় পাবেন। ॥ অমুপ কি উপভ্যকা, মৰু কিম্বা অধিভ্যকা. বন বা উর্বরা ভূমি, যেথা জন্ম যার। ভাৰার নিকটে স্বর্গ, হ'তে, স্বর্থাগার !! विम्हिंभ विष्यं द्वार्थ, शाकित्व जात्र गूर्थ. লেগেথাকে সেই পূর্ব্ব,কুঁড়ের আখ্যান। তার লাগি থাকি থাকি, কাঁদে তার প্রাণ !৷ কেন হয় এপ্রকার. হইবে কারণ ভার, জন্মাব্ধি পরিচিত,তাই সে এমন। किस यह प्राप्त नाहे, जाता य जिमन 19 भंतर्छ (मृद्ध नाइ. छत् (कन नर्समाई. জন্ম-ভূমি দেখিতে, হ'য়েছে ব্যস্ত অতি ৷ क थन होनिहा, हम डाद्द करत शिक ॥ ভূত-গত অনুবন্ধ, শরীরির সহ বন্ধ, তাই তারা এই ধারা, টানেপ্রাণ মন। विम्लिक कि जिन्न कुछ, नरहक (छमन ?। ध यनि ना रह छत्त, धरे शृंह (रख रूत, व्योगात विलिश योत्र, ভोवस्त्र श्रुवत्र। व र्हाक रेंग रहाक हत्र, ब्लियंत्र निमत्र।। लिहेरन ब्यापन कान, पिषिन्ना बुद्धाव श्राप,

करवरा इटेर्टर (महे, सूर्थद्र वर्षेन ! সর্হ স্বাই এই, চিস্তায় ম্থান।। কিন্তু সেই কোন্ দেশ, নাজানে ভার বিশেষ, কেবল লোকের মুখে, প্রাবণ ক'রেছে। বঙ্গাদী কেছ ভায়, ভ্যাজয়া গিয়েছে।। (क्: रन अर्ड निमर्भारन, वक्राप्तरभ गरन गरन, স্থাপিয়াছে (য সকল, সাজে সাজাইয়া। ইভিহাসে লোক-মুখে, আদর্শ পাইয়া।। উভরিয়া বাঙ্গালায়, সে ছবি মিলাতে যায়. किइहे (मलना अर्य, नकलि नू उन। गत्नद्र अशुक्त ভाব, व्हेल उथन।। ए कि छ। व माद कारन, ना प्रशिष्ट भाग कारन, লেগে যার মনগড়া, ছারা যার ভার। সে কি কোথা মিশে ? সে যে ছায়া কম্পনার! याका (विश्वांत आभि, क्रम्य उल्लाम आमि, मिथित जोशात, यहे जातीमहा रहा। সেই জানে যার হয়, বুঝাবার নয় ।। সে ভাবে করিল ভোর, মুখের নাছিক ওর, শরতের হাতে যেন, এসে বসে চাঁদ। मिथि जनन राज, राष्ट्रिम वास्ताम ।। पिना काञ्चात कछ, धुधु करत खरित्रङ, বছদুর-ব্যাপী ভাষা, পার ৰওয়া দায়।

विन, बिन, किन, भगारक्य, भार जार ।। হৃদয় ভেদিয়া কার, বিভাগিয়া তুই ধার, চলিয়াছে ভোতৰতী, মূহ মূহ গতি। কাছারো অন্তরে বন, ভরানক অভি।। যে কাস্তারে যারে ভারে, দহুতে ধরিয়া মারে, জামাই ভনয়ে মারে, শুনাছিল কাণে। শর্ব দেখিলা ভাগা, আছিল যেখানে !! कान मत्नाइत मार्छ. পরিপাটী বাঁধা-ছাটে. निश्वाशी ननी थाइ, मोधी मोधाकात ! वरक वह कान प्राम, नाहि वं श्रकात ॥ वाधा-घाटि भिवालत, शुक्रा-त्रक शाउमत. किया महावद वाहा, (मध्य (ভाल मन। खना (मर्भ खाइक् किखु नाहिक धमन ।। একে ভার কাল জল, ভার কটে শতনল. গস্ত্রবন্ধ কিরিছে, ছডায়ে পরিমল। हेनहे'त्न कत्न (थ्रान, जनहत्र पन ॥ মরাল সাঁতার থেলে। हिল্লোলে কমল হেলে, क कमल खाम कालि शुक्तिश (वजाश) শরৎ সে রস দেখি, কত হুখ পায়।। चाबारमञ्ज वञ्चरमम, এতে এত বেস বেস, मुना बल्ल जाहि, ति एथ जूल मात्र मन । न्ध्रभु क्षत्राज्यि नम्न, शिव्तनव्रमम् ।।

দেখে কভ পাড়াগাঁয় নগর হারিয়া যায়. माति माति काँठा, शांका, विभाविभि चरत । বিবিধ জাতীয় লোক, নিবসতি করে 11 ান সংগ একখন, প্রতিবাসী প্রস্পর, মিলেযুলে কেমন, ব্ল'ছেছে নিরাপদ। व्यवह मयाम नश्. कोहाद्वा मण्यम ।: চাকুরে আর চাষাতে, প্রমজাবী, ভিকারীতে, খেরা বেডা প্রামে, হুই এক জমিদার। বিশেষ করেছে শোভা ভারা পাডা গাঁর।। नगांद्राक (४म: जांद्र. धनवान अधिगतात. প্রস্পর ধুমধামে, বড় নাজানায়। পাড়াগাঁয় একেতেই. পাহাডের প্রায় ॥ কোন গাঁয় সরোবর, স্থানে স্থানে মনোহর, कान गाँत काट्य नहीं, हत्त छिष् छि । বাগান শদোর ক্ষেত্ত, আস পাল যুড়ি॥ विख्यास नैसमारे, याहा हाई खाहा भारे, ছোটপ্রামে ভাল ঐব্য, নামিলে সদত। বড়হ'তে ছোট কিছু, ভিন্ন এই মত 11 क्रांतरण नगर वड, जना (मर्स नाहि छड; গৌরবের হেতু এত, উছভির দার। अञ्चलक मर्था तथा, अकिक्लाकात ॥ मंत्र (स्वित्रा क्ष्मं अर्थ शान गरिएम्य,

কিন্তু কোথা পিতা, মাতা, নাহণলো সন্ধান।
আমে গাঁই জানা নাই, প্রভুরাম পিতা ভাই,
স্থান সবারে কহি, নিজ পরিচয়।
কেহই কহিতে নারে, কে, সে, কোথা রয়।।
বহুদিন হ'লো গত, শরং ঝড়ু আগত,
দেশান্তরে যাতারাত, চলেনাত আর।
শরতের গতি রোধে, শরতের ধার।।

শরতের প্রথমেতে, ঘনরপে ধন।
গগণ বিরিয়া রাখি, বারি বর্ষে থাকি থাকি,
জল-আেতে স্থল ভাগা, করে আপ্লাবন।।
হেন বুঝি ডুবাইল, পৃথিবীরে ভাসাইল,
সাগর উচিল যেন, করি আক্ষালন।
নিমু স্থলে হ'লোদায়, স্বরক্ষা ভেসে যার,
হার হার করি কেহ, করিল ক্লেন।।

রক্ষা থেই বহু দিন, নাহিরহে বান ।
নতুবা ঘীপের মত, জাগে উচ্চ ভাগ যত,
ডুবে হয় নিমু ভাগ, সাগর সমান ।।
নিমুবাসী যত,নর, হারে পড়ে উভচর,
কট পেল্লে মারেযায়, এতে বাঁচে প্রাণ?

্ৰ প্ৰাণ বাঁচে ভায়, নৃশংস যাদসে কায়, দেশ পেলে ছেড়ে দেয় না বধি পরাণ গ

নাণ ষেথা পশিছিল, পলি প'ড়ে ভার।
নাড়িল শস্যের ডেজ, সাজারু ফুলারে লেজ,
উচিল গা রেড়ে যেন, হেন শোভা পায়।
সুম্দ, কহলার, পায়,
পূর্ব সরোবরে নাচে, হেলি ছালি বায়।
মধ্য অংশ শরতের, প্রভাব বাড়ার চেরছদ্শ্য সকল নিগে, আমোদ ছড়ায়।

ক্রমেতে আকাশে, মেঘ হইল বিরুল।

কাপ ছাড়ি প্রভাকর, প্রকাশিয়া খরকর,

পথ ঘাট শুক্ষ করি, কেলিল চঞ্চল।

ব্যরিদের ঘরষণে, যেন বিগু এইক্ষণে,
পূর্বি হ'লে অধিক, হইয়া সমুজ্জ্লন।

নিশির বাঙান মান, নিশি হাসি গ'লে যান,
ভাই সে কোমুদী, শরডের নিরম্ল।

এ সময়ে সিভ-পক্ষে, নিশি কি স্ক্রের !

গগণ-বরণ-শ্যাম, শৃদ্য-পূর্ণ ধরা-ধাম,

জলে চাঁদ-প্রভিবিষ, তুল্য-মনোহর।

[^] পবিক্রমণীর।

হঠাৎ খূন্যেতে থেকে, উচ্চ নীচ ছই দেখে। জান্তি হয়, উৰ্দ্ধৃ অধঃ, চেনাই ছুক্র। ঘন ঘন জলাশয়, প্রতিবিধে মনে হয়. কন্ত চাঁদ হেখা. শূন্যে এক নিশাকর।

যখন মুমার লোক, জাগিরা তথন !

দূরহ'ডে শুনা যায়, কতশদ্ধে জল ধার,

বর্ণন না হয়, সেই শব্দ যে কেমন ॥
পটিং, মুরজ, বীগা, পারেনা সে ধ্বনি বিনা,

সে ধ্বনির মধুরতা, করিতে ঘোষণ ।

মন্তর মেঘের জল, বে শব্দ চুম্বয় স্থল,

সেই সাধার্ক কিনা, ভাহারি মতন ।?

ও সময়ে প্রতিধ্বনি, মনের মোহন।
কাছে কাছে জলাশয়, পরস্পর লুফে লয়,
কোথাকার ধ্বনি করে, কোথায় গমন।
নানা বস্থু নানা ধ্বনি, মিলি তার প্রতিধ্বনি,
প্রতিধ্বনি-প্রতিধ্বনি, করিলে প্রবণ।
স্থাবে কি বাকি থাকে, সে সুখ কে কবে কাকে ।
স্থানির্কচনীয় সে, যে, না হয় বর্ণন।

ध नगरत किया त्रगा, धक्रण निलत्र।

ারে শোভে বরণায়, পাশে ভরা-নদী ধায়,
ভাভাবিক ধানি করে, প্রতিধানি ময়।

ত লভা, পস্যরাজি, জ্যোৎস্বায় জ্যোভিক সাজি,
বড় শোভে দেখি বেন, ঘনহুংখী হয়।

ভাই চক্র সে দোঁহারে, পর্যায়েডে তুষিবারে,
কেশল দেখায় দেখি, অসুধ কি রয়।?

শরতে শারদানক, নহে অসম্ভব।

গণ ইচ্ছা তথা থেকে, যালা ইচ্ছা শুনে দেখে,

যত কিছু আনক্ষা লভিতে পারে সব।
কিন্তু যে অস্থ তাঁর, তাঁর স্থ ঘটা ভার,

ছঃখির কি ভাললাগে, প্রাকৃতি-উৎসব?
কোথা মাভা পিতা বাস, না জানি সদা হতাল,
তাঁর পক্ষে ছড়ান, আনক্ষ স্মুদ্ধ ভ।

যাবৎ শরৎ, থাকা চাই, এক স্থানে ।
গকাতীরে পণ্ডপ্রাম, গোঘাট ভাহার নাম,
ভদ্রপলী ভদ্র সঙ্গে, থাকিলেন মানে ॥

হর এক অবীরার, বিরজা আখ্যান ভার,
সেই দিল বাসা, দয়া হলো ভার প্রাণে ।
বড়ই সরলা সেহ,

যত্ন করে হেন, যেন, আপন সন্তানে ॥

পবিত্র প্রণয়।

দ্বিতীয় সর্গ।

গোঘাট-নিবাসী রম্পতি ! ধনে কুলে গুণে মানী অভি। সে বিরজা ভাষারি সেবিকা। তারি দত্ত-বেভনে জীবিকা॥ ভাহারি আশ্রেম করে বাস। বাড়ী ভারি বাড়ীর সকাস । ভালবেদে বিরজার বাসে। त्रमार्था जन्म कार्य ॥ (म नाजीज नवीन वयम। পরিপূর্ণ লাবগ্য-কল্স।। পাঞ্চলা বর্ষ বয়স ৷ কথা কয় সকলি সংস। শরতের উপস্থিতি কালে ৷ **এक फिन व्यामिल विकाल ।।** দেখিল শরৎ সুকুমার ৷ বোধ হলো গঠিত কুমার। * বিরজা কি পুজে বড়ানন ?" জিজাসিতে করিল মনন ॥ रठां ९ (मधिया स्वमाय । সে কুমার সরিয়া দাঁড়ায় 👢

বিতীয় সৰ্গ i

ভাহা দেখি বুঝিল সুষ্মা। "এ কুমার কুমার-উপমা।" লক্ষা পেয়ে পনাইতে চায়। এস ব'লে বিরজা ফিরায় । "অজ্ঞাত-পুৰুষ ভৌর ঘরে । না জেনে এসেছি যাই ग'রে॥ এ কথা জানাতে হয় আগে ৷ না যেতাম ওর আগেতাগে॥ ভোর বাড়ী আসিব না আর ।" এত বলি যার পুনর্কার ।। বিরজা কছিল " ও স্থমে ! ওরে ভোর কায কি সম্ভ্রমে ॥ ভালবাসি ভাই তুই মেয়ে। एमनि ७ (इरल (इरल (इरहा"।। हेड्। कहि खरनट्ड यमन। পরিচর কহিল ভেমন ॥ পরিচয়ে আশ্চর্য মানিল। क्रशामाध्य अनुभे जाविन । হোক না যুবতী, অনুঢ়ার। ডভ লজ্জা জন্মে দাই ভার ॥ সেই হেতু না ভাবি দূষণ। **ट्या-च्या करत्रह्य स्थान**ा

পৰিজ্ঞাণয় ৷

অম্নি আঁখিতে এলো লাজ : ভাবিল "করিনু একি কায । ভাতৃ ভাব হয়না এজনে। अना छाद छेशिलिल मान ॥ ভাগ্যি হিন্তুন জার মন। জানিনা যে নহেত আপন। আমার অজাতে এই জনে: वनारेल इत्र.कांग्रम । ভোল নয় এমন ঘটনা। ফিরে আরু এ চোখে চাব্না এ মনে আর এখানে লননা ১ কি জানি কি করে কেপাণেনা ১ এত ভাবি ফিরায়ে নয়ন। ক্ষমা চলিল নিকেতন 🖟

সময় বখন যার হয় । সেকি কারো বাধা মানে, সভাব ভাষারে টানে, স্থভাবের অবাধ্য সে নয়। স্থভাবের কায় ক'রে, পরি ভৃপ্ত রয়, সে ভৃপ্তি অন্যথা হওয়া, তার নাকি সয়

ৰোবন-স্থলভ স্থ লাগি।

না বস্তু দেখাইল, তার কাষ সে করিল, মন ভোলে, আঁখি দোষ-ভাগী ? । নানেরি বা দোষ কিসে, কে হেন বিরাগী। অভিযন্ত বস্তু প্রতি নহে অনুরাগী॥

সার সেকি ভুলিবার ধন।

তি ভূলি চেন্টাকরে, মন ফিরি ফিরি ধরে,
থাকি খাকি পালটে নয়ন।।

নয়ন দেখাবে পথা, চলিবে চরণ।
কাবেই গতির, প্রতি রোধা, ঘন সুন।

এগোন পেছোন হলো দায়।
"ত্র'ত যৌবনা ছিল, জীখি আজ বুঝাইল.
যৌবনের কাষ সে বালায়।
সরম করমে লাগে, এহেন বেলায়।
সেই ছিল ভাই বালা, গৃহে যেতে পায়।

গৃহে আসা না আসা সমান ।
নয়ন লেগেছে তায়, মন কি আর দাঁড়ায়,
থাকে থাকে যায় সেই স্থান ।।
বিরজা-ভবন আর, সেই রূপবান ।
ভূলে আনি বসাইল, হাদে, যেন প্রাণ ।।

পৰিত্ৰপ্ৰয়।

জুধে জলে হইলে ফিলন ।

আরকি পৃথক হয় ?

স্থমার ঘটিল তেমন ।

জাগিয়া বা অপনেতে বধন ভখন ।

দেখে শরতের রূপে হন্ত রঞ্জন ।।

ৰাল্যকালে এমন এমন ।
 বেংগছি কত যুবাই। কেহ্ইত মনে নাই,
 এযে স্বাজি মজাইল মন ?।
 ফোবন এখন, মন বহে তে তেমন।
 স্বমা ইনিল হ'লে, একথা লাবণ।;

বেদে'তে সাপের হাঁই চেনে।
চারি চকু দোহাঁকার, মিলেছিল বারবার,
হ্বমা ভাতিই নয় জে'নে।।
ভারো আঁথি মন কান্ত নহে লাজ মেনে।
আগতি জন্মায় মন এই ডক্ত এ'নে।।

সে ভত্তে সন্দেহ পুনঃ গণে।
"এমন ড হ'তে পারে, সে ভাবে দেখি আমারে।

মন্দ্রার লাগে ভার মনে।।
ভাই বনি হয় ভবে, পারনা সেজনে।

शास शास्त्र मा उटर, कि रेकल जीशि गरन" ?।

আবার ভাবিল সেই কাণে।

গ্রমন বে'দেই, নাই, নাচেনে সাপের ইাই,

গেকি বুঝে নাই মোর মনে?।

অয়স অবশে রবে, চুদ্কাকর্যা।

এহেন ঘটনা হবে, কেন কি কারণে?।

যাবং না হ'য়ে হুমিলন।
-াহি মিলে একাসনে, শক্কা বাড়ে ক্ষণে ক্ষণে,
প্রণয়ের প্রথম-লক্ষণ।।
মনে হ'লো "যদি মোরে, না চাহে সেজন।
ভাহে না মরিভ মন, থাকিল এমন।।

শাদায় বিচিত্র চিত্র করি।
মূছে অন্যে চিত্রিভিলে, যদিও উত্তম মিলে,
দাগরবে যাবৎ না মরি।।
দাগা দিভে মনে, এই ধনে পরিহরি।
পারিবনা আমি, ছি ছি হরি হরি হরি।

এবিচার হ'তে সমাধানু ৷ ইচ্ছা হ'লো একবার, তার মন কি প্রকার, পরীক্ষিলে পাইব প্রমাণ !! বিলম্ব সহেনা বলি, করিতে পরান ! বাধা দিল বিরজা, আসিয়া সেই স্থান !!

বিধাতার নিপি সমৎকার।
শ্রহ কোথার ছিল, সুস্মায় দেখা দিল
বটেগেল বিষম ব্যাপার।।
এই ভ প্রথম-স্থার এই ঘটনার.।
সামান্যে মেটেনা, মাঝে মদন ইহার।।

ত্ররি মধ্যে সুষ্মার, আখি মন এপ্রকার।
পরতের প্রতিমার, পাক্ষপাতা ইইল।
পরং-সঙ্গিনী ব'লে, বিরজায় দৃষ্ট হ'লে,
কতই আনন্দে গ'লে, চলে যেন পাড়ল।।
যেকুলে যে ভালবাদে, মাথি সে কুলের বাদে
দূর হ'তে বায়ু আদে, সেবায়ুরে সেবিয়া।
সেকি তত্ত সুখ পায়, দেখিমাত্র বিরজায়,
যতসুখ সুষ্মায়, স্প্রশিল আসিয়া?
হরের মানুষ প্রায়, এবিরজা আসেষায়,
আজি আদিরিয়া তায়, কাছে ডেকে বসায়ে
একথা সেক্থা ক'য়ে, পুলকে পুর্নিত হ'য়ে,
শরুতের কথা ল'য়ে, কোতুহল জানায়ে॥

্ৰাল্লাসেতে জিজ্ঞাসিল ''গুনে দুঃখ' উপজিল, শরতে যা ঘটেছিল, পুনঃ বল বিরজে : , ্রগুজন-পরিচয়, শুনে বড় সুখ হয়, গুলুক সেই ভাবোদয়, হ'লো হাদি সরোজে।। अप्रसुद नट्ट नट्ट, घंठेटक स्थान करहे. शिलका विकास तरह, यह-वार्डा खनिएछ। :र्ग ती दा कुशाती नव, ऋत्यात (य समय, তাতে নব-রাগোগয়, এত যোগা বুঝিতে ॥ ः इक्षा (मक्था वल, खुन खार्म नक् क्ल িপ্রয়জন-ঘুংখ ব'লে, শিহরিল ভিডারে। িংজা জানেন। তাহা, বাহিরে বুঝিল যাহা, এহিল ''রুষ্মে ! আহা, ভোর মায়া এড'রে ॥ " निक-वादि मध्रिया, रेश्या लाज भागविया, বিরজায় সমৌধিয়া, কহিলেক সুষ্মা। याश किছू धक्रनात, ऋल नाई উপमात, স'য়েছে যে হুংখ-ভার, ভারো নাই উপমা ? दूबि विधि धरे झात, गार्टिह विन विजान, কিংসায় হিংজকগণে, বিপদেতে ফেলিল। যেই প্রিয় বিধাতার, বিপদ কি থাকে ভার, সে কর্মের অবভার, হয়ে বেঁচে উঠিল ॥ চিত্রিত-মদন, পটে, গঠিত-কুমার, মঠে, शहर क्षमह बढ़ि, .. सामूद्वह हिष्ड-।

এত ভেদ তাতে এতে, অক্রিমে ক্রিমেতে, তায় এযে বিরলেতে, বিধাতার স্তিভি আছা, কি লাবন্য-কুপ, গলিত দোনার ত্রণ, मिलाहेल अनुक्रभ, आनिकल इहेरत। অন্তি দীঘল কায়, পরিপাটী ভাব তায়, এমন আর কোথায়, দেখিবারে মিলিতে '! (म जिल्हि म नहन, भिनिका मिनन) সে কপোল স্থদর্শন, মনে ভেবে দেখনা। শ্বামি কেন অনুমানি, সে মুখে বিনা তেমনি, তত হঞ্জী মুখখানি, কিছুতেই হ'ভোনা !৷ कि (गाँभ माजह मूर्य, उर्थ नान ऐक्ट्रेक কেবল বিধির চুকে, মনোছঃখে ইাসেনা। वित्राष्ट्र ! (मर्थह चात्र, श्रेमक ननार्षे जात. সিঁতিকাটা কেশভার, বর্গনায় আসেনা। यथार्थ (ভाषाश विन, धमन दांगावनी, शुक्तित्व अनिशनि, (कांब जहन शादना। विभान दुरकद शांछा, माका यम कूँ एम कांछा, क्रिक हैं। शाकलि कहा, करत करत (माजना ।। व्याहीत्माही (प्रदर्शन, श्रायन) कि वलवान, প্রিয়-দর্শন আন, এমন কোথায় গো? कांन अन्यम नय, प्रारं ज्ञि नाहि इय. সাহাহা, অমৃত ময়, কি চাহনি চায় গো।।

वाह कर्ष कतिशाह, यांना निशा नांचिशाह. বিনা যত্ত্ব পাইয়াছ, প্রার্থনীয় রভনে। भारतः युवि हित्नाहै, यदि ए शिहरू छाहे. नजुरा कि प्रथा भारे, कि छाड़िज अजान !?

> " অনুরাগ যবে হৃদয়ে পালে, সদয় অর্থল আপনি খনে, কারো মন ভারে রতে স্ববলে. कारमा यन यात्र हुणिया। ভূটে বার মন সরল ভাবে, অস্তরের ভাব কেন লুকাবে ? প্রকাশি দে ভাব সম্ভোষ পারে, डोरं व'ला (काल क्षिशा **॥** সুত্ৰমা তেমনি দেখিয়া যারে. जुनियारण, जांत्र शकारण जांत्र. ज्ञथवा खात्नना धहे व्याणेश्व. লাজে কায করে পরেতে। अथवा रामन (निध পूजूरन, वालिकांत्र यन क्ठांर जुला, তেমনি শরং-রূপ অভুলে. पि कि कियार मरनरक अ বেভাব কিন্তু দেখি এখন,

'বালিক'র ভাব নতে এমন, নারী কি. না বুলে নারীর মন,

হয়নি কি মোর এমনি :
ভাস্তারের ভান প্রকাশ হ'লে,
ভারসিক জনে পাগল বলে,
কুজনে নিক্তর বিবিধ ছালে,

ভূগিয়াছি নৰ ভূগনি । ভাগা ভাল যেই মুকিনু আগে। অন্যেতে বুকিলে কিহ'তো ভাগে ভাগুন লাগাত এ অনুবাংগ,

এড়েশত এড জানেনা !
না জানুক আমি জানিত সব,
আমি ভুক্ত ভোগী, এ নহে নব,
সাবধান করি সহায় হব,

এতে বাধা, ঘটা সবেনা"। বিরজা এসব মনে বিচারে. জার স্বমার প্রতি নেহারে, মনে হ'লো, যেন নেহারে ভারে,

প্রেম-প্রতিমার উপমা। ভারুকের মনে লাগে সে রূপ. কবি কি, পাইবে, সে অনুরূপ । বুরাবার নয়, ভার স্বরূপ,

সে যে পূর্ব-রাগস্থবমা!।

মনোমত ধন পেয়েছে মন,

ভারে ছাড়ি দূরে নাযায় কণ,
নিয়োগী বিহনে নিয়োজ্যগণ,

কোন কাষে ভাল চলেন। । খেলেনা, নয়ন অমর প্রায়, হেলেনা, পুতুল সদৃশ কায়, কেবল ক্লুনা কহে কথায়,

ভাও যেন ভেবে যলেন! ৷৷
মন ক্ষণ কাল ছাড়েনা যায়,
কাঁথিও ভাষারি রূপ ধেয়ায়,
ধির-জনে চাঁদ ভাল দেখায়,

ভাই ভেবে কায় হেলেনা।
মন লেগে যায়, ভাবিলে ভায়,
কভ স্থোদয় কহা না যায়,
এতই, ফুর্লি হলো স্থমায়,

কুতৃহল যেন ধরেনা ।। একে ছাচে ঢালা ননীর মূর্ত্তি, ভাহে নব অনুরাগের ক্ষৃত্তি, ভাল ফুলে বেলি মধুর পূর্ত্তি,

र'दा यन পড়ে উগা'दा। পরম-কুন্দরী যে নারী হয়, বাহা কিছু তার অমৃত ময়, তারে ভালবাসা ঘাহার রয়.

আরে। ভাল লাগে ভাহারে।।
বিরজা রমণী, ভবু মোহিল,
রূপ দেখে মনে মনে ভাষিল,
" চেনা লোকে দেখে একি চইল,

দেখে দেখে আশা মেটেনা।
আহা মরি কিবা রূপের ঘটা
অভসী গোলাপ মিলিভ ছটা।
মানবীর রূপ এরপ ঘটা,

অতি অসম্ভব, ঘটেনা।।
কতই মাধুরী আছে ইহায়,
দেখি মন ভাল বাসিতে চায়,
এমন স্কুম্বরী মুরতি হায়,

কি দিয়া বিধাতা গভিল!
কর, পদ. কর-শাখা, সকলি,
কেমন সুঠাম কেমনে বলি,
ভাল বা সমান, পেলেড তুলি,

मय ना नज्ञत्म পড়িল।।
कृषिल कृष्णत्म महल-मिंडि,
दिशी निना (बाँशा कुडम होडि,
प्रध्रे प्रिंशि जन्दन औडि,

রজতের ফুল তাহাতে।

ছই আঁখি নীল-উৎপল-দল,
ভারা কারে তাতে অলি চঞ্চল,

টানা ভক মাথে ফোঁটা উজ্জ্বল,

ভাল ভাসে যার শোভাতে ।৷
বিধি কি কাও গালেতে করেছে,
ভিতরে লোভিত, আভা ফুটেছে,
ভিত ভাল গাল কেবা পেয়েছে,

আহা কি স্করী স্বমা!
নাক যেন কাঁচা সোণার বাঁসী,
অধ্যে সদাই মাথান হাঁসী,
দেখিলে মুনিও হয় বিলাসী,

নাকে মুখে এক স্বমা !।
মুকুতা পাঁতিতে ভাতি যেমন,
স্বমার দাঁতে ভাসে ভেমন,
যার আবরণে করে মোহন.

সেত সাধারণ হয় না ?
রপ যত গুণ তারি মতন,
পাছে দেখে ছটি হাদ্রতন,
যদি কারো হারা হয় চেতন.

ভাই এল খেল রর না॥ গুরু নিভম্ব, কটি স্ফীণভর,

পবিত্রপ্রণয় ।

কুচ, মুখ, আদি ভার উপর, বুখ্যগুদ্ধ, যেন মনোহর,

ক্ৰক-কলসে ভোগেছে!
ছুই উক ভাই শিহেভে গৱে,
ভাবিলেও চলে স্তপ্ত উপারে,
কুম্ম-কাৰন শরের ভরে.

বিধিগ'ড়ে শ্বারে ছ পেছে।
সময়ের ফ্ল দব কুটেছে,
গদনের অংসা যাওয়া ছটেছে,
মনোমত অলি এসে যুটেছে,

এতে স্থির থাকে নবীনা ? সেও যে শরৎ শরৎ-চাঁদ, রমণীর মন হরার ফাঁদ, দেখে ভেকে ফেলে সরম-বাঁধ,

ধৈরজ-শালিনী প্রবীণা ॥ পিনিত শোনিতে স্বারি অক.
আজো হলোনাক পুক্র-সক,
সুযোগ নাপেরে এরে অনক,

এত দিন ক্ষা করেছে। এতবড় মেয়ে বিয়ে দিলে না, পিড়া মাতা দোব বুৰো বোঝেনা, অনুকুল বিধি ক'রে বোটনা,

चिन्नीय मर्ग।

বর বর এনে দিয়েছে।
নদপৌ স্থমা এ বরে বরে,
রতি কামে মিলে কি শোভা করে,
গুনেছি দেখিব নয়ন ভ'রে,
এ বিবাহ দিতে হইল।
কিন্তু অবলার বালাই লাজ,
ভেকে দিতে পারে সে হেন কান,
কোশলে সে লাজ মুচাব আজ,"
বিরজা এ সব ভাবিল।

প্রকাশি কহিল হাসি-মুখে।
"আমি কি জানিনা গনি! রভনের মান।
"আমার বয়স গেছে, আরোভ মাতুৰ আছে,

পেলে রাখে বুকে।

পই ত দেখিয়া স্থী, হলো ভোর প্রাণ।

যারে রাখ কাবে লাগে, ছথে কিন্তা স্থাধ।

এ রতন অমূল্য রতন।
আন্য কেহ পাইলেও, ছিনায়ে নিভাম।
বড় ভাল বাসি ভোরে, পরে দোব দিতে মোরে,
না পেলে এ ধন।

আমিকি জানিনা হবে, তোর অভিরাম ?। বিশেষ এখন এতে, ভোর প্রয়োজন।। ভাল বল জিজাসি ভোমারে ৷

শরভের রপ কি, লেগেছে ভোর মনে ৷
ভোমার বেমন রপে, সেও ভোরি অনুরপ

অভিন্ন আকারে ৷৷
উত্তম মিলন ভোরা, মিলিলে ছ্জনে ৷৷
একধায় লুকাইওনা, বলহ আমারে ৷৷"

স্রুমে কুঠিত হলো মন :
কুষমা ভাবিল, " একি, কুকায করেছি !
বাহুজ্ঞান-শূন্য হ'য়ে, মনের কথায় ক'য়ে:

করি কি এখন :
 ভাঁড়াই কি ব'লে, সম্পটি ধরা দিয়েছি !!
 না খেয়ে না ছুঁয়ে, চোর হইল রটন !!"

প্রকাশে কহিল স্থলোচনা।

"ছি ছি ছি অমন কথা, ব'ল্যে নাক আর
রপ গুণ বাহা হোক, ভাল দেখে বর্ণে লোক
দোষ কি বলনা।?

আমার মন কি মন, বেমন ভোমার।।
ভাই ভেবে এই বুঝি, হলো বিবেচনা।?"

বিরজা ভাষিল পুনরায়।

শ্ব স্থামে! ভোর মত, আমিও ললনা।

শ্বান্মন নারী জানে, ভাব ভাক অসুমানে,

লুকান কি বার ?।

শ্বিতি নারীতে কভু, চলেনা ছলনা।।

শ্বে দিতে পারি ভোর, মনের কথায় !!

শুপ্রভিত্তে ক্রোধ না কি সাজে ?

ক্রোধ প্রকাশিতে চায়, মূখে হাসি আসে ।

ভাব প্রকারি চাফে পড়ে বিরজার
বেতে চায় ব্যাজে ॥

শতে ধরি বিরজা, বসায় আমি পাশে ।।
কালে শবুরেছি, পার কায় নাই লাজে ।।"

হেঁট-মাথা বসে ধনী কাছে।

থ্ঁদি গ'রে বলে "বাছা এবে হ'লো ক্লাজ।
ভবে ভঙ্গি কপ্পা পে'য়ে, বুনেছি যা ভার চেয়ে,
বুঝিতে কি আছে?।
এথন আমার কাছে, লাজেতে কি কায।?
বরণ্ণ ভ্যজিলে লাজ, কায পাবে পাছে॥

ভোমার বিবাহ হয়নাই। সেও আ'জো কারো পানি, করেনি এছণ। হবেমাত ব্যক্তিচার, তবে কিসে ভয় কার মিলেছে যা চাই।।

অন্যের মা বাপো করে, পারি অন্বেষণ ।। আন্যে হ'লে। হয়স্বরা, জুমি নহে ভাই ।।

কথাটি চইল মনোমন।
মুদি আঁথি ওবু ধনী, সুত্কি কাদিল।
কি সন্দর মেই আস্য, কি হান্তর মেই হায়,
ভাব ভাদে কত।
পারিজাত কুল যেন, মধু উনারিল।
সঙ্গিনী বন্দী নৈলে, আ্রো কিবা হ তো

জামে বন্ধ আপানার সাঁচে।
তাহে সে বিরজা নহে, আনাড়ী সঙ্গিনী
তথনি বলিল, "ভাল, আঁথি মুদি দেখ আদে
হাদে বাঁথি চাঁদে।।
শক্ষা অন্যে টের পেলে, হয় বা সভিনী।
আমাতে সে ভয় নাই, না বাই বিবাদে।

কথার চাতুরী বিরজার।
শেনভাবে বাড়িবেক, উত্তর উত্তর।
এই ভাবি ধনী পরে, কহিল, " এমন ক'রে

जुलाहेउ ना वात ॥

গাট ছাড় ছেড়েলাও, যাও স্থানান্তর ।। তালে শোনে, যিখ্যা হবে, সভ্যের আকার ।।"

বিরজা কহিল ছল ধ'রে।

কন ধনি, নিখ্যা হবে, সভ্যের আকার ?

গাভকুলে করি ভয়, প্রাণয় কে করে লয় :

কি বুঝাও মোরে।

গাভিষ সভায় হ'তে বাসনা আমার।।

ছাভা দিয়া মাধা রাখি, আগনিব ভোৱে।।

অন্যে যদি শোনে হবে দায়।
কনো টের পাতে, টের পেয়েছি এখন ?
কর্তা গিনি লোহে কওয়া, বিবাহ নির্বাহ হওয়া,
সহজ উপায়।

বিবাছের পূর্বে, কে জানিবে এ ঘটন ?। ভারো জান। পরে, আজ ভৌমার আমার ॥*

ইহা শুনি হাসি মনে মনে।
অন্য দিগো চাহি ধনী, মুখভঙ্গি করি।
কহিল, "আজুলি যেন, এভ ঠাট ছুলা কেন,
কর মোর সনে।?

প্রশোভর স্থাবান, স্থাপনি বিবরি ।। আমা প্রতি খোঁচার্বুচা, কিসের কারণে । "

বিরকা করিল প্রাতুরের :

"আনেকে থমন, চাক্ষ দেখে তুলেয়ার :
চক্ষের আডালে গেলে, মন হ'তে ছুরে ফোনে:
যেন নটবর !:

ভাই কি না, নেডে চেড়ে, জানিবাইক্সায়। গোঁচা দিয়া দেখিতেছি, তোমার অন্তর।

একথা সংহলা প্রেমীজনে।

ন্থমা দে ভাবে আর, রহিতে নারিল।

কখিল, 'ধিক্ ডাহ'রে, মেইজন দে প্রকারে,

ন্থম ইচ্ছে মনে।

ব্যভিচারে এও দোষ, কি হেতু হইল।

এই সব প্রধায়-ভক্ষরী, আচররে।।

বিরজে ! তুমি কি ভাব মনে :
দাম্পত্যের স্থা ইন্দ্রিয়ের মুখে নয়,
প্রাণয় সুখ ভাহার, নহে জ্ঞাত সুষ্মার.

ভেৰনা তা ক্ষণে।। একমাত্ত মন ভারি, মিলন প্রণয়।।

ভিতীয় সর্গ।

हुक्त छ दिला, यन तरह कान् काम १।

আশীর্কাদ ক'রনা এমন ।

দলাপহারিণী হব, মনের লোমেতে।

যদি মন দেই কারে. সেই ভিন্ন মারে ডাগে,

ভাবিবেনা মন ॥
ভবে দৃশ্য বস্তু কি, না, দেখিব চোখেতে ?।
গাভে ভাতে ভোলে, নহে এ মন ভেমন ॥'

এ কথা কহিল যতকণ। উদেছিল হুদে নাকি, শুদ্ধ-গ্রেমভাব । ভাহারি প্রভাবে ষেন, প্রীতি অবভার ব্দেন,

> দিল দরশন। নীরব সময়ে হলো, হেন অনুভাব।

खव नाति शास्त वस्त, (क्षेत्र-खक कन ।

(श्रीमकांत्र कथा, स्वमात्र मूर्य । श्रीमता वित्रका, त्यन जारन स्र्य । श्रीमत्त्र जाविन, "व नर्द जाविनी । निननी हर्द वा हर्द्व रिकत्रविनी । याजिक श्रीम, जात्रत्र त्यमन । त्रिशिक्षि स्रोक्ष, देशांत्रा क्यमन ।

পৰিত্ৰপ্ৰায় |

এডদিন যেন, মুদিত আছিল ৷ শরতে বেনন, দেখিল ফটিল। ध्यादा পाउटल, जागि वर्ग (मन)। महाख्य जाता. तम जारे लिया। রাপে না হয় কি, এমন বভন। অগুপ্র শরতে, করে অন্বেহণ 🖟 প্রকাশি কহিল, হ'য়ে কৌভুকিনী। 'পিক বল সূষ্যে, অমৃত ভাষিনি 🍴 কি ভাষা ভাষিত্রি, পীযুর সিঁচিলি _ট **अ** ११ कि धन. द्विया का निलि १। **अपराय माथ, एकांह या कि गर**ा ्श्रम-पोत्त (मधाः खनाः खांत्र करन । दि गत्था (प्रथि, पृश्वपदा ज्या) ভামূল অভুল, প্রণরের ভূমি !।" शामिशा উच्छत करत स्वम्नी। ''কিছুই জাননা, রয়েছ অমনি।? यानाइकि धीकि मनकरे चारह। क्रिट्रेसा (भर्यना, (कर कार्ता कार्र्ड 💥 कृष्टिक इत्र या, श्रीनग्र-एक्टिन । ভবিত্তব্য আনি, মিলায় সেজনে ।।" दिव्रका कहिल, ''दुविलाम मात्र। শ্রুডের আসা, প্রয়াণ ভাহার ৷৷

বিভীয় সর্গ ।

কিন্তু প্রেমাধিনি। এবড় কৌডুক। শরভেরে ভালবেসে, চাত পুরা 🖯 किनना (य कान तम कारन (क्यान । হাময় সঁপিবে: বল বরামনে 🙌 कहिल शमी (कांकिल-कर्श यदा। 'লাভের জাশা কি, ভালবাগা করে · थम किट्य लय, जाना साझे हरिश । क्षांना (धना लाटक, ८मई बुट्य पीट्स! কথা কাটি কাহ বিরক্তা আবাত ৷ ं उब खारमा (य. कि. बाह्य पुना खार) विस्मिनी जाङ्गाउ, कारन निशा भन " শেষে হা হাড়াদে, হারাবে জীবন।। "ভালে যা পাকিবে, ভাছাই ঘটিবে : यरन रय स्मरताङ् भूरम ना छेडिरन ।। প্রিয়জন, চির্দিন কার রহে গ ভালবাসা, কভু, যাইনার মছে।। ছেড়ে যে যায়, যায় আখির দুরে ৷ ছাডিতে পারে কি. সে হৃদর পুরে ?৷ তাহা না হটলে, আপনা ভাবনা। **किर्देशका ज्ञाना पूर्वाटन शांत्रना** ११ " স্বৰমার মুখে, শুনে এ ভারতী। বিরজার মনে, উপজে ক্ষুব্রতি।।

. नारद अभेते ।

"ভেকে গোল লাজ, জেমে কথায় কথায়। ।
মন খুলে সব কথা কহিবে এখন।
মুটেছি সধীর ভাবে, কি কথা গোরে লুকাবে ?
অন্তরের কথা ল'হে, করি আলাপন।।"
বিরজা এসব ভাবি কহে পুনরায়।।

িও কেন যৌবন যন, সঁপিবে বাহারে।
সে কেমন লোক ভা, কি, পেরেছ জানিতে।
স্থান্য জনের করে, সম্পদ অর্পণ ক'রে,
পরিণামে পরিভাপ হয় যে ভুগিভে।
ভাতিই সভর্ক করে, দিতেছি ভোমারে।।

হাসিয়া কহিল ধনী, "এ কথা মুডন! প্রিয়জন ভাল বই, মন্দ হয় কার ? দত্ত বস্তু গ্রহীভার, ভার গতি গতি ভার, জানা পরিশাম, ভাহা ভাবিব কি, জার ?! এ কথা না ভেবে, এড চিন্ধা কি কারণ ?!"

সে কথা ভাজিরা, পুনঃ বিরক্ষা হথার।
"ভূমি যে বেসেছ ভাল, সে, কি, ভা, বুঝেছে?
সে আমারে ভাল বাসে, ভা ভেবে যে হুখে ভাসে।
ভাতেই প্রভাশা, যাহা ছারে জনেছে।।

একথা অবশ্য বুঝ, বাহুল্য বলায়।"

এ কথা শুনিয়া ধনী, করিল উন্তর !

'তুমি কি জাননা, ভালবাসা কি প্রকার দ লেবাসা পাব আদে, কে কাহারে ভাল বাসে ?

গ্রাণে ভালবাসি কি, ভাবিয়া উপকার ?

শিশী ভালবাসে তা, কি, জানে জলধর ?

কথা শুনে বিরজার, সুথে মন কোরে।
বাড়াতে দে সুথো, হাদি আবার সুখার।
ভাল বাসা দৃদ হেডু- বৈবাহিক বিধি দেডু,
বিষয় ভাবিয়া, কে, না কবে এ কথান।।
ভাই বলি কি হবে সে, না চাহিলে ভোৱে ।।

ভেবে যেন ছুঃধ বলো, সে ভাবের রবে।
উত্তর করিল ভাও, মধুনাথা ক'রে।

"ধনে থানি গবে করে, যে ভায় না পায় করে,
ধন-আশা ছেড়ে সে কি, পোকে যায় ম'রে।
মোর পাকে এপকে, সাদৃশা ভাই হবে।"

বদিও মনের অনুমোদিত কথনে। বিধা জন্মেনাই, তরু বেন স্থমার। চমকি উঠিল প্রাণ, বদন হইল স্লান, লন্দেৰ সহিত চিস্তা, উঠে বার বার ॥ ভাবিতে লাগিল, কি, যে, কড মনে মনে ॥

একবার ভাবে, " যদি না পাই ভালারে। এখনি এমন, পরে গাঁচিব কেননে ? আবার মনেতে ২৯, না পাবার কথা নঃ, ধুবন্তী থাতিলে ভ্যানে, না দেখি সেজনে। মোর প্রতি হতি, ভার ই'তেণত পারে। ?

একবার ভাগে, "বলি না হয় তেমন। বুধা ইচ্ছা চ'লে যাবে, না ফিলিবে আর। ভালবাসা হলে কাল, মুংখে যাবে চিরকালে।" পুন: ভাবে, " যাবে কি, জানালে এ বাগার। পুরুষেও চাহে, করি রমণী রঞ্জন।।"

ধকৰার ভাবে, "তার যনের এতন, ।
বদ্যপি না হ'ই, ডবে কি হবে যাছিলে?"
পুদঃ ভাবে " তার দনে, চন্দো-ইনী বেইক্ণণে,
এক মনে মোর প্রতি, যেরপ চাহিলে ॥
মনে না লাগিলে, কেন চাহিবে ভেমন ।"

একবার ভাবে, " ভার রূপ যে প্রকার।

चिकीत गर्न ।

তেমন বা হ'ছে, গুণে মন্দ যদি ৰয় ?" আবার তাবে এরপ, " ভুলেছিও দেখে রুণ, সোণায় সোহাগা হবে, গুণ ভাল রয়। ফলে গুণ-শূন্য নয়, তেমন আকার ॥"

প্রবমা থে মনে মনে, ভাবিছে বিজয় । আকার প্রকারে ভাষা, বিয়ক্তা বুঝিয়া। ভালিল, "এ ভাবনার, কারণ কথা আমার, ভাল ক্যিনাই, তুর্ক বৈত্তর্ক করিয়া। । কিন্তা ভাল ক্রিয়াছি, বুঝিবে উত্তর ॥

তথ্নো ঋনেক কণা, আছে জিজানার।
ইহার মনের কথা, করিয়া প্রবেণ।
তার কথা ভার ঠাই, জানিব বা জানা চাই,
বুঝিতে হইবে, যন কায়ার কেমন।"
এতভাবি ধীরি ধীরি, কহে পুদর্মার।

" হ্যনে! ভোমার, নব অনুরাগো, দেখিয়া ভনিয়া, হেন মনে লাগো, প্রবীন প্রণায়, বেব মনে জাগো, পাষাণেতে রেখা প্রায় গোঃ!

-00

ভধাপি ভোমার, এই প্রেম-সাধ, ঘোচেনা, মুচালে ঘটিবে প্রমান.

ধুৰিতেছি অভিপ্ৰায় গো।।
৩খন কেমনে, হইবে নিলন,
ভাহারি উপার, করিছ চিম্বন,
সহেনা বিলয়, মনোয়ত ধৰ,

পাছে অদমন হয় গো !"
হাসিয়া কহিল গনী এই ভাষ,
"বুঝে হ্বে কেন, কর পরিহাস,
বা হয় করনা, উপায় প্রকাশ:

ভোর মনে কিবা লয় গো। ॥"
বিরজা কহিল, "রেখেছি ভাবিয়া,
সম্বয়ে উভয়ে, দিব মিলাইয়া,
কোনু কথা এই, ভোমার লাগিয়া,

দিতে পারি চাঁদ খ'রে গো়। ভোর বিবাহের, কুল কুটিরাছে, দুরে ছিল বর, যরে আসিয়াছে, যোগাড় করিতে, যাহা বাকি আছে,

ছদিনেই লব ক'রে গো। ভাল বল ভনি, ভোমার বেরপ, হ'রেছে বে মন, দেখারে বরপ, ভূমি কি করিতে, পেরেছ সেরপ. ঠকিয়াছ বুঝি ভাষ গো? অপরপ দেখে, আপনা ভূলিয়া, কাভি নিলে মন, সহিয়া রহিয়া, ছাডিদিয়া চোর, বিরলে বসিগ্রা,

কাচ-পোকা-ধরা প্রায় গো।"
ধনী বলে, " আগো, এ মন হাবায়,
করিণী বিনা কি, করি ধরা যায় ?"
বিরজা কহিল, "ভবে ভূমি ভার,

পেলেও ধবিতে নার গো !"
"পারি কি না পারি, কিরুপে বলিন ভার মনোভাব, আমি কি বুঝিব, গণিতে জানি কি, গণিয়া দেখিব,

ृति ह'ता मन भात भा ॥" स्वमा त्यमन, अकथा कहिल. विहंका समनि, हामिश विल्ल, "उत पृहे कम, अकार्य अनि ला

ভোমা হেন ভোমা নাই গো! চিত্রিত করেছ, আদর্শে বাহার, চোধে দেখনাই, স্বরূপ ভাহার ? চিত্রেত র'রেছে, দেশ একবার,

मार्थ बूद्ध मध्य जारे भा । अञ्चल क्रेटन, नश्चन नश्चन, পরস্পর মন, করে আলাপন, কেন, কি, ভোষাতে বলে নাই মন, কেমন ভাষার মন গো?

কেমন ভাষার মন গো ?
আহা, বটে, ভোর, হেথা নাই মন,
না পাকুক মন, আছেভ নয়ন,
ভারি হ'তে মন, করে বিলোকন.

শে যে বোনো, কি কেমন গো । নিরাকার মন, কননায় ভাষে, নয়নে, বদনে, ইঙ্গিড প্রকাশে, পা্থারাও ভাষা, নোয়ে অনায়াসে,

তুমি বেংশনাক ভাও লো শ হাসিল সুষমা, নে কথা শুনিয়া, ভাষা দেখি পুনঃ, হাভ নাড়া দিয়া, বলিল, "ভূমি কি, আমারে ছলিয়া,

কথা লুকাইতে চাও গো ।?"
ধনী বলে, " আমি ছলিব তোমাকে ?
ধাইর কাছে কি, পেট ছাপা থাকে,
এখনো সরমে বাধিছে, জামাকে.

निलाक कतिलि, जुरे (भा।"
रित्रका रत्न, "कि लाक ला छ्लूत !
शूक्रमत्र काष्ट्र, (बाह्र क्षिल क्यू द्र,
कालि छाक वाक्षि, जाबाहेदर मूद्र,

इतिन वहे छन्हे तथा।।"
धनी वत्न, " जूहे, भरनद्र मार्थरह,
वड़ द'ल निनि, मगद्र करमरड,
स्भू त्यम कथा, द्रग्न मा, श्रियरह,
पूर्थ छाड़ि, कारव धद्र तथा।"
दिश्रका वत्न, "कि, दहेनि भागन,
मगद्र मा ह'ल, करन, कोन् कन १
तथमा कि कति, ह'डमा हक्षन,

ছুদিন সৰুর কর গো।।"
স্বমা বলে, " বে হুদিন গুহিব,
নদি বাঁচি ভবে, পাগল হুইন অধীর মনেকি, বুঝাতে পারিব,

ना (प्रत्येः त्म नदनाहरत (था ? निकटि हरहरहः (प्रविद्या नहरन, कानद्वर्थः) द्वाहराङ शादि मत्न, कि विद्या क्यरन, द्वाद नहरन,

অস্তুরে ধৈরজ হ'রে গো ।?
একে ভার সেই মধুর মুরজি,
যাহে ভাহে যনে, জনমিল রজি,
মধু মধু ভাহা, দেখিয়া বিরভি,

जात्र कि, रहेर्ड शास्त्र शाः ? यथन जालीय जारत, स्न ग्राहिरत, द्यमा कि चात्र, कितिए शाहितः? भद्गत्व उथिन, शनिया वाहेद्य.

দেখি সে দেখে আমারে গো। সেই আসি ববে, দেখেছি ভাষাত্র, ফিরি ফিরি চার, ফিরি ফিরি চার, আড়ালে এসেছি, ভধাপি আমায়, দেখিতে যতু ক'রেছে গো।,

এই কথা বেই, বিরজা শুনিল. হেসে খাড় নেড়ে, বলিয়া উঠিল,

* দেবে আরু কিবা, জানিভে রবিজ

তোতে গে, ঝেস মজেছে গো।।
তাই ভাবি এ, কি, ঘটেছে কোপার,
মদনের ফাঁদে, কে কোপা এড়ায় ?
চুরি ক'রে চোর অমনি পলায়,

কাম যার কাছে কাছে গো! ভবে ভোর আর, ভাবিতে হরেনা, সেই ভোর লাগি, করিছে ভাবনা, মডন করিতে, বিলম্ব স্বেনা,

(जहे शंध हाता. आह्ह त्या ॥ आता छात्र किहू, बनाहे हरवना, बिलाल बाहन, ছाড़िया निरवना, निषि बनधि, निरुष्ठ शाहिरवना, কর্তারে বুঝাতে, গাই গো।
গাঁথ মালা তুমি, মনের মতন,
যে মালা বদলি, কিনিবে রতন,
এ কথা বলিয়া, করিল গমন।
ধনী স্থাই, দেখি তাই গো।

স্থৰমার হানয়ে, উলিল পুনঃ ভাবনা । ভেবে ভার ভক্ষি ভাবে, সাদিতেছে অনু ভাবে, দেও কি মনেতে ভাবে, অনন্যমনা। জীবি কিন্তু মোর প্রতি, করেছিল ধারণা।।

অনন্ত্ৰনার আঁখি, দেখিরাছি নয়নে।
এক ভাবে স্থির রয়, সংজ্ঞা-শৃন্য মনে হয়
এ আঁখি তেমন নয়, কেত্রিক সনে।
ভ্রতি চাতৃক বেন, চার বারি-বাহনে !

এ প্রকার ভাব, যার প্রকাশিছে নয়নে।
ভ্যাগ করি দৃষ্ট জন, অন্যে ভাবে ভার মন,
কভু কি হবে এমন? না লয় মনে।
সে চিস্তা অবশ্য, নব অনুরাগ কারণে!

মোর প্রতি তার বদি, অসুরাগ নহিবে !

নতুবা ভেমন ধারা, প্রাণ্থোলা ভাবে ভরা, চাধনি ছ্থ-পাসরা কেন হইবে १। বিভিন্ন ভাবেডে কোথা এড গুণ পাইবে १।

ভাল পূন: ভাল ক'রে দেখে আসি নয়নে !" প্রেম-ভরে ধনী ধার, প্রথম দেখা বথার, পথে দক্রন পায়, বাঞ্চিত ধনেএ চম্বি থম্বি তথা, নিব্রিল গমনে !

সে পথ নিজ্জন নয়, সদা লোকে প্রিড।
বদি কেং দেখে তবে, মন্দ ভাবি মন্দ কবে,
বস্তু লজ্জা পেতেহবে, হবেনা হিড।
দে ভায়ে, প্রকৃত্ত-মুখ-পত্তে হয়ে গোপিড।

কটাকে চাহিয়া নেখে, মনোহর নেহারে।
চ'লে বায় ফিরি চায়, ছুতনা করি দাঁড়ার,
পায় পায় দেগে যায়, চলিতে নারে।
সে ভাব দেখিয়া বনী, তালে সুখ-পাখারে।

এমন কি হয়, মন, মোর মভ না হ'লে ? কেবল দেখে আমায়, কালো পানে নাহি চায়, আংগ পাছে কড যায়, রপনী চ'লে।"

এ নিশাসে স্বমার, প্রেম আরে। উথলে।।

পথে পথে দেখা-দেখা, পাণ ভ'রে হলো না। ধনী ফিরি ঘরে যায়, শরৎ আমে বাসাল, দিবা যায় শোভাপায়, চাঁদের কণা॥ ধেন কালে দেখা দিল, সন্ধ্যা হ'রে শোভনা॥

বসাইতে দেবগণে, রক্তাদ্র পাতিল। পথ-শ্রান্তি শান্তি ভরে, ধীরি দীরি বায়ু সরে, পক্ষী গণ আসে ঘরে, যে যেথা ছিল। সন্ধ্যামূদি ঋদি ফুল, পূজা হেতু ফুটিলঃ

বিলাসী লোকের। চলে, সমীরণ সেবনে। জলাশর-ভীরে, ঘরে ডক্তেরা বন্দনা করে, বাজি জ্বালি আলো করে, রমণীগণে।। সন্ধ্যা সমার্গমে সথে, স্থাী ছলো ভূবনে।।

কিন্তু এত আদরেও, সন্ত্রা নাহি রহিল। কত কার্য্য আছে যেন, গোল হ'য়ে ব্যস্ত হেন, থাকিবেনা ভবে কেন, আদিরাছিল। আদরেতে বুঝি, মনে অহস্কার হইল।। সন্ধ্যা গেল রাজি এল. সৃত্তু সৃত্ত গমনে ।
নাহি তার অভস্কার, সবে বাধ্য গুণে তার,
কার্য্য তাজে বে যাহার, স্থাভিত্ত মনে ॥
বিশ্রাম বিভারে লোকে, নিজে থাকি যতনে ॥

নিশা আগিমনে, শুইয়া শগুনে, রম্বপ্রি, অপনে, কেবা না চায় 🕆 क्षेत्र मिलाम, विष्कृत-एकाम, দশ্পতীর মনে, স্থান কি পাল গ! निर्मा जागमान. ७३१। भशाम. হয়প্তি হুণনে, কেবা না পায় : विटक्ष मगरम, शुक्ष बार्लागरम, **ठिखांत निलास, कड़ ना यात्र।।** শ্রৎ হর্থন. করিল শায়ন রজনী তখন, দণ্ডেক চারি। क्रय त्राजि यात्र, निका माँहि शाह्र. নিজায় কে চায়, ভাবনা ভারি !! মন উচাটন. করি দর্শন, मरनत गजन, मिह युवजी। किएइ नान। प्राम, किएनइ छेएकाम. সার করে শেষে, এই যুক্তি॥ "कहिर यजन, ध नाही-तजन,

বিভীয় সৰ্গ ৷

क्न रहा थन, क्रंटन खांगात।

नयन खीरन, नयन र्यायन,

नयन खगन, कहा वर्षात।।

अ स्तार्भाह्नी, ना क्रंटन गृहिनी,

खाद कि खगनि, शादि दाँकिएड ।

धत क्रंड खात, क्रंथ नाहि काद.

পাকিলে এবার, নারে মোহিতে : মেন গঠন, যেমন বরণ,

চাহে অঁথি মন, তাই মিনেছে: বিধি বুঝি মন, গ'ডেছে বেমন,

সময়ে তেখন, মুটে পাঁচড়ছে !!
ফ্লাপি ও ধন, লভে অন্য জন,
মোর আজিক্তন, বিফল হয় !
বুকু মেটে যাবে, প্রাণ বাহিরাবে.

মৃত্যুর স্মভাবে, দে ছুখ দয় ?। নাটিছে নরন, বুঝিয়াছে মন, ভালের শিখন, হবে আমারি।

ভাষা নাহি হ'লে, অ'পনার ব'লে.

ভেবে মন ভোলে, রূপে তাহারি।
সে হবে অংগার, আমি হব তার,
সে বুঝি ইহার, ভাব পেয়েছে!
ভাই ফিরে বায়, ফিরি ফিরি চায়,

ভাবেতে আমার, জানায়ে গেছে পারে কি কখন, নয়নে নয়ন,

দিয়া ঘন খন, পারে দেখিতে গ নহে এক বার, দেখি পুনর্মার,

সেই ভাব ভার, সেই স্মাঁথিতে !: এ সব ভাবিয়া, ধৈরজ পরিয়া

মনে বুঝাইয়া, পারে রাখিছে। নাহি হেন জন, তর এত কণ্

আমার ও মন, আছে ভাবিছে। আর কে বইতে এখনি ছুটিভ,

ভাহার মহিত, প্রেম-আলায় ৷ নতে সংলাহণ, ও সব ঘটন,

বড় বিচক্ষণ, জ্ঞান হারায়।
আশা হিতকরী, ভাই কাল হরি,

ও হেন সর্বারী, যার বহিরা। আশা ক'রে আরু ওরপ গুড়ার,

থাকা হবে ভার হুখ সহিয়া। ফলে যে আমার, আশার স্নশার,

হবেই ভাকার, বড় ভরসা। মনে মন টানেন বুঝি অনুমানে.

কিছু পরিমাণে, তার এ দশা। বদি তার মন, আমার মতন,

দ্বিতীয় সর্গ।

হয় কভক্ষণ, হবে মিলিছে 2 ভবে এই ভয়, স্বাধীন। সে নয়, স্বহং পরিণয়, নারে করিছে !! যাতা পিলা ভার, করি অধিচার যদি একে আরু, করে উভায়ে। কি হবে ভথন ? হবেনা এমন थियोकि कथन. जाटा श्रन्तः। সে বদি আমাকে, ভালবেসে থাকে, ভবে কি ভাহাকে, আমি পাবনা? পাৰই পাৰই, সে, যে আমা বট. कारम बिल्ल ७३, कार वांचना !: বাসনা যেখন, ঘটিলে ভেমন শক্তের ভূষণ, ক'রে রাখিব। केंद्र लाक जा, भूथ माहि कर. ংনে গিয়া নয়, স্বথে থাকিব গা করিলে নির্শে, ছাডিবনা আশ. ल दाहि मनाम, छाई गाथित। निकाडे थाकिय, नग्नान (मधिय' প্রান্থর বাধিব, নাম জাপিব।" শরতের যন, কভই এমন, বচন রচন, করে জাগিয়া ৷ রাত্তি বহিষায়, স্ক্রমা কোথায়,

कार्म ना प्रगास (निश व्यक्तिस) ।।

একি বিষয় গ্যাপার !
দেখিতেছি সুষ্মার । যেন পাগলিনী প্রাণ্ড ।

কে বাহে সকলি বিকার !।

যেন সে সুষ্মা নয় ।

হইরাছে এল থেল, বিক্তিছে এল মেল নিদ্রো নাই, নিশীথ সময়।। অনুরাগ কি তীবণ!

জানিতনা কোন স্থালা, নিতাপ্ত নবীনা ব্যক্তা:

এত জ্বালা পরের কারণ !৷

এ যে পর ৰ'লে পর ৷

আপনি কে ভা জানেনা, সেই হ'লে: এও ১5নঃ, প্রাণের অধিক প্রিয়ন্তর॥ আজি হ**ইল এ**মন।

মদন পাগল না কি, কি ক'রেছে,থাকি থাকি, ভাক প্রতি কঠিন শাসন ?। সবে অঁথির মিলন।

কিন্তু ভাবে বসি পাশে, যেন আলিঞ্চিতে আসে, হেন মুশ্ধ ক'রেছে মদন!৷

কভু করে বিবেচনা। শাড়াইয়া পুরোভাগে, ধরিভেচাহিলে ভাগে- দেখ দেখি কামের ছলনা।
সারে হরিয়াছে জ্ঞান।
'আমি মরি ভাগ তরে, সে বুঝি ঘুমায় ঘরে,
এই ভাবি করে অভিযান।।"
কভ করিছে স্বরণ।

মিলন হয়ত ভবে, ধে কাষ করিছে হবে. করে অন্য দম্পতী বেমন ।। হ'লে মিলনে বাবোত ।

কি উপায় করা চাই, আগো বির করে ভাই, যুক্তি মতে জনৱের সংং।। আজি প্রয়োৱ মন।

হুইয়াছে কি প্রকার, সেই **জানে ও** প্রকার, দশা ভোগ কারেছে যেজন।। বিধি কি থেলা **খেলা**য়।

কোথাকার বস্তু আনি, নিলায় কোথায় টানি, ন নদীর সাগর-সঙ্গ প্রায়।।
দেখ কেমন যোটন।

ষেমন হ'রেছে দেখা, গার বেন ছিল লেখা, প'ড়ে চেনে যে বার স্থাপন।। চিনে আপনার জন।

যাবৎ মিলন নয়, ধ্যান ক'রে সুথী হয়-কাম কেন জ্বলায় এখন ?! বড় ঘুট রভিপতি।

ছই জনে ঘুই স্থানে, হানি পঞ্চ পঞ্চ বাণে,
দেখাইছে নিজের শক্তি।।
ভাল মকবকেতন।
ভূমিই জাঞ্জি আছে, আছে কি না করিয়াছ,
আনক্ষেই প্রভাপ এমন।।
কিন্তু ভোমার প্রভাপ।
দেশভী সহিতে নারে পূর্মবাণে কি প্রভাবে,
মহিবে ? দিওনা আর ভাপ।।
আজ কর্ম্ প্রস্থান।
গ্রহ্ম ডোমার করে, কভ্রম্প দেখ পরে,
শান দিয়া রাথ পঞ্চ বাণ।।

কভ ককে পোহাল রজনী।
প্রমার মনে কভ, আশার নকার।
বিরজা এখনি আসি।
শুশু সমাচার দিবে, হইয়া উল্লাসী।
পূজা মানে কভ দেবভার।।
বিরজার আশা-পথে, চার আর মনোরথে,
নানা অভিলায হ'তে, করিছে বাছনি।।

वित्रका कारिया (नशा मिन।

আসা দেখি আও মনে সুখের উদয় ।
কিন্তু মুখ নিরখিয়া।
মনের অন্ধেক সুখ, পড়িল ধসিয়া।
সঞ্জে সঙ্গে জন্মিল সংশয়।।
"অতীক সাধন হডো, এ মুখে ইাসিত কত,
দ্রন্তে বুঝি আশা, বিকল করিল।।"

"আশা-তরি তুবেতে তুফানে। কেখনে কহিব, এই কথা স্বমান। কেন লইলাম ভার। বিবাহে করাব মত, গৃহিণী কর্তার॥ হলোনা ভা শুনাম বে দায়॥ এখন কবেনা বলা, পারে ভার হবে সলা,"

না স্থাতে আপনি কহিল।

"পোড়া কায়ে অবসর নাহি মরিবার।

যিছে কায়ে গেছে কাল।

আক সৰ কাৰ সেৱে; সকাল লকাল।।

শেষ করে লব নে ক্ষার।।"

ধাই কথা কহে মুখে,

সুষ্যা মনের ভাব, বুৰিভে লারিল।।

সুৰমা কছিল, "এ কি কথা।
কাষে কাষে দিন গোল বুকাও আমারে।

মিছা কথার কোশল।

ভূলেছিলা সভা কথা, প্রকাশিয়া বল।।
ভালবাসা বলে কি ইহারে।।
ত কাষ হলোনা বড় আন্য কাষ হলো দড়,
কাষের মান্তব্য কাজ করে কি আনংখা"।

বিরজা উত্তর দিল হাসি।

"জানি আমি এ কথা, শুনিডে হবে লেহে।

ভোর কাবে হেলা মোর ?

এই কাষে এই বিবেচনা হলো ভোর গ।

এমন শুনিনি কোন দেশে।।

আজ কাল অন্য জন,

হইয়াছে প্রিয়জন,

আমিও হ'লাম পর, মুচিয়া হিভানী ?।"

পরক্ষার এরপ প্রকারে।
কহিছে অনেক কথা, বেলা বেড়ে যায়।
বিরক্ষা বিদায় লয়।
স্থামা বিদায় ভাবে, ভাবি-পরিণয়।।
এই ভাবে সে দিন কাটায়।।
প্রতি দিন ছল ক'রে,
বিরক্ষা সময় হরে,

स्यमा कि कत्त्र, कछ नहरू दात्त दात्त ।।

স্থার যিলেছে দোষর ।
কহিলা মনেল কথা, নিবারয় ছখ ।
শরভের সঙ্গী নাই!
এক মনে এক ভাবে, ভাবে সর্বদাই!
আহা ভার সামান্য অসুথ ।।
যাশা যার পিবে মধু, বহু দিন গত সুধু,
চক্ষে দেখা ভিন্ন, অন্য ঘটনা হুজুর ।

লার প্রিয়জন কাছে- পূর্বরাগ জন্মিরাছে,
বৃষ্ট্য ভারে কড দিন, ধারে বেঁবে রাখিবে ই
যন লে ছুটেছে ভার, ভারে কেবা রোধিবে ই
বল উড়ু উড় করে, নাধার চাপিরা ধরে,
সময় পাইলে, সে কি আর ঘরে থাকিবে ই
প্রিয়জন যেথা সেখা, ইড়ে গিয়া বনিবে !

না ভেবেছি হলো ডাই, বিরজা কি বোরে ছাই, মিছা মিছি ছল করি, দিন নফী করিল। এখন রাশুক ছলে, সুষ্মাত চলিল!! হাত বাড়াইলে পায়. প্রিরজনে প্রেষদায়, এতেও বে বাঁধা ছিল, ছুরদৃষ্টে বাধিল।

প্ৰিত্ৰপ্ৰণয়।

শুভাদৃষ্ট সুপ্রসঃ, এত নিনে হইল !।

শরৎ বসিয়া ঘরেন যেই মূর্তি ধ্যান করে,

একেবারে দেই মূর্তি, পুরোভাগে দেখিল :

লফল-সাহন-যোগীদম স্থাখ ভাদিল !!
আহলাদ ধরেনা গায়ন জাখি মন মেংক পায়,

সজ্ঞোব প্রকাশে হেন, কপা নাহি ক্লুবিল :
কপন, কি নহজা, চিন্তাঃ ভাষে করিল !:

শুস্ত ভাব দরশনে, সন্দেহের আক্রেমণে।

শুস্থ পশিতে চাহ্ন সুথ তারে রোপিরা।

गাত্তিক ভাবের সঙ্গে, প্রবেশিল আসিরা।

হলো বটে অভিসার, তিবু না কি ললনার,

সরম পরম-বন্ধু, সাবধান করিয়া।

গাত্তিক ভাবেও আসি, রহে গুপ্ত হইয়া।

যুদ্ধ হালি মধু-মরে, "বিরজা কি নাই যরে । তবে কেন আসিলাম," ব'লে ধেন ডরিয়া। দাঁতে দাঁতে জিহ্বা কাটি, ধনী যায় চলিয়া। তখন শরৎ ভাবে, "বরদার বর লাভে, বঞ্চিত হ'লাম, হাতে অধিষ্ঠাত্তী পাইয়া।" ডেকে বলে কাতর, বিনয়ী ভাব ধরিয়া। শ্বিরজ্ঞা না থাক দরে, এ খর কিসের তরে প প্রতি বাদিনীর প্রতিপদ-ধূলি পড়িছে। বিশেষতঃ বিশেষ সমস্ত্র তব সহিতে। ধাও বৃথি মোর ভরে, বল নতে যাই সরে। আমিত দেখেছি ভারে, ভোষা ভালবাসিতে। ভালবাসা ফিরি যাবে, আমি পারি দেখিতে?

ইক্ষা নয় যায় ছেছে, ভাৰ বুৰা নেছে চেডে ছাৰ নামি গায়ে প'ছে, ধৰা দেওয়া হবেন। ! কথাও ভানিৰে কিন্তু, সাগে কথা কৰেন। দ এই তেতু ধনী কিনে, আজাপ্ৰতি কয় থীকে, "আসিৰে ত থেতে দেখি, এলে বেসি ন্ৰেনা। দেজে ওঁজে আসি পুনঃগিলে অসা স্বেনা।"

শরং জাবার বলে, "আসি কেন যাও চলে? আসা যাওয়ানেই, কজু বসা দেখা ঘটেনা। গসিলেত কভি নাই, অপানান ছবেনা।। কেছ কালো বাড়ী এসে, এস, বস, সবে বলে, ভাই বাবে বাবে বলি, মন্দ্রভাব লবেনা। না বস বসনা কেন, বল মন বোঝেনা।?"

पृनः रत्न स्तावना, "विद्रका दुखि अलाना,

ভবে বাই এলে পরে, ফিরে নহে আসিব ?"
শরৎ বলিল, "বল ভারে ডেকে আনিব ?!"
ধনী ছল জোধে কয়, এ ব্যান্ডার ভাল নয়,
আনেক স্হৈছি, পরে আর নাহি সহিব !
বিশ্বাসের কায় এই ? বিরজায় কহিব !!

এ হেন নিজ্জন-ভূমি, একাকী বিলেশ ভূমি.

একাকিনী মোরে, জুমি কড় কথা কৰিলে।
ভেবে দেখ কি ভাবিবে, লোকে ইছা গুনিলে।
ভাছ হেথা করি বাসা, তরু করি মাওয়া আসা,
বিশ্বাস করেছি, ভূমি ভাষাও না বুঝিলে।
বলিলে যে কথা, কোনু সার্লান্তে বলিলে ?।"

শরৎ উত্তর করে, "অবিশ্বাদী বল মোরে, অন্য লোক হ'লে পরে, কি জানি কি ভাবিত ! আমি নাকি ভালবাদি, ভাই নহি ছু:খিত ! ভালবাদে যে যাহারে, কত কথা বলে,ভারে, সে ভাল বাদিলে দে, কি. ভায় করে দ্বিত ? যে ভাবের ভালবাদা, সে ভাবে সে বৃক্তিত !

যদি বল দেখে চোখে, কেন ভালবাসে লোকে,
বুৰাবার নহে, ভাল বাসিতে ভ বুৰিতে!

কাৰ নাই বুঝে, বুঝে হয় বড় সহিছে!
 ইদি বল কি কায়নে, ভালবাসি হেন জনে,
কাঁথি মন জানে, ভাহা আমি নারি বলিভে!
 বলায় কি ফল ব'লে যাব ফল যাতিতে ৄ।"

ত কথা করি শোবণ, যেন মুখ্যার ম্নগ'লে গাড়াইয়া ফিরি, এল পুনঃ দেখানে।
ছলে চ'লেছিল গনী, হেথা হ'তে ওখানে।।
নিকটে বাগান ছিল, ভারি কাছে পালটিল,
ব'লে 'যদি আসিয়াছি, তুলি ফ্ল বাগানে।
ফল তোলা রোগ, ছেড়ে নেতে মন না মানে।।"

বিরজা আড়ালে থাকি, দেখা গুনা নাহি বাকি,
কথা গুনি মনে মনে, ফল 'গুলো বুঝেছি ?
কোন্ ফল ভোলো আজে, দোখবারে রয়েছি ""
শরং কহিল পারে, 'কি কাম আয়াস ক'রে,
চাহ যদি দেই কভ তুলে ঘরে রেখেছি ?
আহা, ডা ভোমারি যোগ্য, যাহা আমি তুলেছি!।"

এক বার কথা ক'রে, গেছে ভার-ভাঙ্গা ছ'রে, উত্তর করিল ধনী, "কায কি সে ফ্লেভে! আমি কি সাধিব বাদ, অবিবাদ-সাধেতে?!

পাঁবতা প্রবর্ষ।

কেই আছে ভালবাসা, ভাহারে তুবিতে আশা; যভনে তুলেছ ফুল, লেগেছে বা মনেতে। মন লাগা কুল দিয়ে, কুগ্র হবে মনেতে।

ভেবে এ কথার রাগ, রাগ নহে অনুরাগ,
বুঝিতে পারিয়া, শরভের শকা ঘুটিল।
এ ফুল অগাধ-জলে, এডকণে জানিল।।
হাসিয়া উত্তর দিল, 'এ কথা জানা নাছিল,
মন ভারে ছাড়ি রয়, যারে ভাল বাসিল।
ভাহ'লে অন্যেরে ভালবাসিতে কি বহিল ?।"

এ কথার ভাবে ধারা, ভাবেতে হ'লো অধীরা,
মধু-পান-ঘোরে যেন, মোনবতী হইল।
শরং সম্বতি ভাবি, ফুলগুলি আনিল।
হাতে ভুলে দিতে বায়, বিরক্ষা আসি তথায়,
"স্ব্রুল্ কেন দাও, অপেকা না সহিল।
মালা গেখে দিই দাও," বোলে হাত পাতিল।

বিরজা যে সব জানে, শরৎ তা জানেনা।
বড় লজ্জা হ'লো দেখে, হেঁট-মাথা ভোলেনা!।
বিশ্বজা কহিল, "মাথা ভোলো আর ভয়কি?
নক্ষী ভাঁড়াইয়া, প্রেম করা কারো হয় কি।

ত্রমার অনুরাগ, ভাল মতে জেনেছি ! দ্ৰব অনুৱাগ, ভাৰভক্ষি দেখে বুবেছি।। क्रवूत्र मिनियाह, प्रार्थ द्वशी है सहि! ভাতেই আদন্দ কালে, যোগ দিভে এদেছি "!! वित्रकाद्य वांधा निज्ञा, विस्नामिनी कहिल। "महिकि इरथेत ह्थी, द्राय स्थी आहेत!। যার রেগে ভারেই, ঔষধ হ'লো খুজিতে किरमत आजीश. तरह कान् कार्य नांशिष्ड ?। चंद्रेक इहेशा नित्त. घढेकाली कतिशा। আহা কি ঘটক, জুণে লগ্ন যায় বহিয়া !৷ षाट्ड अट्ड कांग्रेशि, मधकान पिथिया । जेला निष्ड चारेलन, हुँ छो रान धारेश।।" বিরজা কহিল, যার লগ্ন যায় বহিয়া। क ना जात्न त्म, थाकिना, घंठेक्द्रत हाहिया हा एति इश्ना निया, लक्ष कथा नहिला। এ বিবাহহ হয়নাই, আজি তুমি কৰিলে 🕼 मध्य शाकि, भहर करिल, "(म, कि, विद्वर जुमि थाकि चढेक, इर्त्याश कम महरण है। वित्रजा कहिल "आमि, ভাविशाहि स्तरश । প্রকাশ্যে বিবাহ দিব, হথ হবে প্রপ্তরে !। कछ (च्छे। कतिनाम, किहुद्ध मा महिन। कन्मार्थाक या कता, मात्र र दा शिष्ट्रम ॥"

সুষ্মা কহিল "ভাই, ভেঙ্গে কেন বলনা।
চেষ্টান্ত করিলে, কি করিবে ফল হ'লোনা!।
এখন উপায় কর, সব নিক্ ভাবিয়া।
ঠেকিডে হয়না যেন, কোন দারে পড়িছা।
হিভাশিনী ভোর তুল্য, কেহ নাহি ভুবনে।
কহিনু পেটের কথা, দেখা রেখো শারণে।।"
বিরজা কহিল, "আমি প্রাণ-পণ ক'রেছি।
এ প্রেম'বজায় জন্য, দৃঢ়-তাত হ'রেছি।
পরিণামে কি কর্ত্তব্য, ভাবিয়াছি আগেতে।
এখনো উপায় দেখি, প্রকাশ্য বিবাহেতে।
ফলে ভুমি ভেব'না, ভাবনা যা ভা আমারি।
যাতে ভাল-হয়, যুক্তি ব'লেদিব ভাহারি।

যে যাহারে ভালবাদে, দেও ভালবাদে সে যেমন ভারে।

কেবল ইহাই জানি, যত সুথ অনুমানি.
পরিমাণ ভাহারি, হইতে নাহি পারে॥
বেসি ভাল বাসে, জানি কি সুথ যে হয়।
কেবলিডে পারে ই ডাহা বলিবারি নয়॥

तिहे छथ ध्ययम्हे, भारत्वत मान, । पत्रभन हिला। কি ভাগা ভাষার হায়, ভালবৈদে সুষ্মায়, আশার অভীত ফল, হঠাৎ পাইল। কেমন স্বৰ্গীয় সুখ, জানেনা জজাৎ। জানিতে যে চাও, ভাব হইয়া শর্থ।।

সুষ্মা, বিরজা, দোহাকার কথা শুনি,
শরতের মন !
আপনা পাসরে থায়, ভাবে সুষ্মা আমায়,
এত ভাল বাসে কেন, আমি কি এমন ?!
আমার লাগিয়া করে, এত আকিঞ্চন ৷
কে জানে যে আমি, হব সুষ্মা-রঞ্জন ?:

আনন্দ হিল্লোলে, অবিরাম স্থান্-পদ্ম,
লাগিল নাচিছে।
লেখি রসনা রসিল, ভার কোতৃক বাড়িল,
স্থমায় সম্বোধিল কোতৃক করিছে।।
"বিনোদিনি। সদয়া যখন, মোর গুডি।
ভখন উচিত মোর, বলা সুমুক্তি ॥

প্রসন্ন কপাল মোর, ডাই মোর প্রতি,
অনুরাগ ডব!
বদি না হয় বিবাহ,
তবু হবেনা বিরহ,

নিভাস্ত আমারি হবে, চেন্ট। ভারি সব।
এ চেন্টার যোগ, নাহি দিলে মোরি ক্ষতি।
ভা ব'লে কি, সুযুক্তি দিবনা যথা-মতি।

আমি কেন। ভোমার মনকি, তা বলেন। ?

এ সব কাষেতে।

শা হয় তা হবে ব'লে, সহসা প্রান্ত হ'লে.
পরিণামে মন্দ হ'লে, হবে ছুঃখ পেতে॥
বিশেষতঃ গুৰুজানে, নাহি দিলে মত।
যে কাব হোকনা কেন, হুইবে বিরতঃ॥"

উত্তর করিল ধনী, চাহিনাই বিধি.
পণ্ডিভের কাছে।
প্রারি নিয়াছে যেই, গে বিধি করিবে সেই.
যার কর্মা, ভাল-মন্দ-বোধ, ভার আছে।।
কে জানেনা এ কথায় গুঢ়-ভাবে ভরা।
আজ্ব-কটি খাওয়া, আর পার-কচি পারা॥"

শরৎ কহিল পুন: "কর বিবেচনা,
স্থির করি মন !
কথন না চিন্ বারে, বিবাহ করিবে ভারে,
জীবন, যৌবন, মন, করিয়া অর্পণ।!

বর আমি, তরু ওলে, মোর কাঁপে হিয়া। এ কাব করিবে তুমি, কেমন করিয়া ?। "

छेडत कतिल धनो "छत्र यनि इत्र, तक्ष मावधारनः

কি জানি কি যটে পাছে, এখনো সময় ছাছে, উপযুক্ত যুক্তি লও সঞ্জনের স্থানে ।। আমি ভ মনের বাধ্য অবাধ্য ও মন । বাধিতে পারেনা ও যে, স্বজনের মন ॥"

শরৎ কহিল, "আবো কহিতেছি হিত, ভেবে দেখ মনে। এমন সরল মন, বিদেশীরে সমর্পণ করিবে মনের মত, স্থাথের কারণে।। একেড বিদেশী, তাহে সন্নামী এখন। ভামিবে রবুনা হেখা, কি হবে তখন।"

শ্বনা কৰিল, "কেন হব সন্নাসিনী, পতি-গতি সতী। ভাহা হ'তে মনো মত, সুখ কিসে আছে কঁড, ভাগো বদি থাকে হয় তেমন দুম্পতী।। প্রণয়ে সেভাবে ছঃখ, নাহি ভাবে নারী।

পুৰুষে কি ভাবে ভাৰা, বলিভে না পারি ॥"

শরৎ বলিল "যদি অসং সে হর ?

মজাইয়া মন ।

দাৰণ লম্পট প্রায়, ছাড়ে পলাইয়া যায়,

কি দশা হইবে ভবে, করনা চিন্তন ?!
ভাই বলি যা করিবে ভেবে করা ভাল ।

হ'লে পরে ফিরিবেনা, হইবে জ্ঞাল ।!

সুৰমা কহিল, "যার মন যে প্রকার, ভেমন সে করে। দে যদি ভ্যজিয়া যায়, ধরি কি রাখিব ভাগ । নয়ন হইতে যাবে, রাখিব অশুরে॥ ভাহে এই জানা যাবে, সে ভালবাদেনা। জামার যে ভালবাদা, ভাহাত যাবেনা।।

ইহাত পরম সুখ্য আগেতে মিলন,
না হ'লে মিলন।
করিব রূপের ধ্যান, 'করিব নামের গান,
আমার ও ভালবাসা, হবেনা খণ্ডন।।
ননস্ক ভালবাসা, জনুরোধে নয়।
বিধবা হ'লেও রবে, বাঁচি যে সময়।।"

अ तकत कथा छनि, भंदरखंद्र मन, आनत्म नाहित ।

কেন না নাচিবে মন ? এমন নারী-রডন।
বিনা বডনেডে ভার, প্রণর বাচিল!।
প্রকাশি কহিল, 'যাহা ভাল বুঝ কর।
বে দেখি ভোমার কাব, সব বডবার ।।"

কখায় কথায় গেল, অনেক সময়, বিরক্ষা চেয়ায়।

"প্রমে! সত্ত্ব হও, আজিকে বিদায় লও, আজিকার দেখা শুনা, এই হোক সায়।। বে কর্ত্তব্য কাল ভার, হবে বিবেচনা। এখন গৃহেন্ডে চল, বিলয় ক'রোনা।।,

বাধা প্রায়, বিরজার কথা, দিল বাধা,
না মানিলে নম।

শস্ক্রাকালে চক্রবাক্ট, সমান চঞ্চল আঁথি,
স্বমা শরতে কয়, "আলি রসময়!।

মনে রেখ, যতক্ষণ থাকিব, অশ্বরে।

মনে কিছু ক'রোনা কথিত কথান্তরে"।।

महर कहिन, "बाध्य व विराह्म-बाह्र,

्रेंटि यनि थाकि।

दन्यामिशा श्रृमखात. स्मार्था আहि कि शिकाः
जुनना अट्माट्स, अवे कथा ग्राम उपस्थि।

धवे रनि शक्ष-शास्त्र, कृद्ध महन्यन।

छोग् स्मार्थाः (त्राह्म स्मार्थ, कृद्ध शः न ।

স্তাল-সম্বত গান, ফুরালেও অনুস্-रश (यम (अहे डांम, लाशिएडाइ कार्म सूरमा ना हिक ख्या. क्यू यन कर्म कथा হতেছে শ্বা-গভা, যেখানে সেখান।। নেই মূচি কবিকল, সম্মুখে লেখে কে:ে । अहे सार मठकन, श्रीकारक के (°७१७) धके प्लाटर शक्का, अंतर चाममा-रम नांदि कान करुक्न, जिन्मान शिष्ट ।: খাতি হ'লে৷ সমাগত, অনিজায় মনে।মত্ িংযা-লাভে মৃতি কও, রাধিল ভাবিয়া। र्ष्यादात्र निया छेन्य. (म ९ याग्र मञ्चात ३३), বৈজা হেন সময়, কৰিল আসিয়া) "ম' বাপের অনুমতি, হয় অসম্ভব অতি का जिसे धरे युक्ति, श्रमा क'त्राह् । अधारमण्ड थाका नांग, अत्य तक्रित स्थान निक्नो क्रेटि हांग्न. हक्ता क द्वाह !!

यनि इत्र अख्येख. जनगात मर्गातथ. প্রস্ত হইলে পথ, দেই দেখাইয়া !" শ্রং কহিল হাসি, "চাও কি সম্পদ-রাশি, महिट्रिक खिल्हान चानि, चालन हरेशा ११ विद्रालय एकां उ व'त्ला श्रेका निशा कि की भारत. গৃহ হ'তে যাবে চ'লে, গোপন করিয়া ?" विद्रका कहिल. "हात. एव मान यादा हाल. · কুন্তারে থাইল জালে, দিব রটাইয়া ॥" এ কথা কছিয়া পরে, শরুভেরে সঙ্গে ক'লে, আসি গন্ধা তীর ধারে, যাইতে বলিয়া। "बस्रात व्यालका क'रत, स्वया मिलिल लाज, চলিয়া বেও সত্তে," কহে বুঝাইয়া।। বিরজারে শিষ্টাচারে, ক্বজ্ঞতা জানাবারে: শরৎ সাদরে ভারে, অনেক কহিল। বিরজা নিবারি ডাঁয়, "কায় নাই শিফভায়," विलया पिया विषाय, विषाय लहेल ॥ कान खत्र सुरागादतः त्य रे भेटप को हेवादतः कहिशा कलात बाद्य, वानि कानि कशा "(क चाष्ट्रिम मोटफ चांत्र, चार्यातत स्वयाह, क्योद्धराज लाय यात्र, डेलात्र कि इया।" य अत्न दाहेशा आदम, क्रिक शिक्षा छक् बारम. কৰে ব্যাপতি পাপে এই স্মাচার !

300

গুদি ব্লাপতি ধার, জাল কেলি হাতভার শেষে হ'লে নিকপার, করে হাহাকার ।। नकरनंद्र मरनाद्रमा. कर्ण छर्ग निक्लमा. द्रश्यी द्रश्या मश्, हिलमा उथन ॥ কাঁদি ভথাকার লোভ, অনেক করিল শোক, র্মাপতি নিরালোক দেখয়ে ভুবন !! धरे मोक किंदू मिन, उहिल मा शंला लोन. কার শোক চিরদিন, সমভাবে রয় ? ভবে প্রিয়-প্র-শোক, আর প্রিয়-পত্তি-শোক, यात्र ध्वित्रमीत्र भाक, जुलियात नत् ।। মা, বাপ, কন্যার ভরে, কভদিন শোক করে? বিবাহ হয়নি পরে, কে'বা শোক করে। इरे यान बूद्ध धन, नकत्नरे जुला शनः बर्षिन विद्धाप-(भन, वित्रक्षा-कक्षत्ता।

তৃতীয় সর্গ।

वत, पृत्त शिशा, व्यापिक्शा, लाडू शान हाम। ক্রমে, বাডে রাজি, বরপাতি, দেখিতে না পায়।। কভূ, ফিরি আদে, আশে পাশে, করে অবেষণ। কভু, দড় বড়ি, গাছে **চ**ড়ি, কয়য়ে ঈক্ষণ ।। কোন, পশু যায়, শব্দ পায়, ভাবে এই স্মাসে। শুষ্ক, পত্ৰ নড়ে. উঠে পড়ে, চাহে হুই পালে।। गथा, ह'त्ल ज्या, मृत्रज्या, तिथि मृत (ভात्त । ভথা, ভ্রান্তি হেরি, শরভেরি, ভ্রান্ত-চিত্ত দোলে।। ভাবে "বিরজার, কি ব্যাভার, মিখ্যা কথা বলি ৷ कति, পরিহাস, বনবাস, পাঠাইল ছলি ॥ **এই অভিমানে, সেই ক্ষণে, ফিরিবারে চায়**। কিন্তু, সন্দেহেতে, ফিরে যেতে, ফিরে অভি প্রায় 👢 ''বুঝি, সে আমায়, স্থমায়, পৃথক করিবে ! এই, স্বজনের, অমতের, বিবাহ ভাঙ্গিবে।। ইহা, বিচারিয়া, ভাড়াইয়া, দিল মোরে হেখা। शाल, शूनबाब, थाकिराम, नावि पित तथा।। यमि, छाडे इस, याउसा नसं, छाडांत करान । जिम, लीप लेप्प, मानाइएप, नाविर मक्स ॥ जानि, स्वगाञ्ज, द्व जास्त्री, वज् क्रांनवरित । त्म, (या, त्मारत छाटेक, जारनी मटक, मरन मा विश्वारत 11

कति, नेष्ट्रभात्र, त्म व्यामात्र, वित्रदे वित्रदे १ क्ट, यादा दिशा, आशंलिया, श्थिए मातिरव ।। खात मात्री-त्रोखि. याल्य छोखि, भाग भाग भाग । यमि, नाहि हारा, भि वायारा, छरिशा विभाम ॥ তবু, ছাভি ভারে, এ আকারে, ফিরিভে নারিব। ভারে, দেখে ঢোখে, ভারিশোকে, শরীর ভাজিবাঃ ·মিছা, কেন আর, এ কান্তার, ভ্রমি রাতি যায় !" इंश. जारि गत्न. (महे कर्ण, किति ठलियायु।। भाष, व्याक व्याक, समाग्राक, साला कारनामग्र ! "এতে, বির্জার, কু আচার, থাকিবার নয়।। क्बि, लिए वांचा, भार हाथा, जला मा विलित्न। हत, धरे मछा। मर छछ, भाव कालि पितन ॥" निभि. (भारारेल, উতরিল, আমের মধেতে। खान, "बाय बाय, **अवबा**य, मात्र कुछोद्भटक ॥" धरे. (भाक-चरत, थत चरत, काँशिश कित। ভাবে, ''একি জালা, সে অবলা, কোখায় রহিল !! সে যে, ত্যাজি বরে, মোর তরে, গীছে মিথ্যা নয়। ব্রঝি, যেতে যেতে, বিপাদেতে, বেধেছে নিক্তয়।। কিম্বা, পথ-ভাস্তা, কুল-কাস্তা, যুরিছে কাস্তারে। कड, ভাবিভেছে, कांतिভেছে, ना प्रिथ आमारत ।! **एता, चार्छ श्रीन, चतुनान, रह मा अमन ।** (कान, हि: अ १७, रह काल, क'द्राक बनन ।।

ŗ

वाडा, त्म वादला, कि अटकला, बाट्य व्यट्ड शांहरी क्न, शांख म'रत, मरक क'रत, ना निमाय खारत !! (काम भर्ष यात, शिथा भात, आहि काम स्थाप । (यात. र'टला छारे, काथा शाहे, रात्राहेता शाटन ॥" (थान, প্রাণ काँदि, छोद्र वाँदि, क्कूब्रिक माद्र। হ'য়ে, কেপা প্রায়, বেগে ধায়, পুজিতে প্রিয়ারে ।। যে'তে, দেই পথে, যেই পথে, কালি গিয়াছিল (मर्थ, मार्थ जात, शथ जात, (म श्रंथ इंनिल १६) ভাবে, "दूबि काश्वा; এই পস্থা, ধরিয়া গিয়াছে। भेथ, भिय क्'टल, कांत्र खुटल, अवनाहे आह्य ॥'* পথে, भूष्ण यात्र, यङ भात्र, छेक्ट नीइ भान। (यन, होता-मान, (थाएक कनो, हहेबा कळान ॥ शृद्ध, (मृद्ध योद्र, कृद्ध छ। द्रुत, "(मृक्षा कि क्'द्रुतक्र? कान, ऋक्षात्री, कूल-नात्री, धहे शरथ 'शरह ? " यिन, प्राप्त वन, जारक चन, सूयरम सूयरम ! (शत्न, कान जाय, खविदाय, श्राय श्राय जाय है। গত, कछ निन, शांखि निन, शूर्फ शांता-धन। करा, भोड-कान, পেয়ে कान, मिन पत्रभन।।

[&]quot; अने नी छ-कोन, अवर्ष क्यम, नहने छारत ! नहन वि नहें, किन छोड़ोड़, नोहेंद्रमा बाद्य १। कृष्टिन विक्रम, ब्रुष्ट इ'रहें भीने, क्षेत्रिहा बाद्य ।

ফাল ছায়ে পেয়ে, আপনার গুণ, আপনি গাতে।

প্রথম প্রথম, শরীর শিহরে, আরাম হয়।
ছুদিন পরেই, হিম, জল, বায়ু, লাগায় ভয়।
প্রথমে দে ভর, বাহিরে ভিভরে, সমান নয়।
ক্রমে বেড়ে উঠে, ভিতরে বাহিরে, ভেদ না রয়।

भोत् को क याता. भी क अन वंदल, कतिहा भरत। कार्तित रुपन, भी एक बंदन कार्द्र, यत कि करन। तूरक काँ के किया, कारक यातन, समझ करन। मरन मरन करत, याहे रिष्ठा, रुप्था भी एक ना नरत।

কুঁজ: হয়ে পড়ে, দীঘল শরীর শীতের বায় । তেলাল গোলাল, শহীর ফাটিয়া, চটিয়া ঘায় । কত তক্ষ, লভা, হয় জড় সড়, শোভা না পার। কত পশু, পাখী, এমন হয় যে, চুনাই দায়।।

শর্থ-সম্ভব, শস্য যত সব, উঠিল পেকে । শীতের খন্দ, শিশির পাইয়া, বাড়িল জেঁকে ।: কাক হ'লো যাঠ, কিকরে সে জাঁক, কে ভার দেখে বর্গ্ধ থামারে,শদ্যের শোডায়, নয়ন ঠেকে ।৷ প্রভাষ সময়ে, শিশিরের কোঁটা, পদ্ধর ঘাসে।
থিতে স্থানর, কিছুকাল মন, হরিতে আসে।
একালে কুআসা, কোখা হ'তে আসি, ভুবনগ্রাসে।
গিখারের প্রায়, চেকে ফেলে যাহা, থাকয়ে পাশে॥

ানি কেবল, অনল, তপন, সুধার প্রায় । গারম বসন, কুঠুরে তবন, আদর পায় ॥ বড ছোট দিন, কাযে কুলায়না, বডই দায় । রজনী কিন্তু, বড় হ'য়ে বড়, সুধ বিলায় ॥

এপন ধসন, পরি, সবে আশা, মিটায়ে লয়।
পরিতে থেমন, আরাম, তেমনি, আমোদ হর ।
পরা চেয়ে আরো, আমোদ দেখিতে, নগার ময়।
নানা জাতি লোক, নানা জাতি বাস, পরিয়া রয়।

পড়ই অস্থী, বসন যাহারা, কিনিতে নারে । অনল তপন, দেবিয়া তাহারা, সময় সারে ।। ক'ডোবারু যারা, বারুগিরি ছেড়ে, দিতে কিপারে। পাছুরী শোভেনা, উড়ানীউড়ায়ে হাসায়ে মারে।

कान कान परम, नाहीशन मारब, चारक व बाहा। वक वारत नवा, भीख कार्ड, वह, कालिहा नाहा। লকালে সন্ধ্যায়, যত গৃহ-কায়, করছে ভারা। আহা, এই কালে, সুষ্মা কোথায়, হইল হাব''

কোথা সে অবলা, সতুরে ভাষার, উদ্দেশ করি। বিপাদের সাখা, নাহি যে ভাষার, মরিরে মরি।। প্রাণে নাহি সয়, সে যে ছুঃখ সয়, শুরীর পরি। সে যে অনা নয়, শুরুতের প্রেম-সুখের ভরি।।

করিয়া, যভন, দেখি সে রভন, কোথায় পাই। আকরের নয় কিনিধার নল, কাশারে চাই । ভুবনের মাঝো ভেমন রভন, আর যে নাই। বিধিত ভালারে, ভারালে ব্রেনা, ভরসা ভাই।।

চতুর বিধানা, লোকের অত্যকে, কৌতুক পায়।
ভাই এ বিরহ, ঘটায়ে দিয়েছে, নহে এ দায়।।
নাণুতে ত্রিয়ামা, চন্দ্রনায় অসচ ঘূটনা প্রায়।
স্থামা-বিরহ, চিরস্থায়ী নয়, ভাবে বুঝায়।।

আহা নববালা, বড আশা করে, করে অভিসার, অনুরাগ ভরে, পাছু নিলি কেন, ওরে বালাই ?

नंबर य भाष, चूकिएक हिनन,

स्मगं (म পথে, প্রথমে আইল,

এনে দেখে কই, শরৎ নাই!। ফাপড়ে পড়িয়া, ঘুরিতে লাগিল ব্যাকুল হইয়া, কডই খুজিল,

काथा भारत मिछ, नाहिक छथा। ना (भरत भन्न छ, भारती चामित्रा, इतिल चिछोत्र, भारती बन्नित्रा,

আইল শরৎ অপেকে যথা :৷
নখন স্বয়া, এপথ গ'রেছে,
ভারি কিছু আগে, শরৎ ফিরেচে,

ভাই পরস্পার, দেখা না হর। এদিয়েও নাই, শরভের দেখা, ভাবিল 'এখন, কোখা বাই একা,'

যনে মনে ছলো, বড়ই ভয় ॥ কি করে চলিল সাহসের ভরে, কাঞ্চনে খুজিভে, অন্ধকার ঘরে;

ভাও তথা হ'তে, গিয়াছে ন'রে। বছদূরে বায়, দেখা নাহি পায়, ভাবে রামা "একি, করিলাম হার,

সঙ্গ ছাড়ি কেন, এলাম পরে।।
বুঝি নাথ কোন, বিপথে প'ড়েছে,
অধবা কোধায়, গোপনে র'য়েছে;

ভাকিলে উত্তর, পাইতে পারি। কি ক'রে ভাকি বা, ছাড়িয়া গলায়; ফুকারিলে কেহ, চিনিবে আমায়,

कि, कित (य प्रिथि, विशेष छोति।) यकि प्रिथा नाहि, इष्ट छात गर्न, कि किति किता, इर्द शेतकर्ग,

ভালের লিখন, এই কি ছিল ? গৃহ ছাড়িলাম, বাহার আশায়, ভারে না পেলাম কি হবে দশায়,

কেন বিধি যোরে, এ ছ্থ দিল ?" ভয়ে চারিদির্গে, অকুল দেখিল, হিয়া ছুর ছুর, করিডে লাগিল,

वूक जिएक शाल, नश्चन-ज्ञाल । कांनिएक कांनिएक, जारव मरन मरन, कांनिएक, जारव मरन मरन, कांनिएन,

আসি কি আবার, গিয়াছে চ'লে? আসি হেখা বুঝি, মোরে না দেখিয়া, আসিয়াছি কি না, জানিডে ফিরিয়া,

গিয়াছে, এইজ, মনেতে লয়।
আমারে কুন্তীরে, করিয়াছে গ্রাস,
একথা শুনিলে, হইবে বিশাস,
ধুখনি আসিবে, রবার নয়।"

তৃতীয় সর্গ।

এই আসে, এই আসে, হয় মনে, চ.ছি দেখে পথা শতবার কথে,

দে আশাও ক্রমে, বিফলা হয়। ভাবিল, "ভবেকি, ফিরিয়া চলিক গ্রহেডে কি স্থাই স্থিত হছব গ

গৃহ হ'তে সেঁ ত পাবার নয় ৷৷ ভারে না পাইলে, গৃহেকি করিব দেশদেশাস্তব্যে ভারে অমেষিক

এভাবে জীবন, করিব ক্ষয় !

অথবা বনেতে, কুঠির বাঁধিয়া,
ভাবিব ভাষারে, যোগিনী হইয়া,

পিরীতের বীতি, এইত হয়।। কিন্তু এ বিরহ, কেমনে সহিব, যদিন বাঁচিব, ভাবিয়া মরিব,

কেনবা বাঁচিতে, বাসনা করি। একে বিরহিণী, একাকিনী ভায়, বিপদে বারিব, কার ভরসায়?

ি বিগদে না ম'রে, আপনি মরি। এতকণ আশা, সঙ্গিনী আছিল, কত চলিয়াছি, ভয় না নাগিল,

একাকিনা করি, পেও যে বার! মূন ভূমি আর, মোর এবে রও,

4

যারে ভাবিতেছ, ভারে ভাবি রও.

প্রাণ যাও আরে, রবে কোথার ?৷ পুজিয়া ভাষারে, না পাই যদি রে, ভেবেছ কি ভবে, রাখিব শরীরে /

কেন জেনে শুনে, যাবে আঘাতে ধ্ কি আশায় মায়া, শরীরে রহিবে ? সংহিলেও আজ, হিংজকে ছাডিরে ?

ভাহ'লে কি আর, পাবে লুকাচে ?!
নাহ'তে মিলন, হইল বিরহ,
কোন পাপে এড, করিছে নিগ্রহ,
এ নিগ্রহ কেন, সহিব আর ?

কিন্তু মরণেও, সুধ না হইল, আমি মরিভেছি, সেত না জানিল,

আশা রবে, ছুখ হবে যে ভার !৷ পুরুষের মন, বুঝিবার ভরে, মিলিবে উপায়, আছে বুভুভরে

आयात उपाय, किहूरे नारे! अथरना तराहि, हिथना शुक्तिया, के करे, पत्रभन केलाना ताहिया,

এনো আশা, যদি, মরিয়া পাই !।" শরতের রূপ, স্থান্থতে ধ'রে. চলিল স্থান, মরিবার ভরে, ত দিনে যামিনী, প্রভাত হয়।
গামিনী কামিনী, নারীয় মরণ,
নেথিতে না পারি, করিল গমন,
এই ভাব যেন, মনেতে লয়॥
নলিনী-নারক, পাইল দেখিতে,
ললিনী-পার, কে, আসিছে মরিতে,
গ কাশিল কেল, দেখে বাসনা।
ভারু গা ভাবিল, ভাছাই হইল,
কোন মহাজন, দেখিতে পাইল,
ভাহে প্রযার, মরা হ'লোনা।।

স্বন্ধার মরিবার, বাদনার, সঙ্গে।
বেন বাধা, ছিল বাঁধা, দিল বাধা, রঙ্গে!।
হঠাৎকার, এক ধার, অন্ধকার, ক'রে।
অশ্বচারী, অন্তধারী, আদে সারি, ধ'রে!।
চট চট, খট এট, ঘট ঘট, শক।
শোনে কাণে, যে যেখানে, সে সেখানে, শুরু!।
হেষারবে, দিক সবে, প্রতিরবে, ভরে।
বায়ু কৃড়ি, ধূলিউড়ি, দিগমুড়ি ধরে!।
খর-শাণ, অসিবাণ, দেখে প্রাণ, উরে!
বারগণ, বেগে মন, আক্র্বণ, করে!।
সেই সাজে, মাঝে মাঝে, কেহ ভাঁজে, অসি!

(कर भारत, लक्काका द. खारीपाइ, दिन ह एहे (भल, धरे धन, श'एड(भन, इव । मृत्त थांकि. मृत्म जाँचि. शल शामी, मर !: পাধী কত, শত শত, পত্ৰত, চরে। খেয়ে তীর, শিকারীর, মৃত্যান্থির, করে 🕸 व्यक्तार, कि उद्शाद, मर्छिशाद, करह । ভয়াবছ, সমাবোহ, ভোবে মোহ, ধরে ॥ ए जोगान दिगर्जान, श्रीकृष्णा, याक , দেখে ভয়ে, প্রাণ ল'য়ে, সেও ভয়ে, এন্থ !৷ মুগায়ার, এ ব্যাপার, সুষমার, পাকে। অভ্যাচার, ভাবে ভার, মন আর, চকে ১ এডক্ষণ, বীরগণ, অন্য-মন, থেকে। এইবার, সুযুমার, সে আকার, দেখে !: मलयायी, निष्य नामि, मृह्गायी, क'ता। কাছে আদে, সমাখাসে, স্থেছ ভাসে, ক'ছে । জিজাসয়, "পরিচয়, যোগা, হয়, কছ। कारता नाही, कि क्यांती, कि खांगति, तह । किकांत्र निख जन, एकजन, नाहे। काकिनी, खनाथिनी, (कन क्लानि, छोहे ?!" পুষমার, ধার্য্য আরু, অন্য কারু, সনে ৷ (मर्था क्यू, कथा क्यू, हेक्का नयू यान ॥

কিন্তু ভার, এডাবার, পথ আর. কই : गत्म ভार्त. "ना स्वार्त, मुक्कार्त, इहे ॥" अ'शबुक, मरकोजूक, हाट्ड पूर्व, कर्षा কথা নাই, কেন নাই ? ভাবে ভাই, মনে ! 'বোবা হতে,'' বুঝি ভবে, সঙ্গীসতে, কয়। "যতু ক'রে, অস্থোপরে, তুলি ধ'রে, লয়। विद्रामिनी, अकायिनी, अकाविमी, श्राम । इस्के श्रेट्ट, मकेक्ट्र, (म्रोडी च्रांड (श्रांल के (६८६ पूर्व, बर्द छ्य. (कन छूर्व, भरव > ধাই লায়ে, মমালয়ে, কন্যা হ'য়ে, রবে 👫 कथान्न, स्यात्र, पुत्र श्रीत्र, करत्र। থরণরি, নাঁপে ডারি, হরি ছরি। স্বারে । "कি ভাবিকু কি করিলু, কি হইলু, ভায়।" ইহা ভাতি চিন্তে ভাবী, অনুভাবি, দায়। ভাবি পরে, স্থির করে, "এরি ঘরে, যাই ৷ যথা হোক- ভ্যক্তি শোক, পরলোক, চাই # (वांवा ভाष्ति, यात्म यात्म, यथां ऋात्म, नारव ! মান যাহা, আছে ভাহা, পেলে রাহা, হরে 🛊 कथा व'तन, जान इ'तन, गछरगातन, जडा। সভীত্বের, বিশ্ব চের, বিপদের, শঙ্কা"।। ल विहात, ख्यमात, यत्न चात्र, श्राद्धाः नाहि कात्न, अयोगाल, त्यांवा कात्न, मात्न ॥ আখাচারী, সঙ্গে নারী, বীর-নারী, সাজে।
- চলে ধেন, শক্তি হেন, হুরগণ, মাঝে।

বিরহ কি নিদার্কণ : তা হ'তে আগুণে গুলু স্ক্রমে যেমন। আগুণে যালারে ধরে, একেবারে ভন্ম ক'রে নিভায় আপান।। বিরহ যাগারে পরে, থিকি দিকি দদ্দ করে নিভায়না ফ্রায়ন। তাহার জ্বান। চিরকাল সমভাব, কুজনের যে যভ'ব, কুজনেরো শক্তভাব, ফ্রায় ক্থন।।

মরি ছুঃখে মন দকে, শরৎ স্থম। দৌছে,
নিরহ ছুর্জন।
কোমা হ'তে কোপা আনি, দুঠাই করিল টানি,
না হ'তে মিলন।
কি করে তাদের মন, ভারাই জানে ছুজন,
তেবে মন কেঁপে ওঠে, কোরে ছুনয়ন।
গণেশই ভাবিছে মন, এখনি করি মিলন,
দে সমরে থাকিলে, কি ঘটিত এমন।

देशरात्र धेर क्तत, माठिनारे चाहि छत,

ভালের লিখন।

পেয়েছি একের দেখা, আর ছাড়িবনা একা। হারান রভনা।

্রং কোথা এখন, দেখি ক'রে অন্থেষ্
রতন পেরেছি স্থাত পাবই এখন :
বুঝি আজ ছঃখ শেষ-সুজিতে হ'লোলা কেশ,
এই সেঁ সুক্মা দেখে, সুষ্মা-রঞ্জন !!

বিধি হ'য়ে অনুকূল, শরভেরে দিল বল অকুল-পাথারে :

নান্ত্ৰ জমি এক", শেবেতে পাইল দেখা, কালীমবাজারে॥

যে আনিল স্থমায়, বিচারক দে তথায়, তার অন্তঃপুর মাঝে, বাভায়ন ধারে। স্থমা বশিয়া ছিল, শরতেরে দেখা দিল, শরৎ দাঁড়ায়ে নিমে, পথের মাঝারে।!

হঠাৎ আধার ঘরে, আলোক দেখিলে পরে, সজোব বেমন।

महरू प्रविशा পথে, ज्यमात क्रिन-तथा, व्यानम एक्सन ॥

নৰ্মন্ত ৰাৱায়ে পাকে, অভাগা বেমন থাকে,

A.K.

্তিশীর হৈ তেমনি ভাবে করিতে ভামণ।
হৈলে পুনঃ ভাগ্যোদয়, অভাগা কি কুমী হয়।
শারং সুক্ষা দেখে, হইল এমন।।

চারি চ্কে দেখা দেখা, উভয়ে ভাষিল এ থি,
সভ্য কি স্থপন ?
ক্ষের বেগের প্রায়, নয়ন-জল-খারার,
ভিজ্ঞিল বসন ॥
শরং কহিল "সে, কি, এতেও ভদ্রভা দেখি!
সে, কি, পরধন হয়। ভেবেছে দৃষ্ণ ?"
ক্ষমা কছে "জীবন! জানিতে হবে মিলন,

डाइ या 3 नाहे ? शाल (शाउन: ए धन ।"

প্রপ মিলন সঙ্গে, যত সুথ প্রলো রক্তে.

ভূঞ্জে পরস্পারে।
বিবরিয়া পূর্ব-কথা, উভয়ে জানায় ব্যথা,
উভয়-গোচরে॥

সাক্ষান্তে পাইলে কর্তা, ছফ্টের দৌরাখ্যা-থার্ডা,
ভীকজনে যে প্রকার অভিযোগ করে।

সেই মত উভয়ের, বিশ্রহেন্ডে বিরহের,

ক্ষিয়াচার-বার্ডা দৌহে করে আর্ত্ত-খরে॥

উজ্জ্ব করিয়া পথ বাভায়ন, শ্বং সুষ্মা করে আলাপন,

্রাহর গৃহিণী অলক্ষ্যে থাকিয়া, দেখিল শুনিল সব।
ভাকিয়া কর্ডায় করে বিব্রিয়া

"আনিয়াছ যায় স্পায়ায় গিয়া.

্র'বা নয় সেং যে, সাজিয়াছে বোবা, একি একি অসভিব !! প্রমাস্কার, মুবা এক জন, চলি যায় পথে, করি দয়শন,

out dis rich, with them.

কৰু মুখী হ'লো, বলিডে পাছিলা, দেও সুখা দেখি তায়[া]

জ্ঞান হয় এই, নারী-শ্বিচয়.

माधारन शांश, मानातन रहा,

যুবাজন কেল, লইবে উহার অনুভবে বুঝাযায় ॥"

গৃহিণীর মৃধে, এ সব ভারতী,

শুনিয়া কৌতুকী, হয় গৃহপতি,

গুঁহণী চিনারে দিল, মুনকেরে, ডাকি আনে সমাদরে :

विद्युष्ट विलाल, भर्र दिनल,

সভাজনোচিত_ি স্থাননা করিল,

ন্তুণ আছে, ভাব দেখি সবে বোঝে; ক্রপেত মোহিত করে।

পরে বিচারক, জিজাশিল ভারে,

"কে তুমি স্বরূপ, কহিবে আনুষ্ঠার, 🍇 ্র যে নারীর সহ, আলাপ করিলে, বল ভারো পরিচয় 🐉

এकाकिनी जातः (शाहा विकाद.

उख् जात जानि. वड़ हेक्शे गत्न,

মুক ভাবে দেও গোপনে রৈখেছে, তুমি কছ সমুদ্র ছ

বুকিল শরং, শন্তি হৈলে নয় । সরল ভাবেতে কহে পরিচয়,

13.7 016 100, 464 1130%,

নিজ পরিচয়, প্রথম হট্যের, প্রথমে প্রকাশ করিং

পতে অ্যমাত, নাম ধাম দছ.

क्ष्या, श्रेष्ठांग विशेष, विदेश,

আপাত-ছিলন পৃৰ্ধিপর কথা, কৰিলা সৰ বিবরি 🛭

कानूश्रसी मदः वान्ध्या घडेनाः

छ निना करेड़ा, अविश्व-यंगः,

इपकि डेकिश करक विषातक, "एकामताहे हरूँ। एक ए अरी र

প্রতিজ্ঞা আমান, কোমানের প্রেনে,

यन वांशा चार्छ धूहाहेव करम.

म उत्तर्भव विदाय, भृशी करत सूर्यः क्वम करें शार्व ज या।"

অন্তুৰ ভাকি, আনি সুৰ্মায়

श्रिक्षाणिला, "वाहा कह त्म कथार,

कम বোৰা शंक्ष बाह करें म'ता गृह कर्जू किया छात्र"?

বাজিয়াছে ঢাক. ল'জে কেবা করে.

ভবুরামা ল'জে কহে মৃত্র-শ্বরে,

ह्णूहल-পর, (अ: जात मधनो, मोतन स्थित व्याकात।।

कहिला चूचहो "धरक म कासात,

ष्यकूरल (कर, नाहिक षांगांत्र,

কিন্তাপে সভীত্ব, রাখিব ভাবিয়া, বিচারিনু মনে মনে।
নহিড কুরপা, ভাষাতে যুবভী,
দেখি যদি কারো, হয় অন্যশতি,
হ'ডেইগারে দুগা বোবা ডেবে, ভাই বোবা সাঞি নেই ক্ষণেঃ

িতেশিকারে স্থা বোরা ভেবে, তবি নোরা ধালি নেই ক্ষণে পিতৃরৎ ভার- আপনার ছিল-নস্থামণে তবুং সন্দেহ হইল,

্বলিল মন না কহ কথা, জানি, সৌন্দ্য্য বডোর খারে! কথার বিপদ ভাবিলাম আরে, কহিছে হইত, এত সমণ্ট্য,

আজি যা ভানিলে তথ্য ভানিলে তথ্নি পাঠাতে ঘরে।
ফিরে যারে যাই, নহেত মনন,
বিরহ না ঘোচে ভাজিব জীবন,

জাজিব জাবন, গোপন কথায়, কেন শুনাইব পরে ? শুনি লোকে মোরে, কুলটা কহিবে,

ংশয়ের স্থলে, কলঙ্ক রটিবে

আমা হ'তে ইহা, হইবে কেমনে, কথা হব্ধি এত স্মার্ট্রের্ট্র বিচারক স্বপু, বিচারক নর,

প্রণয়ী প্রবীণে প্রবীণ প্রণয়.

স্থার আফাদ, দেবতাই জানে, কথা শুনি পুলক্ষিত।
সম ব্যথা বার, সেই বুবো ব্যথা,
ভাবুকেই বুবো, ভাবুকের কথা,

द्रमा भवटक, मिलिल मति कि, सूक्ष्य नमरश्रीहरू ।

বিচারক হ'রে. হরনিত অভি, কলে "বাছা ভূমি, বড় বুদ্ধিমতী.

স্বৃদ্ধি যাহার, কাষ কি ভাহার, আবা-রক্ষা হেতু প্রত্তী

रश्रम नरीना खरग्राट खनीगः

ভা না হ'লে প্রেন, বুঝেছ, বাড়ুকি বাল-লভ ফল দরে ব এরপে অনেক প্রশংসা করিয়ান

गहर युवमा मार्चाहर छुविन्तः

ডাকি অনুচরে, প্রেরিলা সত্ত্তের রমাণতি নিকেডনে। কলিলা তার "বলোনা ভাষাতে

সেখিলৈ শুনিলে যে সত্ব্যাপটাত ক্লোডি আনিবে, এই কথা বলি,ভাকিয়াতি প্রায়োজনেত

যে আজো বলিয়া চলি যায় চর-

কুক্ত ভাৰ ভাবে মনের ভিতর,

'বার ক্ন্যা **এন্ত, রপগুণ ধরে, কি জানি** সেই কেমন ৷

এমন রতন জনমে যেখানে.•

त्रमधीय (महे, जारम अनुगारन,

अथरा स्थूरे, मात्रांवात मश्र, श्रम्भाल अधारम ।।"

ডাকে বিচারের পতি, ডাকে বিচারের পতি।
পারম-সোঁভাগ্য মানি, আসে রমাপতি।।
উারে যতন করিয়া, তাঁরে যতন করিয়া।

আধিলেন বিচারক, তির বাসা দিয়া॥
গ্রান্তি শান্তির অন্তরে হ
্কহিলা থ্য প্রয়োজন, কৃষি অভঃপরে ।:
ভূমি ভোমার কন্যায় :

কস্তারে করেছে নষ্ট, ডুবারে গঙ্গার !! অভি হংখের বিষয়, ২

कि कदिता विधि लिलि, थएन ना छन्न । " कंकि करह दमाशकि, २

ैमिकाख पूर्णागं छोडे, मरत स्म मखिक ।। अस्तरकाः सम्बाधान, २

কিন্যা ব'বে কন্যা, কিবিঃ রূপে গুণ ভারে !!" কিরি খেদি বহু ভার, ২

শোকে দপ্ত রমাপতি, হইল কাত্তর ।। বিচারক পুনর্কার, ২

কহিলা, "না কাঁৰ, মৃত্যু হয় নাই ভার॥" কথা ভনি রমাপাতি, ২

বলে, "সে, কি, মহাশয়, সত্য এভারতী ।?" বিচারক হাস্য করি, ২

কহিলা, "দেখহ ওই, সুষ্মা সুন্দরী॥ " ভিল পট-ব্যব্ধানে, ২

পট তুলি স্বমায়, ডাকিলা সেখানে ৷ করি পিডায় প্রণতি, ২ দাডিবিল মুষমা, সুষমা হ'লো অভি ।।

যেন মেৰে ঢাকা চাঁদ, ২

৪মাপতি হুদাকাশে, প্ৰকাশে আহলান ।।

যেন সংগ্ৰ গোৱে শোক, ২

নিদাগতে নিখ্যা ভাবি, সুখী হয় লোক ।।

৪মাপতি দে প্ৰকার, ২

এত সুখী হইল, ইয়তা নাহি ভার ।।

বাস্ত হ'য়ে জিজ্ঞাসিল, ২

"কহ গংকে! বিবরণ কিবা গ'টেছিল।। বিচারক করে ভারে, ২ "ব্রির ছও সব কথা, শুনাব ভোষাবে!।"

িপ্তর হও সদ কথা, শুনাব ভোষালে !।" আনভাৱ স্থায়ায় ২

णाका निना, उथा ग्रंड रावधान यात्र ।। (भटन स्वमा स्करो, २

স্বন্ধার বিবরণ, কছেন বিবরি।। ভনে ছিলা যে প্রকারে, ২

শরতের সহ তার, প্রণয় **স্থারে** ॥

্ হ'লে প্রণয় পাওন, ২ যে প্রকারে বিবাহের, পেয়েছে যতন।।

যে প্রকারে চেন্টা করি, ২ বিবাহে ব্যাহাত ভাবি, হয় দেশান্তরী ।। যে প্রকারে আসি পর্যে ২ ছাড়া ছাড়ী হয় দোঁছে, পডিয়া বিপথে ৷৷ যে প্রকারে আনি ভার. ২

গৃহেতে রাথেন, রাথে যেমন কন্যায়।। যে প্রকার ঘটনায়, ২

(स द्वाकात प्रकाश, २ सन्दर्भ माञ्चरप्रयो शक्तिस

শরতের স**ক্ষে দেখা, পরিচয় প**ায় চ জেমে করিয়া বর্ণন, ২

কহিলেন, রমাপতি, করিলা প্রবিধ

श्वनिकंशि डिठे कान्न, ३

কি কৰিবে রমপৈডি, ভাবিয়া না পায় ।। বিচারকের ক্লপায়, ২

ভারা-কন্য পেয়ে স্তব করিলা **ভাঁহা**র ।৷ পারে করে সুত্বরে,২

- এক বে হ'রেছে কাও, জানিব কি ক'রে গঃ জানি বিরজার **বরে**. ২

শরং নামেতে মুবা, **আদি বাদ করে।।** যুবা দেখিতে স্থন্দর, ২

क्र अनुक्रम खन, लाक-मत्नाहत ।।

ভারে কন্যানান ভরে, ২

বিরজা করেক বার, অনুরোধ করে।। যুবা না জানে আপন, ২

বিনা পরিচয়ে, কন্যা কে করে অর্পণ ।?

(महे (राष्ट्र कना) मात्न, २

অন্ত কইল, বিরজাও ভাই জানে।। কন্য দাল ব'সে ভার, ২

বিরজা একথা কড়, মোণে না জানায় ৷৷ শেষে এত ঘটিয়াছে, ২

জাজি **ওনিলাম লব, আপ্নার কাছে।।** বিচাৰক জিজাসিলা, ১

"এখন কেত্রা কি বা, ভাকিনা দেখিবা ।? ভাকি রম।প্রি কংখা

তিরখন (- পাজে কন্যা, না দিলেই না । কিছু বিষয় ব্যাপার, ২

জ্ঞাতি কুল-পিছ-নাম, জানিনা যুশার । ধেন জাতি যাওয়া কামে, ২

ক্ষেত্ৰ কৰিব পাকি, **হিন্তু**গানী **মানে**ই, য প্ৰাভ্যাৰৱে বিচাৰক, ২

কছিলা, "এ কামে আর, না ছও বাধক। যদি কন্যায় না চাহ; ২ •

চক্ষের দেখায় দেখি, কিরিমতে যাহ। যদি কন্যা চাহ ভবে, ২

বিধান দাওলো, পারে যাহা হয় হবে॥ ভ'ভে হবে এই পারে, ২

জাতি জাতি মিলিয়া, করিবে এক দ'রে।
তাতে কি শুয় তোমার ?২

আর কন্যা পুত্র নাই, অনুরোধ কার ।
অবশেষে ভেক লবে, ২
একঘরে ঘুটি লোকে, পূজা হ'রে রবে ॥"
মুদ্ধ কন্যার মারায়, ২
প্রাক্তিতে রমাপতি, শেষে দিলা সায় ॥

প্রেমিক বলিয়া, প্রেমের তরে।
বিচারক এই, যুক্তি করে।
হইলে আপান, যুক্তি এমন,
হ'ত কি ? সন্দেহ তার।
যায় দর্ঘ জাতি, কুলের লাগি,
জেনে গুনে হল, ছুংখের ভাগী।।
পানি সে সমাজে, ও প্রকার কায়ে,
কারবা প্রবৃতি ধার। ?

নানা দেশে নানা, লোকের স্থিতি।
সবাই মানব, বিভুর কৃতি।।
সমাজ কারণ, আপন আপন,
গোরব কেবা না চায় ?
ভারত সমাজে বিশেষ জাঁক।
এক-ধর্মী মাঝে, কড়ই থাক।।
যত থাক থাক, ভঙ্গে থাক থাক,
অহস্কার শোভা পায়।।

ধাক যথা তথা, গোঁড়ামী সার। ঘূণা পরস্পর মনে সবার।। ভিন্ন জাভি সনে, মেলেনা বভনে,

কেন ? গণা ছেতু ভার।

একধর্মী হেন, জালি বিচার।
পৃথক ধরম, যেন সবার।।
পশু-পক্ষীগণ পৃথক যেমন,
জাতি-ভেন সে প্রকার।।

অজ্ঞাতির মাঝে, কুলের রাচি। যার নাই শুনি, পায় সে ভীতি। কুলীনে অপরে, যেনানের ময়ে,

কুলীনে বিচারে মনে। যদি পাতবং, কুলীন হয়। অন্য গুণবান সমান নয়।। শক্ত ধিক্ ভায়, এরীভি-বধায়,

धिक् उथाकात জ्ञान ॥

ধর্মা, জ্বাভি, কুলে, গোঁড়া যে হয়।
পৃথিবীতে কভু, স্থা সে নয়।।
চৈডনা কেবল, বুখে এই গোল,
ভেক লওরা রীভি, করে।

চলিলে এরীতি, ভারত মাঝে। স্থবিধা হইত, অনেক কার্যে।। পার্যক্র ঘূচিয়া, একতা জন্মিয়া,

মুখী হ'তে। পরস্পরে ৪

বিভিন্ন জাভিতে, হ'লে প্রণয়। সুবিধঃ সুধুই, সে কথা নয়।। ভারত ভুবনে ধকতা বিহনে

নোষ যত সব যায় ! ধর্ম জাতি কুলে, গোঁটোমী ভরে । পরস্পর ধেষ, হিংলাদি করে !! একতার সুখ, হয়েছে বিমুখ,

পুনঃ পাওয়া যায় ভায়।।

चटना कारन, छनि कत्रदा दाघ। मानदा मानदा, हूँ रेटल दाय।। जक्ष कारता, विरम्भ-जमत्न,

জ্ঞান-লাভ, নাহি ঘটে।
স্থু জ্ঞান-লাভ, নহে জমণে।
উদ্যোগী, সাহসী, করয়ে মনে।
না করি জমণ, বাঁচা সে ষেমন,
মণ্ড ক বাঁচয়ে ঘটে।

বড় খেদ হয়, ভাই দে বলি। এই ধর্মা, জাভি, কুল, নকলি।। ছিলভ পূর্বেজে, এরণ ভাবেভে.

ব্যবহার কে ক্রিড দ বেষ ঘূণা-ভাব, ছিলনা এজ. ভাই পরস্পত্র, নাহায় পেড। থাকিডনা বনি, উদ্যোগী সাহসী,

रिमाम जिथ इकेछ।।

. इ. १५० हिल, त्मरे काइग । मत्रल हरें छ न्यांत्र मन ।। गत्म वल हरें त, भातीतिक वत्न.

কদাপি বঞ্চিত হয় ? তক্তা, শরীর, মনের বলে। ভারত সম কে, ছিল ভূতলে ?। সকল ভূবন, করেছে শাসনং

ভারত এক সময় ॥

হায়রে সে ক্রাল, কোথায় গোল। কি কালের পর, কি কাল এল।। সেই সে ভারত, হ'য়ে পদানত, বিদেশির সেবা করে? আর সে ভারত, রয়ুও নাই।
ভার সে কেরিব পাওব নাই।।
রণজিত ছিল, সে দিন মরিল,
আর কে বা দুংগ হরে।

পুরুষ বংশে, কাপুরুষ মবে।
ভারতি ইলারা, সাধীন হবে। ?
ভা আর হয় না, বা আছে পর না,
লালায়িত হ'লে দাস!
নাসত্বে বাহারা, সজোষ মানে।
হারতি বাহারা, ভারা কি ভানে গা
বহর সম্ভবে, আরো হীন হবে,
াভা হ'তে পারে ঘাস।।

রমাপতি করি, ভারতে বাস।
জাতি ভাজিবারে করিল আশ!।
বিত্তি এ পণ কন্যার করিণ,
তবু সে সাহসী হয়।
যে কারণে জাতি, ভাজিতে চায়।
আরো স্বিশেষ, কারণ পায়।।
অবশ্য এ জন, সুক্টিন পণ,
পুরিতে করেনা ভয়।।

ক্রমেতে বিশেষ কারণ তরে। আধীনতা-স্থ ভাবনা ক'রে।। আধীনতা লাগি, হ'য়ে ছঃখ-ভাগী,

প্রাণ-পণ সুক্ঠিন। রমাপতি সম, হবে যে জন। তগগোনা ভরিবে, তাহার মন।! আপেন হইতে, প্রাণ-পণ দিতে.

চাবে হবে ছেন দিন।।

২ড়ই ভরসা, হতেছে মনে। ক্রমেতে এদেশী যভেক জনে।। ।গাঁডামী ভঃজিতে, একডা লভিতে,

পারা অসম্ভব নয়। কি ক্ষণে স্থমা, প্রেম করিল। %মাপতি, ভেক লভে, চাহিল।। ভারুকের মনে, সেই ক্লে কারণে.

पूर्वाणा स्याणा द्या।

বিবাহে সম্মতি, দিল রমাপতি, ভালি হর্ষ-মতি, স্বম!। হর্ষ সে কেমন, হ'লোনা বর্ণন, ভোবে সারা মন, উপমা।

বিচারক ভায়, পরিভোষ পায়, শরতে তথায়, তাকিল। उद्यालिक मान, खालार्थ कातात একতে ত্রজনে, রাখিল ১ मत्र सूखन निक- यानाशंन, করিতে এখন, জ'নিত। হ'লে পরিচয়, শাক্ত তৃষ্টী রয়, রমাপতি হয়, মোহিভ ৷ কোহে রমাপাতি, স্বস্থা যেমতি, শরতে ভেম্ভি, দেখিল। हिल्ला मखान, मखान जयान. आन्द्रब छान, शहिना। জ্ঞানে এই কথা, ঘোষে যথা ভথা, পুৰ্মার মাতা, শুনিল। गांदेश श्रेनक, यथा विषातक, ডাকিয়া কাহক, প্রেরিল 1 শরভের সহ, ছইবে বিবাহ, नाहिक मत्स्व. लाशांट । विश्वाम बहेल, माखाय छेनिल, সুষমা বসিল, দোলাতে। বিচারের পতি, করে অনুমতি, वाहरकता शक्ति कतिल :

শরৎ পশ্চাতে, ছাতা ছতী হাতে. রমাপতি সাথে, চলিল। ক্রেশান্তরে হায়, দেখিবারে পার. कहरगांत और, बाधारम । मधात भएम. विशिष्ट सीरया वौद्र कद्र छन्, स्मशास्त्र। आकारत मराहे. काल-माथा गाई ভক হেন পাই, দেখিতে ৷ भामत बद्रम. कर्कम शहर. পতেনি তেখন, জাঁথিতে !৷ নাঠিয়া কামান, বাহু ছুইখান, নংগ্রি সমান, ছলিছে ! 2 रिंड वि किएडम! महम एश (इस. টাভ হ'লে যেন, পডিছে !! एंक छात्र हत, त्रिथ भाग हर. ক্তম লোহনয়, যেমতিন पांडिशां ह लाल. मश्म कहाल. क्रिक यान कालमुद्रांख ।। পতাপরা বেশ, বাঁকা বাঁধা কেশ, নাতি ভয়লেশ, কাহারে ৷ পিঠে বাঁধা ঢাল. চগ্রালের পাল, लाठि कहताल. बांकारत ।

कुछोश मर्ग ।

लिदिका (निशिया, मकत्न मिलिया. েলা হাকারিয়া, ধাইয়া : 'योज (काथा प्यात्त वाहल जाजियात. থের মাব্যার, করিলা : पुर्वत (यहाँहा, एत्य हर मांगा ভূলি কেলে ভারা, ফুকারে। শ্রং বেশিক, ভাকাতের গেড়িক, रिल्टन व्यक्तिल. मयादा ह 'আন্তে কিছুবল, ভাবে কি প্রবল, ভাকাতের বল, সন্থিব ? किन्दू पति छ।", पाकिएक भनाग, चौक्रव गर्भान, शक्रिन : नाहि गडकार, कतित याजन, र: १वक क्षीतम, ब्राटमा । ভাকাতে মারিবে, সুষমা কাঁদিৰে, यख्या मिहिंदव, मदवना 1" हेड्ड विठात्रिज्ञां, मान्म कहिज्ञां, কোমর কলিয়া, বাঁথিল। अकलारंक शिहा, अक्टा प्रतिहा, लाठि किनारेशा. लहेल म মরিরা আকারে, যারে পার ভারে, . (बर्ग लांहियारत, अमनि !

श्वन वाह्याद्य, अलियशू माह्य, भारत ख कार्य, एउम्रानि 🛭 मस्त्रता कथिशा, छातिकिक निशा, শহতে বেডিয়া, মরিল। স্থাক পেছে এবে, কাছারেরা সবে, ভূলিফেলি ভবে, চুটিল ॥ বিচারক মুখা, বেগে যায় ভেখা, रिशामित कथा, कविटा । एर्प्र नमालाजि, कमाति नाकाहि, লুকাৰ ৰক্পতি, ডুলিডে 🛚 ए (काएडव) (दला, भारत धारकता, ें उटल कि (छना, मंगगदत) প্রাহারের ঘায়, পাড়িল ধরার, চেভনা হারটে, সমরে 🍴 ন'রেছে ভাবিয়া, শরতে ছাড়িয়া. ভাকাতেরা গিয়া- ভুরিভে ভুলি ভূলি নিল, বাগানে পশিলং 🚬 বেগেতে লাগিল, ছুটিভে।

ছুইদণ্ড গাড প্রায়, শরং চেডনা পায়, চারিদেশে ফিরি চায়, নাছি দেখে কারে রে নাছি দেখে কারে!

ভাবে, অসম্ভব একি কেনে চিদ্ধ নাহি দেখি, দেখা কি হ'লো, দেকি ! কি করিল ভারেবে,

্কি করিল ভারে স মারিলে ধাকিত চিচ্চ, ছুজ্নে করিয়া ছিন, এবি লায়ে যাওয়া ভিন্ন, দুকোতি দে নয় রে:

ভাকাতি সে নয়।" দুট নাহি হয় ভাবে, প্লাৱে লাচ কাইছি ব্যাপ্তি শিবিকার, মাথে গুরু ব্যাথ

बार्क्स कथ इस ।

ভারতে সন্দেহ হ'লে. 'ভাকা'ভ ভাগ কেবল, বমাগতি করে ছল, এরগ প্রকার রে:

এরপ একার রে। বিচারকে বুঝানারে, স্বমারে ভুলাবারে, ডাকাতে সামারে মারে, করিবে প্রচার রে,

করিবে ওচরে। ইচা যদি সচ্য সে, মোর প্রাণে মহাভয়, দেখিলে করিবে কর, প্রেরি গুপ্ত-চরে রে,

প্রেরি গুপ্ত-চরে। বুনি প্রাণ-প্রতিমায়, পুনঃ প্রাপ্তি হ'লো দায়, নিৰুপার কি উপায়, করিব বা পরে রে,

कतिय दा भारत । किन्तु जानि जात यम, मिरवमा व्यरमारत मन, रिष्य अभिद्रत थान, ज्यामात्र जालादा (द, ज्यामात्र जालादा ।

কেম ভাবি নিৰুপায়, গোপনে মিলিপে দেয়, সে ক্ষিয়ে সমুপায়, মৰ পায় যাবে বে,

সৰ দান যাবে !! কিন্তা নাই পালটিয়া, বিচাৰকে কৰি গিলা: ন্যু-লোগ্ডা নিদ্ধারিয়া, দিবে লেই জন রে.

ি দেব দেই জন।' দেব-যুক্তি অনুসারে, ফিবিয়াছে যাইবাকে মন অনুস্কৃষ্টি ভারে কলিল বারণ রে.

করিল বা**রণ ।** মন বলে, "একরার, **ডফ্ লই স্**র্যার, বাগানের মানে ভার, ডফু যদি হয় বে.

তদ্ধ যদি হয়।"
যে নিগে ডাকাড গণ, করিয়াছে পলায়ন গে দিগে না ল'য়ে মন, অন-ক্ষিয়ে লয় রে-অনা দিগে লয়।

কিছু দূর চলিবায়, বাগান বিরাম পায়, পরে দেখে মক-প্রায়, কান্তার ভীবণ রে,

কাস্তার ভীষণ। সেই স্থানে পুরোভাগে, হঠাৎ ময়নে লাগে, টিহ্নিড রক্তের রাগে, নারীর বসন রে, নরীর বসন । প'তে পায় পুনর্জার, স্থনার যে প্রকার-স্থাঠন মেখলাক, মেখলা তেমন রে

মেখনা তেমন। এই চিহ্ন দৰশনে, নিশ্চয় করিল মনে, প্ৰস্থিয়তেই দক্ষ্যাংশ, প্ৰিয়ার জীবন জে.

প্রিয়ার জীবন।। চুলিসই মৃদ কার, ভাসারে দিয়া গঞ্জা প্রায়েছে কে ফোসায়, মু**উ** দ্বর শ্রার

একসালোভিয় সাল, ফলিবে সন্দেহস্থা, ব্যাপতি ক্ষিতি ভঁল, ভা**জেতে** এখন রে.

प्रके मञ्चात्र :

ভাজেছে এখন।। চোরাড় কাহার সবে, পালান সম্ভবে ভবে, ভারা কি বিপাদে রবে, পারের লাগিয়া রে,

ারের লাগিরা ? নোর লাগে একি দায়, হারাইয়া প্রেমদায়, এদালাম এড দায়, কি কাষ বাঁচিয়া রে.

কি কাষ বাঁচিয়া।। ওরে বিধি কি করিলি, ক্ষেন ছেন ছুংখ দিলি, মোর ভাগো লিখেছিলি, এতই লিখন রে, এতই লিখন! কে আমি জানিনা ভাষা, নাহি কেই বলে আহঃ ভাপনার চিল হাহা, ফ্রাল এখন রে

ফুরাল এখন। জাঞ্জীবন সহি ছুখে, ভারু হ্রথ অভিযুখে, ভুলেও না দেখি স্থে, কোখায় কেমন রে.

নাছি চাতি জনারে, খে. বাঞা ছিল এই স্লাধে নিখি প্রিয়া-চন্দ্র-মুখে, মুড়ার জীবন (র.

সে আশা ফুবাল আজ, মহকে পাচল ব'ছ. বাজেরো এমন কান, অঠাল মাশিল রে,

অস্ত্রাঞ্চ নিশিল। মহিতে প্রাণ কি করে, শমন গ্রমন জারে, কেন মের প্রিয়া ছারে, এ বাদ সাধিল রে,

ও বাদ সাধিল।।

শমন লয়েছে যেথা, ওখনো কাঁওয়ি কেথা।

ফিয়ে প্রিয়ে! হুটো কথা, ক'য়ে ফিয়ে খাঁও কে

ক'য়ে কিরে যাও ৷

ওপ্রিরে, যাওছে ব'লে, ভুমি ছেড়ে গেলে চ'লে,
নাম'লে বাঁচি কি হ'লে, কিহা সঙ্গে নাওরে,

কিয়া সঙ্গে নাও :! বাহারে ভাল বাসিতে, সে ডাকে নার আসিতে, আর তুমি এ মহীতে, কড় না আসিবে রে. ু কড়ু না আদিবে!

ত্রিজ্যার মৃত্যু হ'লে, সে ছুঃখ যায়না ম'লে ঠিগিড়া বোঝেন। ব'লে, কভই কাঁদিবে রে.

কতই কঁ।বিবে !

েৰে বুক কেটেযয়ে, দখ্যৰ লাটিৰ স্থায়-প্ৰাণ ভাজেছ হায়, **কত কট** সহিবে,

कड क्छे महि !

দে ব্যথায় প্রাণ করে, সহিয়াছ, দে কাথার ৬৩ই ব্যাকুলতায়, গেছে অঞ্চ বহিরেন

গেছে অপ্রু বৃহি॥ দেখিয়াচ্ অস্ক্রকার, করিয়াছ হাহাকার পায়ে ধ'রে যে সবার, কতই কেঁদেছ রে,

क उड़े (कें एन ह !

কাহা মরি সে সময়, কি দশা তুরিতে হুর, 🖓 স্মরিতে জীবনু দ্রু তুমি তা ভূগেছ রে,

ইমি ভা ভুগেছ !!

মরা ইটি বেদি ছখ, ভুগিরাছ যে অসুখ, ছখ কি ভোমারি মুখ, চেয়ে ব'দে ছিল রে,

(চয়ে व'रम ছिल?

কি কপাল লয়ে সঙ্গে, জন্ম ছিলে এই বক্ষে, বিধাতাশ্বি কোন অঙ্কে, মুখ না লিখিল ব্লে,

সুখ না নিখিল !

্ডোমার মৃত্যুর মূল, আমি, ভার নাহি ভুল, কি জুর্ভাগ্য আমি, ভুল, নাবিক ভুবনে রে.

नाहिक जुरान।

क्ति व बंडागा जात, जालक्ष्यतिहाल घरन क्वल भार कोरण, शहारल जीतन हर,

হারালে জীবনে !।

অতে পাপ দত্মগণ ! পাশাণ ভোদের মন. কেমনে নারী ভেমন, নিবন করিলি জে

निधम कहिलि ?

त्तरण ठक्क मन ४'रत, त्म कुछ्य-करल्बरतः निक्तरत्र (कमन क'रत, लाठि প्रजातिकि रत

नांति श्रेष्ठातिनि ।?

এ সুখ সংহন। আর, ভাচ রূপ, গুণ, যার, ভার মৃত্যু এ প্রকার, নৃশংসের করে রে,

नुभारमात करत 🕶 ् ५

नदनी छ यादि गोला जा नाइ'रत शेर्ट्स ने ला. नामिल कुकूद नोला! श्वरत याहे में रह हो. े

(थए याहे म'रत ॥

অনাভাত পুশা, তায়, করে ধরিয়াছি প্রায়, এমন সমরে হায়, ঝড়ে উড়াইল রে,

करण छेजाहेल।

ত্তীয় সর্গ।

পার্বার নহেক বাহা, হাতে এলে ওড়ে ভাহান প্রবীন কি কথা আহা, প্রমাণ মিলিল রে,

প্রমাণ মিলিল !!

জাব না পাইব ভায়, ভার বস্তু নেখলায়. ফদয়ে ধরিব আয় মেখলা বসন রে.

মেখন: বসন !"

িহঃ বলি তুলি ল'য়ে, মেখলা বসম দয়ে: বতমে রাখি ঋদয়ে, করিল ক্রেমন রে,

করিল কেন্দ্র।

কঁনিতে কাঁনিতে যায়, চক্ষু পদ যেগাং।১. নিশ্চয় নাকি কোথায়, যা**ইবে** এখন য়ে,

্যাইবৈ এখন |

ঐই ভাবে কিছু দিন, শোকেতে উন্মাদ দীন, হ'য়ে ভামে রাত্তি দিন, নাহি নিবারণ রে,

ৰাতি নিবারণ।

চতুথ সগ।

প্রথম প্রথম, শোকের বিক্রম, বঙই বিনম হ'সে উঠে !

यन इरेट्स यात, भागत्नत श्रातः, त्यथा (मथा भागः

। राजू राजू

যাত দিন যায়, খোক ক্লৈ পাব, নিয়া শ্যতায়,

পেলে পরে ৷

(म अश्रीत मन. देशहळ शांत्रण कतिया आर्थन.

ন্তির করে 🗈

भन्ने**९ क्रांगर**छ, दुकिल मानाएक, "केर्राजराछ केर्निएक

धनि मति।

সুহয়া আ্যার, আদিবেনা আর, শ্মন আগার,

পরি হরি॥"

इंडा विद्यादिल, त्यांक नियादिल, प्रविदेश इंडेल,

এकच्याम ।

শ্বির করে বাস, শোভার নিবাস, প্রকৃতিরো বিশ্ব

इम्न (महे म्हान, त्कान धनवान, त्लारकत छेन्।।न.

श्र-शार्भ।

٨.

मुन्दत अग्रन, श्थन उथन, तिथि श्रींग ग्रन.

सूर्थ खारम ।

माहि (इस क्ल, (मथा जलेजुल, गएम मर्माकुल,

एक मद्द !

वल मधुज्जल, ७क्षांत मम्ब, मधु ममोज्ज.

मूर्ध लास

অভি পরিপাদী, যত পুষ্পবাদী, যাতে সাঞ্চে যেটী ভাই সেধা ৷

এভিপুস্থনে, কৃত-প্র<mark>ত্রবণে, জল ক</mark>রি মনে, ভোষে **কে**খা।

শ্রণালীসকলে, সেই জল চলে, প্রয়োজন জলে, বেথা নেথা।

স সোভা দেখিতে, আরামে ভ্রমিতে, কিবা **প্রণালীতে**, পথ সে**থা।**

চতুপথ যেথা, সাজাইয়া লভা, করিয়াছে সেখা,

मुक्तपत्न ।

কুঞ্জমানে বেটা অভি পরিপাটা, শরতের সেটা,

निल यत्न ॥

চাদার ভিতরে, থাকি কাল হরে, আরো শোভা ধ'রে; উপবান।

যেন শ্রত্পতির ধরিরা মুরতির করিল আগতির ক্লেরনে।

ঘটনা ক্রেন্ডে, দেই স্থয়েতে, মল্য়া নিলেডে₎ ভর ক'রে।

বসরু আইল, শীত পদাইল, প্রকৃতি বদিশ, শোভা ধরে :

ও ঘটনা হেরে, ভাবি এ ভাচেব্রে, গ্রের শ্রন্তেত। সেই খানে ।

প্রাকৃতি সোধালে, আধারি উপজিল, বসম্ আইন কুরুমানে ো

খতুরাজ বসস্ক, করিলা আগ্রন।
গাল দার হ লো গায় দিশির-লাসন ।
নন্দের রাজা হ'লে- কি খুখ প্রজার।
নাসবি আমোনে পাই, প্রমাণ ভারতি ।
দূরে থাক লোক, নেখ খভাবে চাহিয়া।
নাহি মেলে আনন্দ, কোঝার নির্বিয়া।
গেনে দেখ এখন, প্রায়ন্তি ধ্রে লোভা।
আর কবে ধরে শোভা, হেন মনৈ লোভো

যে যথম হয় অধীশার, তাহার বিভৃতি অত্তর্ধ।

ইক্ষা হয় যেই মড. সম্পান বাড়ায় ডঙ,

কৃতন কৃতন প্রিয়-কর।

বিশেষতঃ বস্তু রাজন, ঋতুর সমাজে মহীক্ষ

ভূষিৰে তাহার মন, শিশিরের কি এমন, जुक्तरभर चार्ट विज्ञुष्त ।? াই ছেতু ঋতুরাজ, অধিকারে করিতে স্থদাঞ্ছ ! আহরিয়া অভাবেরে, নগ্ন করি স্বভাবেরে,

ষারোপিলা অভিযত সাজ। বিরহ হইলে অস্ত্ররিত, যুবতী হইয়া হর্ষিত। বিরচয় অঙ্গরাগ, ভাবি প্রিয়-অনুরাগ,

তেমতি প্ৰকৃতি বিভূবিত 🛭 আহা কিয়া দাজিল স্কার, গুলা-লডা ডক্ত-কলেবর। क्टरा नदीन नरल, क्टर नद्यत्य कला.

হয় শোভাষয় মনোহর। যেন ভারা ভেটিতে রাজন, ধরিয়াছে ভেটের **ভাজন।** नां कि इथिक गत्न, श्रियन्ताक-रामामतन, व्यारमानिशा, नकल जूवन !।

ফুলবনে লাগে ভলছ্ল, ফুল ফুল অথবা মুকুল। আছে,মার মে বিভব, উল্লাসে সাজায় সব,

्र वैकाखारमध्य नाम जून ॥ বিটপীর ঘন-ছায়া-তলে সমাকুল ছিন্ন ফুলদলে। যেন চক্রাতপ তলে, লডা-বদু কুতৃহলে, हड़ारेल लाख स्मक्त ॥

चिद्धं राज श्रूरे मानवः (क वा वत्ता।

কে, না করে সম্পাদের মান, কে না দেয় প্রত্যাশার স্থান্ অজ্ঞান জীনের দেখ দেই ভাবে চলে। रथा तिक्टांशारी लोक श्रे डूंत महरू । 🗡 জানাইতে ক'র্যোচে তুলন, কভনতে নেখায় কোশন मिड्रेग्ड मधुलानि, याङ श्रीसांकार । वानन्ति-शाहक एक वमन्त मन्द्र । মকরদ্ধে প্রায়ন্ত স্থানে, বিবিত্তিতে গুণ গুণ ক্ষে. [©]জালিম বিষয়াঞ্গ, বিরহীর মনে। কোকিল কুলয়ে, ২ংক সকলের মুন। किया, त्म मधुत-तमाकत. (यन भूतातित निक्त-कत, जूनारेश कनरह, यका क भागीना : গহর-বিবন্ধ হ'তে নিঃসরে প্রন ৷ শক হয় কেমন ক্ষর, বাদাকর গহরর-বিবর, যুদক বাজায় যেন, অযুত-নিজন। नृष्णकती, मृज्यकत, यक्षनी, यक्षन। রদে তথ্যসা উভয়েতে, নৃত্যককে রক্ষেত্র মনেতে আহা মরি কি স্থকর, নাজিল ভুখনী আইল বসম্ভরাজ, সামস্তসহিত। দেখি শোভাষয় পৃথীতল, স্থাে দিজ করে কলকল, যেন স্তুতি করে বন্দি হ'য়ে অবহিত।

व्यविद्रांक मगांगल, विश्वित्रा व्यशीन यक,

ভাভাভাড়ী করি যথা গৱে ন্যু ভাব ! তমতি ঋতুর রাজে, দেখি ধরণীর মাঝে, মনিলাদি বদলিল, পূর্কের স্বভাব !। গ**িল** এমন থারা, বেন ভারা নহে ভারা, क्रीन इग्न श्रीतराई, धना क माहेल। **ইয়ত আ**হিল হারা, নিনীত হ**ইল** ভারা, অন্ত্রের শিখিনচা, কোপা লুকাইল।। যে অনিল পরশনে, বাঁচিব হ'তে। না মনে, জড়সভ হ'তে। এক কাঁপিভ হানয়। সে যেন অস্ভ্রয়, স্থা হ'তে প্রেমলৈর, এমন যে হবে, মনে জ'ভোনা উদয় 🛭 खात जात जित्नारे, रेका रह म**र्मानारे,** সুনির্মান সারোবরে করি সন্তরণ (ার অযে হ'তো যনে, গ'লেযাব পারশনে, নে অভাব কোথাত্ত সে, করিল গোপন # কিন্তু কিবা চমৰ্থকায়, কুটিল স্বভাব যার, দে ভাব ভাজিতে সেই, পারেনা কথন। হউক সজ্জন-সঙ্গ, ত্র্থাপি নিয়ম ভঙ্গ, করেনা ছাড়েনা ক্রে, স্বভাব আপন 🛭 যদি মেঘ বর্ষে নীর, ধূলি নাশে পৃথিবীর, সিগ্ধ হয় দেশ, যায় রোগাদির ভয়। উর্বরভা ভূমি ধরে, শস্যের প্রস্ব করে,

কিন্তু এবে মেখাগম কলচিং হয় !!

বদল আইল, সুথিত হুইল, व्यविकास मान्नेका स्ट्रांक गाउ। स्थी विद्रहित सन, नाकुल धर्म, তার দুঃধ বিগুণিত হ'য়ে করে ছুখী। একে উপৰন, ভাষাতে এখন, বিসম্ভের সমাগমে, রুখণীয় অভি! ভাষা নিয়বিয়া, উঠে উথলিয়া, শরতের চাগা শোক, নুতন যেমডি 🛚 वृविशांष्ट्र भन, जनम भडन, হারায়েছে তুষমা, পাবেনা আর ভার ভার। মেখলা বসন, সেই সে এখন, ইহা ভাবি ভাহা দেখি, শোকাগ্রি নিভায়।। শরৎ যেমন, বুঝাইডে মন, ध्यतमञ्ज भोडेशाट्ड. (यथका वस्त त विज्ञही य खन. महे म अमन, কোন আলম্বনে, বুঝাইয়া রাখে মন !৷ উপবন-পাদে, ধনির আবাসে, शांक (कांन वित्रहिनी नवीन-वर्म । यत खांत्र यन, इस डेठां हेन, चात्रीरमत (भाषा पिथि, करत मरनावन ।।

আইলে বসন্ত, মদন ছুরন্ত, ভারে একাকিনী পেয়ে, করে অভ্যাহার। এই অভ্যাচারে, বঁচোয় কে ভারে, ेर्दा दक्षक (गरे, अञ्चलन जात्र । বিবাহের পারে, গ্লেছে স্থানাস্ত্রে, গৃহিণী মুধভা, পতি, তথাপি ফেরেনা। কি করে অবলা, তথাপি চথলা, দ্বির, ছ'য়ে কুলে গাকে, অকুলে চলেমা 🍽 শার ভা বেঝেনা, অভাব ছাড়েনা, জালাভন করে ভারে, হখন তথ্য ! আরাম শোভায়, নিভাত জ্বালায়, হয় নাই বদজের, উদয় যখন ।; বসন্ত এসেছে, সে ভাব ফিরেছে, বস্তু যে মন্মের অতি অন্তর্জা। শোভার ভবন, সেই উপবন, নাহিক তেমন পেয়ে, বসক্তের সঙ্গ ।। চপুলা একণে, সপ্তোষিতে মনে, বাভায়নে বিস, উপবনে যেই দেখে। মনের আগুণ, বাড়য়ে দ্বিগুণ, বু বিতে পারেনা, কে, বাড়ায় কোথা থেকে ৷ যুড়াবার আশে, মলয়-বাতাসে, অঙ্গ খুলেদিলে মন, উড়েযেতে চায়।

र'ए अनामन. कतिल खंबन, অলি-ভঙ্গ-রব, মন আয়ো মেতে যায় !৷ नाही नह नह राज्ये वा मह তাহে হন মত, গোল, হিতাহিত জান ভবু রামা ভাল, অনেক বুকার, চুধের পিগাসা, ঘোলে, করে কি প্রস্থান ।। शास्त्रवह मन, मार्ट औरतीकान, একারার বিলম্ভ ভাবি, সাঁথি বাত হয় ! अंदि शहा हाह, यार्कि एवा शीत्र. दिमिश्च भात्रथ-होतः, निकुछ-निवास ॥ শরতে দেখিয়া, উঠে শিহ্ডিয়া भारत लाद्य, " जारा महि, देहांत कि तेरी। অনেক দেখেছি, অনেক ওলেছি, (तिशिनाई छनिनाई, देशांत यत्रें ॥ ভোজিয়া বাশরী, গোরা রূপে ছরিন निवृक्ष-विहाती वृति। बादीत श्राहर (रथा दाधा कहे, नाहि आंग्री वहे, क्षांनिमा काहात जना, धशान तरहारह। চাহে বা কাহায়, মোরে যদি চায়, আমি যে রয়েছি হেথা, জানান উচিড"। ইছা ভাবি মনে, বদি বাভায়নে, করে রঙ্গ, করে রঙ্গ, যেমন ভডিত।।

কভ বা জাপন, করয় গোপন, কভু প্রকাশয় অন্তে, কপার্ট খুলিয়া। কড় মধুয়ারে, ডাকন অপারে, कि हूर छ रे भारत, ना मिसिल हो दिया । हि खिल उधम, ' क्रांस ७ जम, স্থাক্ত আক্র্যুণ নাড়েন। জ্যাপ

অস্পরিলাহে বাঞ্চা, দেখিতে কি রস্থান श्विक्ष तार्थ, कम छन्न धार्क ? कार दिएकियो १९८५, स्मग्न वर्ग्याला । রতিঃ ভরেতে, মাকে অলফোলে ভি সাংলা দিয় কি, ভাবিলা নোচ দ্বাৰা " ন ल्मा खाइर वस, " यमभ असह, কাম-রিণ্ড আদিয়ংছে, কাম বিমাশিতে। खामाइन डिलि, यान विविद्यो, ম রেও মধ্রশি কাম, হর-কোপাগ্রিতে ৷৷ থৈয়েক এ জন, মনোমত ধন, নাতিনীজায়াই প্রায়, অভাবের নয়। মনের কথায়, কহিগে উছায়, যাচিয়া যৌবন দিলে লবেনা কি হয়, গু गानुशक वर्षे, थाकिल निकर्षे, মৃত গলে অনলে, অনল মৃতে বাডে।

দেখিনা কি হয়, যিলিয়া উভয়,
ভামেছি সংগর্ম-গ্রুণ, কারেও না ছাড়ে।।
ভবে হদি ঘটে, যিলন সকটে,
পরাজিতে নাপারিয়া, হই পরাজিত—
হছুক্তির ভাবে, হ'লি পুনঃ ভাবে,
"ভাতেও জিভিক, নম সম হারি জিড়"।।
ভমত ভাবিয়া, দেখিল চ, হিয়া,
লিনমণি অস্তাচলে, হাত হায় প্রায় ।
বিশ ভূমা ধরে, হ'তে শোভা করে,
একে মুনি-মনোহ্রা, সজ্জা পুনঃ ভার।।

নিরখিয়। মুকুরে, বিনাইল চিকুরে,
হুটী বেণী পঢ়িল হুধারে।
চাঁদে চূড়া পরতে, কত শোভে দেখা'তে,
সিঁভি পরে ললাট মাঝারে।।
সৌন্ধারে সন্ত, চক্রমাথা পদ্য,
মুখখানি করে পরিকার।
ইন্টাবর-বিদলে, নাচে ভাবি কুশলে,
হুটি ভূক ভারার আকার।।
পদ্য-বন্ধু-ছুটাতে, শোভে পদ্য ঘটাতে,
দেখাইল কুওলে ভেমভি।
শোভা হবে ভাবিল, গলে চিক পরিল,

744

সমবৰ্ণে ক্ষুবিলনা জ্যোতিঃ।। চন্দ্ৰ স্থা মুপাৰে, উজলিতে আকালে, হালিগাঁথা ভারাও কি পারে?। दिह्ह्यून प्रधारतः मूकामाला मांबारतः ৯ভাই ভাবি বস্ত্রে ঢাকে ভারে।। ভুজে ভূষা পরিয়া, মনে ভাবে দেখিয়া, ভূজস্কু ভূষায় বড় সাজে। অবসর বুঝিয়া, বায় ধনী চলিয়া, যোড়ামল ৰমূৰম বা**জে** ।। - ' অস্তে যায় ভাস্কর, মুদিতেছে পুফর, क्रमुनिनी कुछि धकात्माछ । अलिशात (पथिया, क्यांनेनी आदिया, **हु** है याद वशुर लोर ७८७ ॥ ভাবুকেরা দেখিত, মনে মনে ভাবিত, रूत-गांन एक्सन रामना । সহচর এলেছি, পাছে খার আসিছে, शिष्क इत्स भारतत ननना ।! किशा (यन हर्णनां, न्युत्र-भारतं विकला, निर्दाप्तिः, अञ्चत-(वप्राम । চলিরাছে সত্তর, ভাবিয়া প্রকেশ্র, স্মারহর, বসিয়া বিজ্ঞানে !! পায়নাক দর্শন, করিতেছে স্পর্ণন,

গন্ধবহ সুখিত হইয়া ৷ यम यस दक्षित, श्रीत्यल याथिया. ভোৱে-ভারে, জাতিথা করিয়া মখ বঞ্চ শূপ শিলা, কর পদ বাদিতা, ইংল গলে, করিল মাননা। মধুকর শুভারে পিক কল কুহারে. জাৱে দেখি, সাবে স্থানিসনা <u>ও</u> ুঁকাৰ হ'তে চলিল, প্ৰাণে নাহি নহিল, कर्णकीराच वक्त मानि भएत। (म वांधा तम सार्यस्थाः छेशवम छोड्निः). হাঁকাপথে, অভয়াল কংড !: असराता वंद्रमा, त्य वा ग्रेडि द्रांद्रमा। বলু ৰূপে, বিজয় ঘটায় ! সে কুঞ্জ কে ভুলাবে : মনে পথ চিনাবে. সে যে আগে, এসেতে ভথার ১ ध बाधाम कि इत्व (इंडिटेंगरें के किया রাধা যবে এজ ছাডি বাসে।

টানি নিত, অনুৱাগ-পাশে।।
জ্ঞত-গতি আদিয়া, শরতেরে দেখিয়া।
চপলা সচঞ্চলা ছইল।
কি কেশিল কবিবে, সে ভাহাঁতে মজিবে,

কত বাধা বাধিত, ফিরাইতে নারিত,

যনে মনে, ভাবিতে লাগিল।। পুরে: ভাগে অ'দিল মৃত্ মৃত্ কাদিল, धीका शिन, ऋर्पत गापुती। ্রিকে বেলি ভাষারে, শরৎ এ বি**চারে**ন 📞 'বিধির কি: প্রচনা-চাতুরী 🍴 " তপ্ৰাৰ সুৰ্যা, পাৰে কোণা সুষ্যা, उसु इस इहिल ए कर्फ । জনা কেছ দেখিলে এই রূপ্-সলিলে, ভূবে ফেড, কীথি নৰ সায়ত ।। 🕐 মুঘাইলা "ললনে ! আশা কোন কলেৰে " াড়া হয় করে মলোচনা ! া উলাদীৰ বেনো, বিজন প্ৰাদেশ, कि ऐंक्टिन, युवाएंड अंगमा ॥" "নাফি কোন ইন্ডা, এসেদি হদিছো, " কভিলেন, শর্ব এ ভাষা। "এ খৌরুন সুক্ষায়, এ ভারে কি আশায়ে ?" श्रुनः बनो कहिल जिल्हामा ।। . যুবা দিল উত্তর, "ভ্রমি চির-বাসর, বিধি-লিপি। খণ্ডন কে করে। " / ऋयननो शामिल, शहिशाम **ভा**षिल, ् "মনুকি বলেনা, থাক ঘরে নৈ

রুঝি ভাগ্য ভেকেছে, গৃহ-শূন্ হ'য়েছে,

দেই হেডু, হ'রেছ উনাদী।
নহ ছুমি কামিনী, চিরত্বংখতাগিনী,
কোন্ ছুখে, হবে অবিলাদী।
তুমি গুলী হইলে, জনরব ছুটিলে,

কভ বালা বরিতে যাচিবে। ' নহ র্ছ কুর্প, যুবা রূপে অনুপ,

ুহ্ভাগিনী, গোষারে পাইবে ॥" এং কথা কহিতে, চপলার জাথিতেঃ

ভালবাসা চিহ্ন প্রকাশে। শরুতের ভাবনা, ''যে দেখি ও ললনা.

थ्वगांत, द्वान थां छिनारन !।"

শক্তিত হইল, ফিরি ফিরি চাহিল,

ধনী ভাষা, বিলাস ভাবিল। চপলার এ কাবে, ঘূণা দ্বিজ সমাজে,

ছিছি বলি, কুলায়ে পশিল। সন্ধ্যারে না সহিল, রাগে নাম হুইস,

শশি-কলা, হাসি উদ্ধে চলে ৷ লজ্জা পেয়ে নলিমী, হ'য়ে পড়ে মলিনী,

কুমুদিনী, হাসে বসি জলে। উপবন-প্রহরী, দূরে থাকি নেহারি,

কহে আসি, গৃহপতি-পাশে। প্রহরী যে দেখিল, ধনী ভাছা বুরিল,

লভা হ'তে, চলে ফিরি থানে ঃ

সহ্যা প্রস্থান করিল। কৈ হ'লো কি হ'লো ব'লে, শৃগলে ডাকিল। • দেব-অল্লো-ভিডার : १८६ र हो। करवात, मृहक, के सह है। मत्ति स्ता क इ दार । গৌভ-ব'ল - <mark>আংমে</mark>গনেডে, হইল সগন ⊭ ়ী, খন্ত লে,কলন্ত প্ৰাস্থা কেই খাডো লোখ, সেই প্রতার বা খারা कल्लाहे अथ (स्ट्रा ! ভোনে পাডার মুদ, উপন্যাদ ব'লে 🖠 मण्डरण कारना कारण। क्षक (लाभ (क्ष पुर्वि) वार्क्ड **वर्षेत्र (नीतन ।** कारता आकारतत धूम । পর্যান্তে এইনা ক'ফো, আনিভেছে যুম ।। त्र¥ि-श्रव्हे रावाता । এইবেলা গৃহি-কার্যা, সারিছে তাহারা ।। ুউপবনে নিকুঞ্জেতে। শিরৎ বসিয়া, শস্প-শয্যায় সুখেতে।। **इस निर्द्ध यात्नाक ।**

নানাশোভার শোভিরা। প্রকৃতি দেখায় রক্ষ, চারিদিক দিয়া !! বলাহায় কি কথায় ? এসময়ে কত ভাব, মনে আদে যায় গ এত সুখেও এখন। क्षत्रा-दिहरक रिश्च, भराज्य मन ॥ মনে অখনা জাগিছে ৮ স্থিরভার ক্লণে কণে, তন্ত্রা আকর্ষিছে।। । হনকালে পাখ ভাগে। মতুযোর পারশক, প্রবণেতে লাগে ।। ক্ষণপারে এচত হয়। अमिर्ग अमिर्ग, धरे कथा किए कहा।। কথা শুনিতে শুনিতে। কভগুলি লোক, কুঞ্জে প্রবৈশে ছবিভে।। ज्राद शाखीत-निचरन। **अंद्रां कार्यान करत, विश्वायरक्षांध्या** ।। " আমাদের প্রভু যিনি। ॰ ভৌষায় দেখিতে, বাঞ্চা করেছেন তিনি।। " কেন কোন প্রয়োজনে ? धरे श्रेश, मंद्र९ किंगा, मर्सक्रान।। ভারা করিল উত্তর । " কি জানিব প্রয়োজন, আমরা নফর ॥*****

প্নঃ শরং জিজাসে। ভোষাদের প্রভু কে,বা, কহ মোর পালে । ভারা কছে পুনর্ফার । " আমাদের প্রভু তিনি, আরাম যাঁহার।।" শুনি এই পরিচয় । শর ভাবিলা। "যাওয়া অনুচিত নয়।। তাতি যার অধিকারে। মত ল'য়ে থাক। ভাল, সম্বোষি তাহারে ॥ थहे या जिल्ला मन । खांशामित माम माम कतिला भागन । আসি প্রবেশিলা পরে। আরামের পার্শ্বনন্ত্রী, বাটীর ভিতরে 😥 বার্ত্তা পেয়ে গ্রহণতি । আজ্ঞানিলা, " বন্ধ করি, রাখহ সম্প্রতি। যেই অরে আজা দিল। সেই অর পরিচিত, শরৎ ভাবিল । " " শুনি কোথায় এ সর।" চিন্তাকরে, তাহার না হ'লো অবসর 🛭 আত চিন্তা উপজিল। বন্ধ করিবার আজা, কেন বা করিল ?।" **थहे किसात मगरत।** প্রবিষ্ট করার তাঁরে, ঘোরকারালরে ।।

জিজ্ঞাদিলা ব্যস্ত হ'রে।

"কেন কন্ধ কর মোরে, আনিয়া জালয়ে।
এই ভানিলা উত্তর।

"প্রভাতে ভানিবে গিয়া, কর্ত্তার গোচর
পরে কন্ধ হ'লো দার।
শরহ ব্যাকুল হয়, দেখিয়া আধার,দ

ি বিধির মনে মনে, এত ছিল. যত হিল ছুখ, আমারে দিল, এই প্রাণে মোর, কত সহিল, नः जानि चार्ता कि. मर्व रहः रिमिन दाँहि गर, भव प्रथे. দহি ভাগ এই, আয়ার মুখ, হয় বড় মোর, এই কোঁতুক, 🚜 ম'লে ছুখ কোথা, রবে রে 🕻 বিপাদ হয়, নাজি হয় কাঁর প সম্পদের সহ, পর্যায় ভার, বিপরীত সব, দেখি আমার. কারণ থাকিবে, ইহাতে। काइन बहे मान, उंदित शाहा. নিরপিত কোন, বাদার প্রায়, সম্পদের বাসা, আছে কোথায়,

বিপাদের বাসা, আমাতে॥
রোধিল কেন ধরি, চোরপ্রায়,
জনহান কারা। জিজ্ঞাসি কার,
বিপাদরে! তোর পদ হেখায়
তোরি পার পড়ি, বলরে?
ছরিনা আর কোন, বলধরে,
জুংখা কর কেবা, সহজে মারে?
ডরিতেছি, জোমা ছাড়া অপরে.

এল কি দেখাতে, বলরে ?।
শরং এইমড়, খেদ ক'রে,
মদস্থির করি, ভাবিল পরে,
''এরা দেই চোর, বিনা অপরে.

আমারে রোধিবে, কেন রে ?
ভারাই হবে হয়, অনুমান,
আজি দেখে আছে, আমার প্রাণ,
যদি ধক্তি ভারে, করি সন্ধান,

ভাই বধে আশা, হেন রে।

মারার ইচ্ছা যদি, ক'রে থাকে,

ভবে কেন হক্ক, করিয়া রাখে?

আবার কহিল, কালি অমিকে,

य किছू कांत्रग, करव (त्र । खर्द कि धन्ना (महे, (हान नम्न ? বুঝি উপস্থিত, দাৰুণ তর,
সেই নারী দেখা, সহজ নর,
প্রাণ-দরশণী, লবে রে !।
এনের হবে কেহ, সেই নারী,
কাছে জাসি দায়, ঘটালে ভারি,
ভাই দেখি মোরে, নোবী বিচারি,
ধরিয়া বন্দী, করিল রে
ক্রেপ চিন্তা করি, অবিরত,
মন হ'লো ঠিক, চোরের মত,
নিশীখ সময়, হ'লো আগত,
নয়নে নিলা, নহিল রে ।

নিশীথ সময়ে রজনী।
কমন প্রকৃতি ধারণ করিয়া,
সাজায় গগণ ধরণী।
তার উপমান নাহিকু,জ্যুর,
এই চোখে দেখে স্বরূপ তার,
জাথি মুদে ভেবে পাওয়াই ভার,

বভাব তাহার এমনি। কত শত ভাব লিখিয়া থাকি, কত প্রতিরূপ রঙ্গেতে আঁকি, আঁকি লিখি কোন রূপেতে নাকি, ヺ゚゚゙゙゙゙゙゙゙゙

श्रकारण मिनीथ (यमनि ?!

অই চেয়ে দেখ গগণে।
অনির্বাচনীয় প্রভাব ক্ষুরিছে,
বৈশিক জগং-কাননে।
উল্কা ভারকা, গ্রহ, উপগ্রহ,
ভারিআবো শশী পূর্ব-বিগ্রহ,
শোভা সমুদায়ে ক'রে নিগ্রহ,
আলোক দিতেছে ভুবনে।
শোভার ভাণার উচলে যেন,

উল্কা খলিয়া দেখাইছে হেন, অথবা, হখার সাগরে কেন, চেউ না উঠিবে সহলে ১

१०७ मा लाग्य नग्त ?

ধরা ভিন্ন ভাব ধ'রেছে।
জল মাধে থেন বিভীয় চক্ত্র,
• কৈরবীসহিত মিলেছে।
মিন্ মিন্ ক'রে প্রদীপ জ্বলে,
ঝিক্মিক্ করে ধদ্যোত দলে,
আলেয়া জ্বলিছে শ্রাশান-স্থলে,
কোন লভা জ্যোভিঃ দিভেছে

इबिनो धन्ने कि चार् चात.

কুমুদিনী সুভা ভাইতে ভার, অনুকুল শশী নাশে আঁথার, তরু মনোলোভা হ'য়েছে।

উপস্থিত কি সময়রে।
পশু, পাফী, নর, থাহারে সদত,
করে কোলাহলময়রে।
নৈহি যেন কেছ তথায় আর,
রাত্রিচর স্বধু করে বিহার,
তস্ত্রা আনে হেন দশা ধরার,

ঝিঁ ঝিঁর ঝক্কার হয় রে।
বুঝি শোভাময় হ'রে গগণ,
হরিয়া ল'রেছে ধরার মন,
ভাবে ভোরা ধরা ভাই এমন,

षिषा-ভाव छेनश्रतः !

আপনা পাশরি দেখিয়া! • হথ্য, গিরি, বন, আরাম, সাগর,

দেখাদিতে নারে ক্রিয়া। কোথা রহিয়াছি চেনাই দায়, ঘেন আলিয়াছি আর কোথার, আকার কিয়ারে দেই শুরার, কেছ কি রাখিল ছাপিয়া ।

চাঁদ আছে তাই ভরসা কত,

অস্ত্রকার হ'লে ভাবনা হ'তো,

লুপ্ত হ'লো বুঝি আছিল যত,

দরার উপরে শোভিয়া।

সমতি প্রতীর দেখিলা।

কিংজপত আর কুকুর শ্গাল,

মান্দে দাবে উঠে ডাকিলা।
ভূত্সার ছাড়ে কভেক চোর,
প্রত্যিকারে আভিকঠোর,
অনেকে ডরায় শুনিহা।
হেন কালে একা সেই আগারে,
ভাবে, "বুঝি প্রাণ যাল এবারে,"
শরং কিপানে পড়িলা।

শতি সকাতরে তুর্গা তুর্গা স্মরে, মনে মনে করে,
বাঁচি কি প্রাকারে।

াবন তুর্গা তাঁর, দেখি তুঃখ-ভার, হৈলা অবভার,
দল্লা করিবারে।
ক্রিগান্তে আর, ছিল গুপ্ত-ছার, সেই বারে কার,

it.

পদ-শব্ হয় 1

শব্দ অনুসারে, আসি পার ছারে, বসি ভার ধাঁং শ্রুতি পতি রয় ।। *

ক্ষণকাল পরে, ছ'র মুক্ত ক'রে, প্রবেশিলা যতে কাহার রমণী।

বন্দী সম্বোধিয়া, কহিল চাপিয়া, "আছুটি জাগিয়া। এসহ এখনি।।

যোর কারণারে, নহে খুমাবার, ভবে কেন আর. কর কাল-ক্ষয় ?

এস বাহিরিয়া, যাহ পলাইয়া, স্থির কর হিয়া,

ভ্যাগ কর ভয় ॥"

গাঢ় অন্ধকার, লোক চিনা ভার, অরেতে ভাষার।
দিল পরিচয়।

শরতে এখন, জুংখের কারণ, জুংখ বিমোচন, করিতে উদয় ॥

वको ভাবে মনে, ''গুনেছি खंदर्ग्न, मनदा हक्तनः त्रकाकत्व क्यो।

ভথাপি চন্দন, যুড়ায় জীবন, সুখী করে মন, কণি-শিরোমণি ৷৷"

ক্তজ্জ হইয়া, বিনয় করিয়া, নারী সংঘাধিয়া, বাঞ্ছা কিছু কহে।

नियांत्रण कृति, कहिल ज्रूमत्री, "मणकाल हति,

যুক্তি আর নহে॥"

আজি কারণার, চোর যে প্রকার, ভেমতি দোঁহার,

७अ-भाष गणि।

ক্রমেতে আসিয়া, বসতি ছাড়িরা, প্রান্তর পাইয়া,

रमञ्ज-मण्डि॥

শঃং ধ্বার কি হেতু আয়ায়, রাখে চোর প্রায়,

े । ভূমি কারাগারে १

हाम कि काइण, कांत्रल प्यांत्रन, अभिवादक्षमन,

क्श मिखारत है।

'नाहो कर्स्ट ठल. र उना ठळला करिव **मक**ल.

যৱে কুছু হ্ৰ,"

ফ্রিলা শরৎ, ''এলে কভ পাধ, নহে ঘু**জি স**ৎ, কন্ট-সহা কর।।

মনে ভয় আরে, হ'লে রাত্রি পার, গৃহে যাও**রা ভার,** হইবে ভোমার ১

কৃতি বিবরণ, ক্লব্ছুগ্মন, নাতি প্রয়োজন,

• বিলম্বেডে আর ॥"

। कथा अनिशा, छणना शामिशा, कार, "दम नाशिशी

ন।হি কোন ভয়।

থাকিতে জীবন, আর সে ভবন, দে খিব এমন, বাঞ্চা মোর নয় 11 " .54

শরৎ কহিলা "গুণবৃতি!

অটিয়াছে কিবা হেন, গৃহ ত্যজিবারে কেন,
করিয়াছ বাসনা সম্প্রতি ?।

তনে মনে ভয় হয়।

হইগ্লেলনা, কি হেজু বলনা,
ভাহাতে বাসনা ভয় ?।"

চপলা কহিল "শুন তবে।
ভাঙ্গিয়া দিয়াছে ভালে আজিকার সন্ধাকালে,
তব দরশন পাই যবে।
তব সক্ষে আলাপন।
দূষা মনে করি, আরাম-প্রহরী,
ভাভারে করে জ্ঞাপন।

কেবা জানে ছিল রিলি.কাল।
কেবা জানে আলাপনে, মন্দ হবে প্রক্ষণে,
জ্যানিলে কি ঘটিও জঞ্জাল।।
সেই জন্য কোষ করি।
না করি বিচার, অএজ আমার,
কেবল মারেনি শ্রেরি।।

ছ্কারিণী মোরে ভাবিয়াছে।

নক্ষ-রীতি প্রকাশিলে, আছাড় মারিবে শিলে,
ভয়ানর আদেশ দিয়াছে!!

উপযুক্ত দওতরে।

বিচার-আগারে, প্রেরিবে ভোমারে,
রাতি ব'লে বছ্ক করে।

বিনাদোবে তব মন্দ কবে!
নার ভাগো যাহা হোক, তব দুঃখজনা শোক,
ধরি প্রাণ আমারে না সবে॥
মন যুক্তি দিল বলি।
হইয়া গোপন, কারা-বিমোচন,
করিলে যাইবে চলি॥

হলো, মোর যত্ন ফলবান।
আজি এই মাত্র স্থা, কিন্তু পরে এত তুখা,
বাঁচা মরা হইবে সমান।
ভাবি মনে এই কথা।
করেছি মনন, করিব গমননরন স্থাইবে বেখা।

ইহা শুনি কহিলা শরং।

"সময় ভোমায় ধন্য, কণে কণে সসামানঃ,
লীলা করি জমিছ জগং!

নবে গাভ পঞ্চাম।

কভই ব্যাপার, কৈলা অবভার,
আশ্চর্য্য ভোমার কাম।

তোষারেও ধনা গুণবতি !
মোর ছুংখ বিনাশিলে, নিজ ছুংখ বাড়াইলে,
এই ধার সুধি কি শক্তি ।
কোখা প্রতি-উপকার ।
ভাষা না পারিয়া, দিলু বাড়াইয়া,
ভোমার ছুংখের ভার !

সাধা নাই করি উপুকার।
পাছে হয় অপকার, এই জন্য বার বার
কহি শুন ত্যজনা আগার।
ভাগ্যে যাহা থাকে হয়।
খণ্ডিতে কে পারে ? রহগে আগারে,
ভাতন্ত্রা নারীর নয়।"

চপলা করিল এ উত্তর।
কলিক্কিনী লোকে কবে, সে লাজে কে বেঁচে রংব ?

যদি বাঁচি শান্তির উত্তর।।

বিশেষতঃ এই কায়।

ছাপা না থাকিবে, আমারে নাশিবে,

যাথায় হানিয়া বাজ ॥"

'বৃথিলাম কিন্তু চাকলীলে! । রমনীর মৃহত্যানে, প্রতিপদে শক্তা লাগে, হেন ইচ্ছা কেন বা করিলে? নারী একা থাকা নর। না পেলে আগ্রয় বাঁচাই সংশয়, ব্রতী মুবতী ঘর!!

গৃহ-ত্যাগৈ অনেক বিপং ।

মুবতীর বিশেষত, প্রকাশিয়া কব কত,
ভেবে দেখ, "কহিলা শরং ॥

নারী কহে পুনর্কার।

"বিপদ সহিব, গুছে না বাইব,

কিরিতে ব'লোনা আর ॥

ষার যাবে প্রাণ নাহি ছরি।

থবে গৃহে যত হুখ, তাহ'তে বনেতে হুখ,

হুখে সব বিপদ-লহরি।

সতীত্ব রক্ষার ভয়।

জীবন থাকিবে, সভীর নাশিবে,

ইহা কি সভীর হয়?"

"বিবেগিনী এবে এ মহিলা।
চলিয়াছে নদী প্রায়ন রোধে কড় ফিরা দায়ন"
এড ভাবি শরৎ কহিলা।।
'' কর যাহে ভাল হয়।
এখন খামায়, করহ বিদায়,
বিলম্ব বিহিত নয়॥"

চপলা কৰিল, "কি কৰিব। ভূমি বিদেশীর জন, যাও যথা চাহে যন, ভব গভি কেমনে রোধিব !! ভূমি ছিলে অনুবল ! ভূমিও চলিলে, কি হবে ভাবিলে, ভূগিগে ভাগ্যের ফল '!" দয়া-পূর্ণ শরতের মন।
তানি সককণ কথা, পাইল এমন ব্যথা,
অঞ্জ-মুখ কইল লোচন ॥
ভাবিলেন, "কি উপায়।
যে উপকারিণী, ফেলি একাকিনী,
বাইতে মন না শয়।"

কহিলেন, '' শুনহ 'ললনে ! • আড়-গৃহে নাহি রহ, রহ গিয়া সামীসহ, চলিবাহ সামীর ভবনে ।।' বালা বলে খেদ করি । 'হেলে বাঁচি রহে, হাল নাহি বহে, নতুবা হুঃখেতে মরি !!

জানি বটে আছে মোর স্বামী।
কিন্তু বিবাহের পর্ন, গিয়াছে ডাজিয়া ষর;
কোখা গেছে নাছি জানি আমি॥
ছ:খ-কথা কব কত।
বুজিলে ভুবন, পাবেনা কখন,
ছ:ধিনী চপলা মত।!

তিনি শেষে এই বিবরণ।
শরতের হৃদ্রেডে, দরা ক্ষেহ উভরেডে,
হেডে যেডে করিল বারুণ।।
মন দিল উপদেশ।
শ্রাও সঙ্গে লয়েন ফোন লোকালরে,
রাধিয়া হাইবে শেষ।।"

প্রকাশিয় কহে, "গুণবভি!
 ধনি ইক্ছা হয় চল. মন সঙ্গে সচকল,
পরে হবে বিহিত-মুক্তি "।।
হ'য়ে ছাটা অভিশয়।
হুবদনী বলে, "পাই ভাগা-বলে,
গুমন ক্রণাময়।।"

শীত্র দীত্র চলে চুইজন, শীত্র চলে চুইজন।
পথে পথে উষা আসিং দিল দরশন।।
সর্কলোকে উঠিল শিহরি, লোকে উঠিল শিহরি।
আকাশে ভারার মেলা, লুকায় সত্তরি।।
অভিলজ্জা পেয়ে ভারানাথ, লজ্জা পেয়ে ভারানাথ
মলিন হইল বেন, অগ্নি ভসাসাং!।
হ'লো ভ্লান-মুখী কুমুদিনী, ভ্লান-মুখী কুমুদিনী।
ভয়ে ভ্রে ছাড়ি মুদ্রা, শুলিল নলিনী!।

सत्व वाख छेवा-वागमत्न, वाख छेवा-वागमत्न । बङ्गा निवादत (यन. मिथ यांना जारम B क्छ-इद्य माछ! मिल शिक, इद्य माँछा मिल शिक । विजगात कनदाव, जागाहे कि मिक।। দেখি হৈবা নাশে অস্ক্রকার, উষা নাশে অস্ক্রকার। এ কি এলো ভাবি ভিজ, করে হাহাকার। এলে। উষা বন্ধ আশা করি, উষা বন্ধ আশা করি। আমি-লোহাগিনী হ'তে স্ম্যা-বেশ ধরি॥ किंकु किया अपन निक्नो, किया अपन निक्नो । দেখিতে দিলেনা ভার, হইরা সঞ্জিনী। निधि मुन्ना छेवात अपन. मुन्ना छेवात अपन । श्यि-भाउ इल काँदि, उक्लडांशन !! বয় গুপ্ত মত দোষিগণে, গুপ্ত মত দোষিগণে। চপলা महर (गरे मड. এই कर्ण ॥ क्रके (शरा जान विमामात्न, शिरा जान विमामात्न । প্রবাসের যোগ্য বাসা, লইল সেখানে ।। সেখা যত ভুটে লোক ছিল, যত ভট্ত লোক ছিল। আলাপ করিয়া, সকলেরে সম্ভোষিল ।। रान देखा कविराम नद्धाव. देखा कविराम नद्धाव। বহার চাহিলে সেথা, না হয় অভাব।। কিছু পরে চাহি যে সহায়, পরে চাহি যে সহায় 🎉 गहांत्र পाहरल मिथा, बार्य हथलात्र 🗓 🎥

390

কিন্তু এই শরতের আশা,এই শরতের আশা। ফলে কি না ফলে, কলে দাকণ ছুরাশা।

চপলার কি বাসনা, শরৎ জেনে জানে না, পূর্কাপর স্মারি ভাবে, ছুখিনীরে ছুখিনী ! ছুখিনী না কন্ত পায়, করে ভারি সত্রপায়, হথা চেষ্ঠা, সে কি ভায় স্থিনী রে স্থিনী ? 'লম্ম চেফা চপক্ষার কিনে আশা পুরে ভার। কিন্তু তার কোন চেষ্টা, ফলেনা রে ফলেনা ! পুৰুষ যাহ'তে ভুলে, তেন ভাব চুলে চুলে সাজায়ে দেখায় ভায়, ভোলেনা রে ভোলেন শরতের এক মন, সে জাবিছে এক জ্ন, त्म (य चांत चना ज्ञत्न, माजना (त माजना! উপায় হইল সায়, আশা তবু চপলায়, . ছাড়েনা অবোধ মন, বোঝেনা রে বোঝেনা 🗅 সংবা খামীর প্রতি, যতন জরে য়েমতি (সই মত সুযতন, করিল রে করিল) তবু তার প্রতি মন, হ'লোনা তার মতন, যেমন তেমনি ভাবে, রহিল রে রহিল।। এই ভাবে বছদিন, যায় তবু অসুদিন, **চাত্তিকনী মেঘে দেখা, ছাড়েনা রে, ছাড়েনা** ! ब्ह्रिकथा यनि कब्न, मुश्रेशीवि कित्र द्रश्र

এফ-কঠে বিন্দু-বারি, পড়েনা রে পড়েনা।। ভাব (मर्थ हर्गनांत्र, असूध ह'त्ना अर्थात. श्त जाद, " अ कि ममा, इहेल (त इहेल ! " कन ह'ला পाপ-ज्ञा, जुलि पर्ध गृग-ज्या. पृशीद नवाम मना, वर्षिल (द घरिल। কি কুকর্ম করিলাম, কেন গৃহ ত্যজিলাম, জाङि शंन कृषाण्याखि, <u>र'ल</u>म्ब (त रत्नांना । সতীত্বে কলম্ক ছিল, কোন আশা না পুরিল. প্রবল-প্রেম-পিপাসা, গেলনা রে গেলনা ।। यांग लिथा हिन ভालে ভाशाई फनिन काल, হাতের লিখন হাতে। রহিল রে রহিল। ঘ'টেছে যে দশা মম. বোবার স্থানসম, ७ पूरत अपूरत यन, मतिल (त मतिल ।। শুনিনাই কারো কাছে, পুরুষ এমন আছে, क्लाएं कांखा यूथु छाउँ, म्हार्थना दत प्रार्थना धमन घरित शहत. (वांगी वांग-छन् करत, ध्व कि कठिन यन, वाँकिना (व वाँकिना ।। क्यन क्रेश (योवन, अक्यान आंकिक्षन, কিছুতেই ভুলাইতে, নারিল রে নারিল। কে জানে নাহিক মধু. শিমুলের ফ্লে ছ্ধু, হৃদর দেখিয়া মন. ভূলিল রে ভূলিল !!" नत्र यहम-जाला मत्य निवातिहा वाला,

कडरे अप्र के कार्य कार्य स्वा ता महिल।

मया निर्माश कार्य खांत हालयात,

कि निन अपूक्त, निर्मा ता निर्मा ।

हिंगलात करे खांद, जितनिन नोहि यादा,

कोन निन अपूक्त, स्टेटन दा स्टेटन ।

टिमेर हिन क्या म्या खांटेटन हो हि ह्य १ ना हा शक्ति द्वा कार्य, खांटेटन हो हिन क्या शक्ति द्वा है।

कुकर्य करतह दिना, खांद्र निर्मा ता नहाना।

स्टिट् य द्वा खांद्र, महाना दा नहाना।

स्टिं हिन कि कार्य खांद्र, महाना दा नहाना।

स्टिं हिन कि कार्य खांद्र, हिना दा सहाना।

এতেও কি মদনের, শাস্তি না হইল রে ?
সন্ত্রাস্ত্র-কূলের কন্যা, রূপবতী অসানান্যা,
কুল মান ভ্যাজ, বিদেশির সঙ্গ নিল রে ।
পূর্বেতে যা ছিল সুখ, ভাষ্ট ও হ'লো বিমুখ,
ঘরে, পরে, পথে, ঘাটে, কলক্ক রটিল রে।
এতেও কি মদনের, শাস্তি না হইল রে।?

রম্য-হর্ম্যে ছিল বাস, পরিবর্ত্তে পরবাস, পর্যাক্ক ভ্যাজিয়া, ভূমি-শয্যায় শুইল রে। ভাল ফব্য খেত কালে, হুংথে খায় বথাকালে, আনুখের শাসনেতে, শরীর শোষিল রে !। যেই জন্য হ'লো আশা, না পুরিল সেই আশা, তুই কুল ছাড়া, মধ্য-সাগরে ডুবিল রে । এতেও কি মদনের, শান্তি না হইল রে ?।

কালা মাখা সার হ'লো, জালে মা পাইল তল,
অগার-জলের আছে ধরা নাছি দিল রে।
তুরাশা কলাই নয়, কদাচিৎ পূর্ন হয়,
সবাই সমান নয়, আগো না ভাবিল রে।
অবাধে মন যা বলে, সেই মতে যেই চলে,
তার এই দশা হয়, ভূগিয়া বৃঝিল রে।
এতেও কি নদনের শাস্তি না হইল রে?।

যে ছিল রপের গর্ক, তাহাও হইল থর্ক,
সবাই ভোলেনা রূপে, তাহাও দেখিল রে।
মুবতীর হাবঁভাবে, লম্পট তুলিয়া যাবে,
মুজন ভোলেনা তার, বিশেষ বুঝিল রে।।
প্রণয় পরমধনে, চেনেনা গণিকাগণে,
ভাবিল, তাতিই মন, শরৎ না দিল রে।
ধত্তেও কি মদনের শান্তি না হইল রে গ

यित शूत्रां चारम, चना कारता मह्दारम,

मूकाहृति खिन्न जाना, योगना यो हिल ति ।

मान्याद्धा ति स्वर्थानम् श्रीत श्रीत को कि दस ।

मान्याद्धी-स्वी ब्राइत कि काश्री हरेल ति ।

काय कि ब्रान कार्य, ह्यांक्रिल ज्ञातक शायिः

किनि ब्रान करल, किव ब्राइल ति ।

ब्राइन कि महरन साखि ना दहेल ति ।

मन्म (छम्न नेत्र. खेवन्द्र) द्वित (त । तिल्रू भक्क, मिक नज्ञ, मनज्ञ स्टेट्य (त ।। धट्टे छन्। भोत नत्त्र, रेश्वानिक्षा स्टाट मारत, क्लान कक्ष्मा छोटा, कम्पन क्रतित (त ॥

অধীরা দেখিয়া তার, তুরস্ত মদন রে। করিয়া তুলেছে, হর পাগল বেমন রে।। শরৎ হ'লোনা ভার, তথাপি শরৎনার, এখনো আশর, দেখি করিয়ী যভন রে।।

পাবার হইলে দূর হ'তে পাশে আসে রৈ। পাবার না হ'লে দূরে যায় থাকি পাশে রে? কাছে আছে ভোগ্য নয়, যক্ষের যেমন হয়, সেই দশা চপলার, প্রোম-অভিলাবে রৈ!

मत्र ७ ममा जात, तूरबाउ (वारबना द्रा

যে ভাবে প্রথম দেখা সে ভাব ছাড়েনা রে।। ভষ্ট-নিষ্ঠ হেই জন, সে কি দেখি প্রলোভন, গোস্য ভ্যাজিতে গারে ? কখন পারেনা রে।।

বারিধি, তড়াগ স্থানি, অত জলাশয় বে । অবিরাম পরিপাদী, জলে পূর্ণ সুর রে ।। কলাচিং বর্ণে ঘন, তর্ ছা<u>ছেবেব মন,</u> বারিদের বারি বই, মনেও না লয় রে !।

কেন বিনামনবারি, চাতক না লগতে ²
চপলার প্রেমে রভ, শরৎ না হয় যে 1²
ভালবাসা যার সনে, তার বিনা অন্য জনে,
মন কেন লবে ? সেও মনোমত নয় রে 1

বসুর অপেকশিকত, ভাল হ'ডে পারে রে ।
নাছি ফুল্য ভার, মন, ভালবাদে যারে রে !।
নেখ যেই মাটি খায়, কভু দে চিনি না চার, ্
মাটী হ'ডে চিনি মিউ, লাগেনা ভাহারে রে !।

রোগ-শোক-জন্য প্রাণ, কন্ট যবে পায় রে । নবদার-দেহ ছাড়ি, গেলে কি বা দায় রে । নাহি বায় অসময়ে, রহে ছুংখে ছুংখা হ'য়ে, দেহনহ ভালবাসা, ছাড়িতে না চায় রে!৷

প্রিজনে দরশন, কিন্তা পরশনে রে। কিন্তা আলাপন, কিন্তা বিচ্ছেদে চিন্তনে রে: িন্মা হর্দে গুণ গাও, কিন্তা রাগে গালি দাও, যাতে তাতে ভালবাসা, সুখ দেয় মনে রে!।

হংদে দেখ স্বমা, ম'রেছে স্থির করিরে।
তথাপি শরৎ স্থ[ী], তার প্রেম শররের :।
এমন যে প্রিয়জন, তারে ছাড়ি খন্য-মন,
হ'তে পারে শরৎ কি, এক মন ধরি রে ।।

যদিও বিশ্বাস আর, পাবেনা ভাষায় রে। বিবাহও হয় নাই, এবে স্বপ্নপ্রায় রে॥ ভবে কেন ভাবি আর, এ চিন্তা হয়না তার ? বুনি, আছে জীবনান্তে পাব, প্রভান্তায় রে॥

कीरनांत्स गांदर शांदर, व्यामा मत्नेमतन हैं। व्याह्म स्थया यिन मिथा, तदत्र व्यनाकतन दत्र !। धरे कना धरुमतन, जूबिएक काशत्र मतने, कात्र शांदन तदन तद्य योदर जूबिन दत्र ॥

27-0

ও ন্যান ভাকে কি সাধ্য, আছে চপলার রে।
চপলার বাধ্য স্থান পেয়ে উপকার রে।
জার বাধ্য নাহি রবেন কেমনে পৃথক হবে,
এই চেফা শরভের, মনে অনিবার রে।

যাতে শ্রেমির কটি, চপালা না পার রে।
তাহার ব্যক্তান্দেন্ত্র করি দুর্কায় রে।
বুরাইলা ওপালায়, কতিল থাক হৈথার,
আমি যাই যথাস্থানে, করেই বিদায় রে।

জ্পলা কাৰিয়া ধরি, তাঁর ত্টী পায় রে। কৰিল "কোপায় যাবে, ছাডিয়া আমাল রে॥ এখন কে আছে আরি, ভোমা বই চপলার, ভব মৃদ্ধ ছাডি আমি, রবনা হেথায় রে॥

দাসী হ'রে চরণ সৈবিব, সঙ্গে রব রে।
বিদ্ধিতাজি যাও ভবে, আত্ম-হত্যা হব রে।"
শর্প ভাবিয়া দার, বুঝাইতে চেন্টা পার,
বোঝেনা চপানা কাঁদে, করি উচ্চ-রব রে॥

ष्प्रतामात्र महर कहिल, विरुव्हना हु । विनाह लहेना बाजा, स्टब्ना घटेना हु ॥ ষোরনিশা হবে যবে, শব্যায় যুমায়ে রবে, সে সময়ে পলাইব, বুঝিতে দিবনা রে॥

धहे यूकि अनुमारत, मगद त्विश ति।

कड़ शनाय, भनी निधन गरिया ति।

भेतर द्विशाहिल, भनी द्वि यूगिरेल,

स्वारकार क्विशिय, नयम यूनिश ति।

ভূতে পেলে ভূতে কি, সহজে ছাড়াযায় রে বেথা যাবে সঙ্গে যাবে, দেহ-ছারা প্রায় রে শরৎ তাজিরা বাদে, যেমন পথেতে আদে. চপলা অমনি উঠি পাছু পাছু ধায় রে!।

বহু দূরে সাসিয়া, শরৎ কিরি চায় রে । অবাক ছইল দেখি, পাছে চপালায় রে ॥ কহিল, "একি চপালে! বাসা ছাড়িঁ এলৈ চ'লে । চপালা জিজ্ঞাসে. "তুমি চলেছ কেঁখায় রে গঃ

শরং ছলনা করি কহে, "যাও বাসে রে
কোপায় চলেছি জাসি, কহিব সকাসে রে ॥
চপলা উত্তর করে, "পলাইছ দেশাস্তরে,
জামায় ত্যজিতে ইচ্ছা, বুবেছি আভাসেরে

কিরাতে বিবিধ চেষ্টা, শরৎ করিল রে।
কিছুতে চণ্লা ভার, সন্ধু না ছাড়িল রে।।
বিরক্ত হইয়া পরে, ক্রভ চলে ক্রোধ ভরে,
চণলাও সঙ্গে সঙ্গে, ভেমনি চলিল রে।।

ক্ৰেক্ট্ৰ প্ৰভাতিল, ভাতু প্ৰকাশি प्पारक प्रत्य निविधि नहिल। শ্রম-শান্তি নাহি করে, নারী সকাতরে, শরডেরে, ডাকিয়া কহিল।। "হও, ফান্ত গমনেতে, বহু ভ্রমণেডে, মোর পদে, হইল বেদনা ক্ষণ, শাঝি করি পরে, মন বেখা ধরে, যাবে, রতি বিরতি করনা ?।" পথ-প্রম অবিরত, নারী সবে কড, শান্তি হেডু, করিলে বাসনা। তাহে, নাহি দিলে মত, ছাখ সহি তত शिख इरव, हिलाउ ललना ।। <a>है, वृक्ति अनुमाति, करह यूवा छोति, "আছে ভয়, এ সব স্থলৈতে। কেন, ধ্ৰেন কথা বল, শীতা চলি চল, रिश्वा बंब, अथोब मत्न एक ।। " नात्री, नास्त्र हलिवादत, नादत्र विनिवादत,

कि कदिएत, बहेल हिलाए। मिथि, ভাব চপলার শরতের আরি, ক্রমেগতি, লাগিল বাড়িতে।। (रन, वांशा भकरिएड, (भन्न नारत (यटड, চপলাও তেমভি, হইল। ত-গতি হংলপ্রায়, বড় ছব্রে যায়, কাল-যন্তে, প্রহর বাজিল।। ज करनियो नई, छातू-एक नदः. पूथ-इवि, बहेल मलिन । (यन ननी ग'लियांस, यर्थ वर्टेंह भास.. तोटक ग'ल, इस वा दिलीन।। वर्गनजा ज्ञान इस, प्रिश्रिः (म मगस, अनुकृल, यमि अ श्वन : মাটি, অভিস্কটিন, গভি শাস্তি-হীন, (कांगलाक, जरह कि कथन ?। "ওক হয় পারিজাত, একি বজাঘাত" বেহ যেন, শরতে কহিল १५ এই জন্য যেন ধীর, গতি করে স্থির, 🚶 (महे मना, मिथिएक नाहिन।। नाती, वस्त कि श्रकात, ज्ञादन मन श्रुत्र, निएक्षि, इस ना (म अपन ।

ছल, छाज्ञ देव्हा हिल, काथा मूकदिल,

109.

শরভের, বিরক্তি এখন ।।
ভাকি, কহিলা "চপলে ! ব'স ভকভলে,
আজি-শান্তি, করহ ক্ষণেক।
নাহি, কঠে প্রয়োজন, স্থাথ এখন;
ভাহে আছে, সময় অনেক" ।।
কি অভিশয়, স্পীতল্ময়,
ভকভলে, শরৎসহিত।
রামা প্রান্তি-শান্তি করে, কাল যদ্তি পরে,
ক্রমে ক্রমে, মধ্যান্ত্ উনিত।।

উঠিল প্রচওভাবে, গগণ মাঝারে।
সরোজ-বাস্কর।
বাড়ে কিরণের ছটা, দিবার যৌবনে ঘটা,
দেখি সুর্য্যমুখী ফুল, ফুটি একেবারে॥
যোগার আসব ॥

হি মধুপানে যেন, ত্বপর বেলায়।

মেতে ওঠে ভ'লু।

কি দায় ঘটালে ফুল, প'ড়ে গেল হলস্কুল,

সহজেই রক্ষা নাই মধুপান ভায়।।

সম্ভ ক্ষামু !!

আগে ছিল শস্য-ক্ষেত্র, ধরায় ঢাকিয়া।
নাহিক তেমন।
পঞ্চ-শিখ নেড়াপ্রায়, কত স্থান দেখা যায়,
খেয়েছে মাটির রস, শিশির শুসিয়া।
ভাতে এ তথুরু!

মক আর ছোট বড়ু ক্সান্তার মাঝারে। ভরার পরাণে। ছায়াতক স্থবিরল, জলাশয়ে অশুণ জল, মরীচিকা, ঢেউ খেলাইছে চারিধারে।। কে যায় সেখানে।।

শাৰে মাৰে ধূলা উড়ি, করিয়া আধার।
ঢাকিছে আকাশ।
ধরা পোড়ে রবি-করে, বাস্পু উদ্দীরণ করে,
ভাছে চারি দিক্, দেখাযার ধুমীকার।
লাগার ভরাস।

দিবা ভাগে লোক মাৰে, সদা কলধনি।
বিরাম না হয়।
কালের প্রভাবে ভায়, করে ধ'রেরাখাপ্রায়,
কৃত ববে বায়ু বয়, ভাই মার শুনি।

निर्देश इत्रा।

এবে নাকি বায়ু, বসন্তের সহচর।
সংসর্গ-গুণেতে।
১ইয়া মহৎ কতি, সদয় নবার প্রতি,
হ'তে, রক্ষা করে চরাচর'।
সংস্কোনেতে।

এ সময়ে, চপলা শরৎ, গুই জনে।
কাস্তার মধ্যেতে।
-শ্রান্তি শাল্ডি আনে, ছায়া-তক-তলবাসে,
বিদিয়া অপিলি মাঁথি, প্রাকৃতি-কাননে।।
মনের সম্বেতে।

ভীষণ সন্মু তরু, প্রক্লিত তথন।

সেজেছে হন্দর।

ক্রিভারু অগ্নিরাশি, পোড়ার বা ভয় বাসি,
প্মা-ঢাকা হ'রে, লুকায়েছে দিক্গণ॥

হইয়া কাতর॥

ছাতা হ'রে মাথা দিয়ে, মূলেরে **লুকা**য়।

• বতেক পাদগ।

জলজেরা ফুলে দলে, লুকায়ে রাখিছে জলে, শাখা নেজে ভাকে তক, পথিকে ছারায় । বেখিয়া আত্রপ ॥

্রথসময়ে বাহাদের, ভাকি প্রয়োজন। ভাহারা চ'লেছে।

উদরের পরায়ণ, কুটি স্পণী পক্ষীগণ। অমিছে, নতুবা অন্যে বিশ্রাম কারণ। পাদশে ব'দেছে।।

স্থুই কি বাসে আছে, ভারা ভাত নয়।
সংগীত গাইছে।
অনুপম সে সংগীত বসস্তের মনোনীত,
আহা কিবা স্বর, মধু হ'তে মধুময়!।
জগৎ মোহিছে।।

ভাহাদের বীণা যেন, অলির গুঞ্জর।
বাদ্য বাত-ধ্বনি।
ভার সঙ্গে স্থাথে ভাসি, গোপালে বাজার বাঁণী,
শাখা নাড়ি ভক্ত আদি, নাচিছে স্ক্রন্তর।।
শক্ত স্বন্তবিন।।

দেখে **ওনে মুই জনে, আনন্দে ম**গান !
সহসা পশ্চাতে !
কাহার প্রেরিড চর, ক্রমে হ'রে অএসর,
"এই যে পেয়েছি", ব'লে করি আক্রমণ !।
ধরিঞ্জাঁহা হাতে!!

তখনি সক্ষেত্রে লু'হো করিল গমন।
বিপদ হুন্তর।
দোহে ভয়ে হ'য়ে ব্যক্ত, জিজ্জানা করিলা এন্ত,
করে ভোরা ল'য়ে যাস, কোথা কি কারণ १।'
দিলনা উত্তর।

যজাত নিকেতনে আনীত ছইজনে,
দেখিয়া সেই ক্লে, গৃহের পতি।
কহিলা, "চরুগণ! পরিলে অকারণ,
কত্রু আচরণ, ভারের প্রতি।।
হাহারে প্রয়োজন, তাহারি অন্বেষণ,
এরপে অন্যজন, এননা ধ'রে।"
চরেরা দোষী হয়, মার্জ্জনা মাগি লয়,
গৃহস্থ সাকুনয়, বতন ক'রে।।
উভয়ে সমোধিয়া, কথাতে সম্বোবিয়া,
স্বপথ দেশাইয়া, 'বিদায় দিল।

কাছার অন্বেষ্ণে, যতন কি কারণে, মুগাতে ছুইজনে ভুলিয়া ভিল।। जिल्लाम कान जान, जाविरह मान मान (मिशिल (महे कार्ग, गुरक जारन) নিকটে সমাগত, আলেকে রাজপ্থ শোভিয়া মনোমত, রূপের ব্রেক্ট এরপ রপবান, ভলার মন গ্রাণ. इत्रा सन था। तम्भी इति। চপলা দেখি ভার, শহতে ভুলেযায় অধীরা হ'রে প্রায়, আপনা ভোলে।। একে সে রূপবতা, হইয়া গ্রীভি-মতী, নেহারে যার প্রতি, অননা-মনে। कि क्रांश रमहे जन, जुलारत बार्थ रन ছুটিল আঁখিমন, মিলি ছুজনে।। প্রথম দরশনে, আশক্তি যেই ক্ষণে. উদয় হয় মনে, वित्र किति। ভাহারা দে সময়, কি ভাবে ড্বে রয়, লিখে কি বলা হয়, স্বরূপ ধরি? যন্যপি সে সময়, থাকিলে লোক-জয়, সে ভাবে রাখা হয়, গোপন ভাবে। ু ্ বিতীয় ভাব ভার, ভারুকে খুজে পায়, कारनात शांख्या मात्र, किक्राश शांत ?।

উভয়ে ছুই ভাবে, রাখে গোপদভাবে, এলনা অরুভাবে, তৃতীয় জনে। শরতে তুইজনে, আপদ ভাবে মনে, বাধারে কে স্কুক্নে, স্কুদ্গণে ?।

-ভেবেছিল, যে যুৱা দেখা দিল, বসতি ছার সেই স্থানে। পথিক যে প্রকার, ভেমতি বৈশ ভার. वित्नभी बृत्य अनुगातन ! জিজ্ঞান্ত হ'লে পরে, যেরূপ ভাব ধরে, মুথৈতে সেই ভার আনি। निवर्ड इत इत, त्म गूवा (म मगत्र, प्रथिया (नहे यूथशानि ॥ কহিল, 'মহাশয়! ভাবেতে বোধ হয়, কি যেন করি অভিলায । कहिएक ध्वैवर्जिया, बहिएल निवर्जिया, * কি কথা করহ প্রকাশ সা শর্ কৰে ভায়, "হুখাব যে কথায়, विमि । (म कथा कि जान ?" विद्नुमो यत्न, 'छाइ, यनित्न द्वार माइ, উত্তরে পাইবে প্রযাণ ॥" ''जानक बल बल, अहे या वानक्त,

পশ্চাতে শোভিছে কাহার ?" ं मंत्र हेश क्या, विष्मि क्रिक "इम्र. এজন কোন জমিদার॥" 'আমিরা কি কারণে, আনীত হ'য়ে ক্রে. विषु कि भारे शुनक्षाद ?" य शक्ष इ'ला श्रमः, विर्ताणी वरला प्र জেনেছি কারণ ভাষার ম এই বে ভূমিপতি, ইহার রূপবতী, দুহিতা ছিল পিতৃ-বাসে। একদা এক জন, অতিথি আগমন, कतिल देशा आवारम ॥ সজ্জন দেখি তায়, রূপদী প্রীতি পায়, আলাপ করে ভার সনে। দ্বিত ভাবি তায়, ত্মিপ ছুহিতার, निरंवध करत जानाशता मात्रीत त्रांश हिल, यहां शि श्रू शहेल ৰপৰে শহা। ত্যজি যায়। कथन चुलि खांत्र. इहेग्रा गृह भांत्र. जानिया गार्ट गार्ट शाय ।। यित अकारत, मंडई गृह-फंटन, वे তথাপি এছ-ক্ষের ভার। त्म किन बाजि ब्यह्म, डांशाद्र नदम द्वारम

शरिय श्री

হটল গৃহ আম পার ।। ভাহার আয়ুঃ শেষ, ওনেছি স্বিশেষ, ভাষারে ব্যান্তে খ'রে মারে। अजनी (भाष कंत्न, जाजिथि यात्र कत्न. কেহ না পায় অবলারে !! किनी" (काषा शंक. बिनमा धन (धन, व्वेश (वार्क अफिक्ट्स উটিল মহাশোক. ছুটিল কভ লোক, বুজিল ভন্ন ভন্ন ক'রে।। पृत्राफ कान जन, कतिम प्रभन, रार्घएक कर्त्र गांत्र क्र । খণ্ডিভ-দেহ ভার দেখার যে প্রকার, (मधिल (मह (महे मछ ॥ ক্রেণ্ডে অনেকেণ্ডে, দেখিয়া স্বচক্ষেডে, 🐩 প্রভারে ব্যান্তে নাশে ভারে। ভ্ৰিপ সৈ কথায়, বিখাস নাহি পায়, भाष्यकी करत जार्गनारत ॥ সন্দেহ এই ভার, অভিথি তুরাচার, কুহকে বলীভূত করি। বালারে সভ্যে করি৷ থাকিভে বিভাবন্তী, रंद्राटक् बुचि दिन्नोखडी 11%

দিবসে অভিৰিক্ত সহ সে দান্তিনী

356

कालान (मृथि क्रमग्राम। এরপ সন্দেহেতে, বিচারি অন্তরেতে, পাঠার চর অম্বেবণে !! চরেরা দলে দলে, ফিরিছে নানা ছলে. ^{'**}ठत्त्रज्ञा नदारे कि **कार**न ? प्रमोत्र मिक्नीएं, जुलाह मायिनीएं...... অতিথি তুমি অনুমানে।। ভূত্যেরা আনে ধ'রে, ভূমিপ দেখি পত্তে मज्दर पिन युक्त कति।" छिनिया उथा उस्. भंदर करह, "वार्थ, अञ्ची करत मादि शति।।" পরেভে একত্রেভে, বিবিধা আলাগেতে, वितिभिष्ठ जिन कार । আসিয়া স্থানাস্তরে, বাছিয়া বাসা ক'রে. विनाम तरह विख्यान ।।

थोकूक खनाथ जरम, वर्षमीर विश्व करम, मीन कि जावात शास्त्र, चरीनका मक्तिरास ? विस्मित मस्मामीन, क्यिन करेन । व्यानात मृक्ति कात्र, विश्वरह वर्षमीत्रात्र, खोशीनका राजारेज्ञा, व्यानात करण निज्ञा, स्मित्रक शंक्रदह जात, केठिक माजिन ।। বিদেশির হ'লো দায়, মন ছাড়ি কোথা যায়, কাযেই চপলা যেখা, যায় সেও যায় দেখা, যেন চপলার, পোষা পশু পাছে গায়। শরৎ ভাবিলা মনে, "এ কেন মোদের সনে? গ্রাধের সঙ্গেডে যেন, মাংস-লোভে শিবা কেন,

"শ্রুটিপানার লোভ বুঝি, ধ'রেছে উহার ॥"
বুঝিতে লোভির মন, চাহিনা অনেক ক্ষু,
ক্রেমে সব তত্ত্বপায়, চিন্তিত হইয়া ভায়,

শরং ভাবিল, "হ'লো বিষয় উৎপাত। লোভির অসাধ্য নাই, লজ্জা ধর্ম্মে দিয়া ছাই, ভুলাইয়া চপলারে, সতীত্ব নাশিতে পারে,

ধে দেখি ব্যাপার, ভাই ঘটে বা পশ্চাৎু।।
ভাব দেখি চপলার, রুঝাগেছে যে আচার,
অসতী হোক না কেন, মোর সঙ্গে থাকি যেন, ै

উপস্থিত সতীত্ব, তাজিতে নাহি পারে। এবে যে সতীত্ব আছে, যত্ন পেয়ে মোর কাছে, ভাহার বিনাশ হয়, দেখিবার যোগানের,

এখনো করিব যতু, রাখিতে ভাষারে ॥"
ভাবি এই যুক্তি পায়, "পাঠাইব চপলায়,
উহার শ্বশ্রবালয়ে," তখনি সত্ত্ব হ'লে,

জিজালে, "সে ধাম কোথা," ডাকি চপলায়।
চপলাবু কারে কর, "আমার বভরালয়,

দেবীপুরে বর্ত্তমান, ভাহার কেন সন্ধান,
কিবা প্রয়োজন, ভেন্নে বলনা আমায় গা
শারং কহে, এখন, এই জানা প্রয়োজন,
ভোমারে পাঠাব দেখা, মোর সঙ্গে যেখা সেখা,

এরপে ভ্রমণ তবং ফুক্তি-সিদ্ধ নর। পিতৃ-গৃহ নাহি চাও, শ্বশুর-ভরনে যাও. নারীর শ্বশুরালয়, অসুধের যদি হয়,

তথাপি থাকিলে সেধা, নারী-ধর্ম রয়।। কাষকি অন্থ সহি, মোর সঙ্গে সঞ্জে রঞি আমারো কাষের ক্ষতি, বিশেষত গুণবতি!

জনণে বিপদ কত, করিলে দর্শন ? .
তাই রলি কথা শুন, মোর বাক্যে পুনঃ পুনঃ .
অবহেলা না করিয়া, এই মতে মত দিয়া,

সুধী করি বল, করি, ভার আয়োজন ।)" পূর্ব্বে এই কথা হ'লে, নাকে ক্রাঁদি কভ ব'লে, অমত প্রকাশ করি, থাকিত আঁচল ধরি,

আজ কাল নাকি ধনী, সে ভাবেতে নাই। কৰিল, "কৰ্ত্তব্য নৱ বাহে তব মন্দ হয়, আজীয়ের মৃত্তি যাহা, মন্দ নাহি হয় ভাহা.

তব মতে মত দিয়া তবে তাই বাই।।" তথানি প্রস্তুত হ'য়ে চপলারে সঙ্গে লয়ে, শারৎ বাইতে চায়, চপলা নিবারি তায়, ক**হিল, "অযুক্ত হ**র, যাওয়া তব সাতে। যদি র'টে **থাকে সেথা, আমার এস**ব কথা, বহু শাসন করিবে, তা**হা আ**মার সভিবে,

ভোমার সবেনা হবে, বিপদ পশ্চাভে ॥" ^ক শরৎ কহিলা 'ধাষা, ক**হিলে সম্ভ**ব ভাষা-শকি**মু** একাকিনী নারী, কেমনে প'ঠাডে পারি»"

ধনী বলে, 'কাছারেরা অবিশ্বাসী নয় !" শরৎ এ কথা মানি, শিবিকা কাছার আদি, যাত্রা করীইয়া দিল, চপলা বিদায় নিল,

ধেন কোন প্রেচিচ চলে, শ্বশুর-আলয়।। ম্পলা যাইলে পরে, শবৎ মনেতে করে। মশুভুগ্রাহ কিরে এল, যামদিয়া জুর গোল,

কোন্ পালে পাপএছ, মোরে আদি ধরে ? যে দেখি পাপের কুপ, এ যৌবন আর রূপ, রূপ ভোর মুখে ছাই," এই বলি মাথে ছাই,

যোবন গোপন আদে, যোগি-বেশ করে।
প্রংসারী কখন নই, যোগে কেন নাহি রই १

ইহা তাবি প্রেম-যোগী, সেখা হণতে যায়।
কি জাভি বিশ্বাস নাই, চপলা সেই বালাই,
বিদি কিরি আসে পুনঃ, হাড়েতে লাগাবে খুন,
এই জন্য স্থানান্তরে, কুটির নির্মায়।।

বোগীরে ধার্মিক জ্ঞানে, বাঙ্গালিরা বড় মানে, ভানিয়া এনেছে যোগী, আসি কড চিররোগা, স্তুতি নতি করিতে, লাগিল অবিরাম। ভ্যামোদ পাইয়া ভারু যোগী যাহা মনে চারু, ভাহা বলি, রোগিগণে, ঝেডে দেয় অন্য-মনে, ক্রমে দ্রদেশে রটে, যোগীবর-নাম।।*

রোগী ভিন্ন অন্য জনে, গণনার প্রয়োজনে প্রশ্ন করে যে বাহার, আশার বুঝিরা ভার,

উত্তর প্রকালে বোগী, এমত প্রকার।
ব্যর্থ হয় কদাচিত, মান বাড়ে যথোচিত,
কভ লোকে যতু ক'রে, ভোগ দেয় যোগাবদে
যোগির বাহ্যিক হখ, ঘটিল অপার।।

পঞ্চম সর্গ।

एक निन शांतीयतः निन बाखहर्त्याभतः धांत्रिमिर्श (योष्डंकत्र, कछ नत्र नाती। ेरंपन (मन्द्रोत्रीकार्य, भक्कजन्न निवात्राय, পুজा करें बिलांहरन, मध्य जिश्रेतांति । উপস্থিত সেই ফাণে, বিধবা র্দ্ধার সনে. थक युवा ऋषे-यत्म, वाशि-मन्निशातः प्रका क एम स्थाफ-कत, निर्वातिल, "स्थाभीतक ! मां आदि अक वत स्थी ह'हे छात्।।" োগী বলেঁ "বর-দাতা, এক মাত্র আছে ধাতা তিনি সকলের পাতা, চাহ তাঁরে বর ।" বদ্ধা কছে পুনর্কার, "যে বর চাহি আমার, দে বর দিতে জোমার, শক্তি স্ভস্তর।। আমায় প্রসম্ব হও, ধ্যানেতে জানিয়া কও, তুমিত সামান্য নও, কি অজ্ঞাত ভব ? গুন মম অভিনাব, কহিতেছি উপন্যাস, উত্তর কর প্রকাশ, ওনি সেই সব।। যোর এক-পুঁত্র ছিল, বিপাকেতে বিনাশিল ' पर्व अनि ना महिल, याँ विशास (महे। गडा कि मा अर्थवाम, केरि शादा व मावान, े

পুরাও মনের সাধ, এক প্রাপ্ত এই ।। ् अना श्रमां बहे चाहि, ठाहिया त्रथह काहरू, দাঁড়োয়ে আমায় পাছে, এই বে যুবক। একি মোর সে সম্ভান, এসেছে যুড়াতে প্রাণ-কিম্বা কারো কুসন্থান, প্রধান বঞ্চক গা" े क्षेत्री कहिंहा खेदन, इत्य बानत्म मनन, योगी ভाবে, "७ छ कन, द्वि विनिशाद । ভানিলাম যে প্রকার, এই রন্ধার কুমার, আমিই বা হব ভার, বিচিত্ত কি আছে ?। खाल मिथि गिनाहेता. यम खख श्रेका नियाः शा उन्ह क्रिकातिशा, अतिह शियन। कल यन गत लहा, अनुगान विष्या नहा. প্রশ্ন শুনি সুখোদয়, হয় কি কারণ !। किंख এই यूरा खन, এর मृद्ध कि कांतर ु . धरे कि धर नमन ? डाझा यनि इत-।' हेडा जावि तारे खात. प्रार्थिए रहेन मर्तन, 'शाबार्ड देखांत्र मत्न चार्क श्रीत्रध्या।' महमा देशिन होति, कहिना खुद श्रेकाणि, ''এই জন অবিশ্বাসী, এই ক্ষিভিত্তলে। यांथव देखात नाय, निवान श्लामाहि आंध. लाएला द्वारवड थांच करत व कोमहल ॥" (बार्गि-पूर्व शक्रिक्ट, कवि वृर्त शिक्ष करे.

शनांद्र हेमा करा. यदि याती देता। कहिला, नर्गकर्गार्ग, 'यस कहि ध प्रवह ति, বিচারক-নিকেডনে, পাঠাও গতর ম প্রবিশ্বক নরাধ্যে, বিনাশান্তি কোন ক্রয়ে, তেড না সংসারাপ্রমে, অপকার হবে ," সকলে আশ্বর্যা মানে, যোগীরে সর্বাজ জ্ঞানে, তাঁর আজা অভিযানে রক্ষা করে সবে। বাঁধিয়া লইয়া ভারে, চ'লেছে বিচারাগারে, যোগীবর বে সবারে, করি নিবারণ। कहिला "काशक तक, लिशि पिट माझ लह, আছে বিচারক্ষহ ম্ম আলাপ্র॥" পত্তে লেখে যোগীবর, 'তাজি আপনার ঘর, এডাইয়া মৃত্যুকর, সুৰুমা হারাই I সেই ছঃখে নানা দেশে, ভ্রমিয়া আদিয়া শেষে, अ (मदन मन्नामि-व्यटम, मम्ब काछी है। शाशांदित विविदानी, माध्य वक्षक वानि, বঞ্ধার অভিবী আমার সাক্ষাতে। ্ই জন্য ধরি ভারে, পাঠাই বিচারা গারে, ৰও পায় স্থবিচারে, নাপায় পলাতে **৷** यना (युगरवान व्याह्म, निविज्ञा ज्ञानाव शीह्म, ध्यम अरमिक कार्ट, भाकार इरेरव ।" हेश लिश्वि गिर्जियान, लिलि कित निर्माधान,

কহিদিলা দেই স্থান, যথায় যাইবে॥
দেই ধুর্ত্ত কুরাচারে, পাঠায়ে বিচারাগারে.
নিকটে ডাকি রন্ধারে, অতি সমাদরে।
কহে, "করিগো প্রচার, কোন জন-সমাচার
দেই কি তব কুমার, দেখ মনে ক'রে॥"

ं मलिशाबि जनवात, जेनविश्म वर्ष राव, श्रीकश-श्रिषाम, एत्रमारमण्ड (गा। প্রভুরাম নামে কেহা গিয়াছিলা ছাড়ি গেহ কলত পুরেরে লয়ে, সনেতে গো।। জগরাধ সে মময়ে, নবকলেবর হ'রে, (मां जिद्द, मिथिदा, এই कांत्रत ता। । অভিনমারোহ হয়, এই জন্য রোগ-ভয়, थावन इहेल, मिरे खबान भा।। 🚈 মহামারী ষটে ভায়, বছ লোক নাশ পায়, প্রভুর ভনয়ে ধরে, রোগেতে গো ৷৷ 🏄 হাঁচিবার নাই আশা, তাই ভুলি ভাঁলবাস।, ভাজিনা আআজে, মৃত্যুকরেতে গো।। ্ সঙ্গিণণে ছাজি যায়, এই ভয়ে বাপ যায়, পরাণ লইয়া করে, গমন গো! • জাপনি বাঁচিলে পরে, কড পুত্র হবে ঘরে, ভাঁদের বিচার এই, তখন গো।।

হেন মাতা পিতা আছে ভনিনাই কারো কাছে, বডই কঠিশ প্রাণ, তাঁদেব গো। মা ৰাপ কটিন যার, প্রাণও কচিন তার, डाइ कि (भानमा थीन, किलात शा !! ঘত ভাবি সেই ছেলে মেভরে শাশানে ফেলে, শুগাল কুকুরে, নাহি ছুঁইল গো। ্দেই ভাবে দেখি ভারে, কোন সাধু-ছালাগারে, কাৰণ্যরসের জ্রোভঃ, বহিল গো।। प्रथान जुलिया निला, यज्ञ कति वीहाहैला, ক্রমেতে বৌধন **ভার, হইল গো**। দ্বং ভাষার নাম, কোথা পিভা প্রভরাষ, কোপাণ জননী বলি, ভ্রমিল গো 🗈 লমি জমি কট ভোগী, শেষেতে হইয়া যোগী, সেট সে শ্রং এই, বদিয়া গো। াখারে দিয়াছ ফেলে, এই কি না দেই ছেলে, यत्न छ यिलारी (नैथ, ठास्थि। धा। ॥" ^{র্বি}ডে দাব্দ কথা, মর্মে লাগিল ব্যথা, . 4 ন্য়নে ডুঃখের বারি, বহিল গো। হি বক্ত,-মুখ পানে, পুত্ৰ-তত্ত্ব ভনি কানে, চেডনা ছারায়ে বৃদ্ধা, পাড়িল গো 🛚 ^{গান্ধিত} স**ৰ্বজন, করিল** বহু যতন, সচেতনা হ'রে র্কা, ধাইয়া গো।

শরতের মুখপানে, চাহিয়া আকুল-প্রাণে, কাঁদিতে লংগিল, গলে ধরিয়া গো॥

তুমি কি সেই আমাত, শরৎ টাদ-কুমার ? এতই দ্বংখ্যে ভার, কথালে চিল ভোমার !: व्यापि कि कानमा शिनी, इहेश गार्छभातिनी । তময়ে ত্যাজি আপনি, আর কে হেন পাণিনী **७**श्न फुर्लंड (इ.स. यक्ता व'तन (महे कितन) সোণা ফেলিদিয়া জলে, দিয়াছি গ্রিডা সাচলে প্রাণাধিক বলি যারে, প্রাণ রাখি ছাড়ি ভাবে ধিক ধিক এ আফারে, ধিকু ধিক এ সংসা দেখি নিরাশ্রের ভোরে, ফ্রান্ডার ও নরা করে : মা হ'য়ে আমি কি ক'রে, ফেলি আছি দৈইটা যদি সাধু না দেখিত, বাছা ভবে কি হইত সাধু করিয়াছে হিভ, আুমা হ'তে যথোচিত সুধু ভোরি পুণা-বলে, আজি ভার্সি সুখ-জা গর্ডে ধরেছিলু ব'লে, কভু এ ফল কি ফলে কুপুত্র অনেক হয়, কুমাভা কাহার রয়।? ভূমি মোর স্কুনয়, স্থাতা ভোমার নয়।। भारत सूथ हिल जाहे, भूनः **र**जाह प्रथा भारे আজি ভোর পিডা নাই, কারে এ সুখ জান[ে] হেন পুত্র আর্ছে যার, তার দলা অবীরার গ

তুঃখ নহে কহিবার, ছি ছি অভাগ্য আমার॥ পুত্রবভীর কি সুখ, দেখিনাই ভার মুখ ৷ थांकि शिल स्म अञ्चर्थः मस्म **१८**८न। (को**ुक**ा। টাদমুখে মা মা বলঃ প্রাণ হোক রে শীতল ! (ফলি সুংখ অঞ্জল, ধৃই অখুখ সকল।। আহা ম'রে বাই হার, হ'মে কাতর কুধায় : একা পঢ়িয়া ধরায়, কভ ডেকেছ আমায়॥ বড়ছংখের জীবন, ডুফি করেছ ধারণ ৷ নাতৃ-ত্ৰেহ যে কেমন, ভূমি জাননা কৰ্বন।। আ'জো এ মার উদ্দেশে, কত যুরেছ বিলেশে । ্ৰে। ছংখে বুঝি শেষে, ধরিয়াছ যোগি-বেশে। াঁছা আয় করি কোলে, যুছে দেই আঁথি-জলে। যেতে দেই রে অঞ্চল, ভশ্ম যাখান কমলে। ংসে ব'ন গৃহ-মাঝে, লিপ্ত হও গৃহ-কাংছ। পার এখানে না সাজে,ছেড়ে দাও যোগি-সাজে।

নানা ক্লপ ছাদে, বিনাইয়া কাঁদে, রদ্ধা অধীরার প্রায় গো: । সে ভাব দেখিয়া, ক্রন্দন শুনিয়া, অনেকে কাঁদে তথায় গো।। ককণা যে রস, শুনি মনোবশ, কদাচিৎ কারো হয় গো।

जारह यात जात. काँग्न अना नाइ, সে কেমনে ক্রির রয় গো!া मद्रमद्र मृद्राः (माज वाहि बाहर মৰ্ঘ্য কয় বিলোডন গো। खड रेश्का ध'रत. भंतर मञ्जात. সে ভার করে গোপন গো B ভনিতে বাসনা, "কি করে ঘোষণা, উপস্থিত যত জন গো।" वांगमा शृतिला मकाल धानिल, "खान्डरी अहे महेन शा। এত গুণযুত্ত, প্রভুরাম-স্বত, বিধি আজি মিলাইল গো ৷ ধন্য ওর মায়, ঈশ্বর-রূপায়, তারান ছেলে পাইল গো ॥" ত কথা ভনিয়া, পুলকে পুরিয়া, শরৎ কছে, "জননি গো ৷ গভারশোচনা, এখন ক'রনা, গেছে হুখের রজনী গো।" শাস্তাইয়া মায়, প্রণমিতে পায়, প্রেমাঞ্চ ভায়, পডিল গো ! ভক্তি-রস যেন, গলি পড়ে ছেন. **ভাবুকের মনে নিল গো**

कहिला. "जनि ! (य ग्रथ এখনি, लिलाम हुई कारन शी। रहे उ विश्वन, शिका विन शूनः, থাকিতেন এইক্ষণে গো হুৰ্জাগ্য এমন, শিতার চরণ. मरानन ना इहेन (भा।" ध कथा अभिद्या, आवाह काँ मिशा. জননী তাঁৰ বলিল গো। "वागि शुक्रहोन, ७ इत्रथ मलिन, হইয়া, প্রাণ তাজেছে গো। পাকিয়া মহীতে, পেলেনা জানিতে কেমন ছেলে পেয়েছে গো " একথা বলিয়া, নিশ্বাস ভ্যাজিয়া, সে ত্ৰঃখ নিবারি মনে গে¹া কহিলা, "এখন, গুছেতে গমন, করি এস মোর সনে গো 🛚 " অভিনয়-মন, চলে हुई खन. (मध्य ठावि खना खरन शो। ष्यान्हर्या यानिशा, शन्हार्ड थाकिशः, কেছ কেছ ভাবে মনে গো ॥ "দেবতা আছিল মানুষ হইল, হেন অনুমান হয় গো ।"

(कह दा लादिन, "दुखि दा हिलल, এ कड़ याजूय नश (भी !!" কেছ মনে করে, বাঁচে পুনঃ ম'রে, खना हिल एशिलांग (गा। পূৰ্বে দেব মূলি, বাঁচাইত শুলি এ य निक्त खन्धां य तथा ॥ আছিল সন্নাসী, হলো প্রতিবাসী. পাব কভ উপকার গো।" ७ दिर्वहनाश, ७३ घरेना॥, স্থ বাড়ে কার কার গো !। কিন্তু ফণে কণে, ভাবে কোন জনে "পুজিলাম এত যার গোঁ। দে, কে, না এখন, হলো প্রকাশন, প্রভুরাম পিতা ভার গো " किছू ७१ दत्त, हिना यह ग्रा. কত লোকে মানে ভায় গো। শত গুণ যার, চেনা হ'লে ভার. - মান পাওয়া হয় দায় গো ॥

জন্মভূমি জনসীর, পেয়ে দরখন লো। পেয়ে দরখন। পরমস্থেতে সুধী, শর্থ এখন গো,

শরৎ এখন ৷ ভাঁহার জননী দেখি, পুত্রের বদন গোঁ

भूट्यत वनन ।

কি মুখ পাইল ভাহা হয়না লিখন গো,

रयुमा लिथेन !।

যদিও ও সুখ কভু, নয় সাধারণ গো'.

नय नाभातम ।

তথু যেন মনে হয়. কেমন কেমন গেং

(क्यम (क्यम !!

কেন্না এখন এই জননী ভনয় গো

जननी जनहा।

পারের মাত্র বলা, অসক্ষত নয় গো:

याभव के बहु।

हान्छ नाष्ट्रीत है। म. शहना कथन हा।

যায়না কথন।

এবে সেই ছেঁড়া নাডী, গ্রন্থিত যেমন গো,

গ্রন্থিত গেমন।।

माजात बार्मला यक, नानम शानरन भा,

लानन शानात्।

ख्लानिए एक ऐकू रहेर्त रक्यान भी,

क्षेद्रव (क्यान ?!

মাভাপ্ৰতি শুৰ প্ৰীতি, করে বে প্ৰকার গো,

করে যে প্রকার।

छारत भारे वारमनारे, जामर्ग छारांत्र शा,

আদৰ্শ ভাৰার ৷৷

ইহারা সে ভাব এবে, গিয়াছে ভূলিয়া গো

গিয়াছে ভুলিয়া।

যে কিছু কৰিবে হ্বন্ধ, সম্বন্ধ ভাবিয়া গে।,

সমুদ্ধ ভাবিরা।।

यति धरे यांजा श्रुट्ज, तिटक् पर्यन ता.

বিছেদ ঘটন!

दना अकारहरक र्'रडा मा र्'रखा वयन शा

ना'रखा अयन ॥

ভাগ হ'লে বিজেদান্তে ইউলে মিলম গে .

क्हेल दिलन।

বিশেষ বুঝিত এরা, সে হুখ কেমন গো.

(म यूर्थ (क्यम ॥

পালিত পেটের ছেলে, খরিয়া বাচিলে গো

মরিয়া বাঁচিলে।

মাতৃহীন সম্ভানের, যা ম'রে ফিরিলে গো।

या यदा कितिला।

किटा ऋरथामन्न छात्र, मत्न दे चारनना त्रा,

मत्न श्रे श्राटमना।

त्त सूर्यंत्र (वर्श कारत, भागम करत ना भी।

गेरिइडीग्य।

পাগল করেনা গ

সাংসলা কেমন, ভাষা জানেনা শ্রং,
আহা জানিবে কেমনে!
মাতৃসঙ্গে পরিচয়, সজ্ঞানেতে এই হয়
কোন্রস জানা যায়, বিনাআখাদনে ?
এত অতুল ভ্রনে।।

যার ছেলে তার ক্রোড পেয়েছে এখন,
সাধ মিটিতে পারিবে।
কিন্তু যতনের গনে, যত ক্ষেত্র করে মনে,
পাঁড়ে পাওয়া ধনে,ক্ষেত্র তাত কি হটবে?।
সাধ মিটাতে নারিবে।।

জোড হ তে শ্যাকিলে রাখিতে সম্ভাবে,
তয় উপজে অস্তবে !
তই ভাববৈত দিন, অস্তবে না হয় লীন,
ততদিন স্বেহ থাকে, যে স্বভাব ধ'রে !
তাহা পাইবে কি করে ?!

যৰে শিশু স্তম টানে, হাসি হাত নাড়ে, ক্ৰোডে করিয়া শয়ন। তার প্রতি দৃষ্টি করে, সুখেতে যে ক্ষেত্র ক্ষরের সে ভাবের ক্ষেত্র, ধরে যে সব লক্ষণ । কোশা পাইবে এখন। স

মা, মা, বালে হামা দেয়, এনিগে ওদিলে, যেন লাড়্য়া-শোপাল! আপনি দাঁড়াতে হায়, থপ্করে বাদে যায়, ভাষা দেখি ধেই ছোহে, ছাসি ফোলে গাল গ নাহি সে ক্ষেত্রে কাল দ

ননীর পুতুল যেন, ক্রভ-গতি ধায়,
হ'রে ধূলার ধুসর।
আব আব কথা কর, যেন মধু বরিষয়,
সে কেছেতে লে সকলে, ভাবে মনোহর।
ভাহা দেখান ছুকুর!।

ভয়ে কিষা কুৰায়, কি, আঘাত পাইয়ং, ছেলে কাঁদে উচ্চ-রবে। দেখে কেটেযায় বুক, যে বেহে আনে এ ছুখ, ছেলে বড় হ'লে ভাহা, হয় কার ক্ৰে।? ডা কি আবার সম্ভবে।? থেতে খেতে যদি শোনে, ছেলে কাঁদে দুরে,
ধায় ফেলিয়া আহার!
অনাহ'র সহা হয় হেলে কাঁদা নাতি সয়,
ফি সেহের কাম ? আহা, শরতে ওবার ৷৷
ভাহা কে জানাবে আর !৷

শিশুর হউলে রোগ, রোগিখীর ন্যায়ঃ
করে নিয়ম পালন |
গত্তে নিলে পাতি ঘটে, শিশু কাঁদি কাদি ওঠে,
ক্ষেত্রমন্ত্রী বিরজে, না হয় ক্যায়ন !!
কাথা যে ভাব এখন !!

নাও এরপ যত, স্মেছের র্যাপার,
আর ছবেনা প্রকাশ।
কিন্তু স্মেছের স্কুডাবে, চিরনিন সমভাবে,
যে গুণ নিব্যে ভার নাহিক বিনাশ।
ভার সদাই উলাস।

अन्। खरन कथन्दे, भारतना (उमन,

কত সুধে খাওয়াইবে ॥

খেতে খেতে যাতে পাবে, নিউ আন্সালন, ভাষা না খেয়ে খাওয়াকে। অসুখী দৈখিলে পরে, হয় লবে জ্যোডে ক'লে কিয়া কাছে বসি, কর অঙ্গতে বুলাকে। প্রীতি-সলিল ছিটাবে।

কলাণের জন্য, নিজ কটে উপেন্থিবে

কড উপায় করিবে।

হথেতে ভাবিবে হথে, ছঃখেতে ভূগিবে ছখ,

যশঃ শুনি আহ্লাদেডে, আপন ভূলিবে।।

সদা উন্নতি চাহিবে।।

নয়নে হেরিয়া, স্থতের মুখ্।

শরৎ-জননী, পায় যে সুখা।

পাবে যে এ সুখা ছিলনা মনে।

আপনি উদিল, আপন ক্ষণে।।

পাবার হইলে এমনি হয়।

বিধির চাতুরী, ক্বার নয়।।

অবশ্যন্তাবী, পুত্র-শোক পাবে।
ভাই পুত্রে তাজে, সেরপ ভাবে।।

काल लोटं कंटन, शासित शृद्ध। जारशा नाहे, वांधा मर्रि ७ ऋरक !। এ সদ ব্রিল, শ্রং-মাড়া 1 ভব কাদে আর, ছংখের গাখা। "সন্তান থাকিতে, একি বিহাদ। নিরপাত্যতা, সামিলেফ বাদ।। প্ৰান পালনে, আম্বোদ্ থক ! লংসারে কিছুতে হয়না ৩ত ॥ দে স্বৰ্থ আমাৰে, কপালে নাই ! পোড়া কপালের, মুখেতে ছাই । কড়ই আমোদ, যথন ছেলে ৷ क्षकान यां का समाहे व्याल ह মুদ্ সানি কিবি ফিরিণা চায়। श्रामा ७ फि. निया माहेशः याद्य ॥ মা বিনা জানেনা আর তথন। মা ব'লে ভাই সে, ভাকে সঘন !। এ মধুরভাব, হ'লোনা দেখা। এই খেদ মোর, গালাণে লেখা [তথন শিশুর, মনেতে হয়। क्षबनी जयान, किছू हे नय़ !! ना (म'र्थ, क्रशं (मर्थ व्याधांत्र। দে'খে ভাবে, অৰ্গ হাভেতে ভার !!

যদি ভয় পায়, ডাকে মা ব'লে ৷ নিরাপদ ভাবে, যায়ের কোলে।। মায়ের ভাডনে, পাইয়া ভরা रमहे भार रकारण, निर्देश रश !। লালন পালন, এমন কালে ! करिटा मा मिला, विधि कामाटन !! ব্যাদ শিশুর, কোমল মন : বিষয়বিশেষে, হয় মধান। eि कि अर्डि कि. कामात आदम । জিজাদে মায়েরে, মধ্বভাষে 🛚 উত্তর পাইলে, কড়ই স্থাধে ৷ কেভিক প্রকাশে. সহাস্থ্য মুখে ॥ (खरन नगरा खननी इ'रश् ! यूर्य मा कहिनू, खनरह ल'रह !! শৈশণের ভাব, দেখি নয়নে। र्भारत कि इहेर्द, इज्ञनां मरन ॥ ক্রমে বয়ো জ্ঞান, বাড়য়ে যভ। আখাদে বিশ্বাস, জনমে ভত ৷ পারেতে বখন, যুবক হয়। (महे एट्ल थहे. यान ना मधा।।° জমেতে দশার, পরিবর্তন। দেখি হয় কভ, সুখিত মৰ।

1.45

यिनि अथन, यूवक (इतन ।

पर्कवाद स्थ, निश्चिष्ट (इतन ।।

कृत्य स्थ द'तन, क्यम द्या ।

वृत्विष्ठ नित्नमा, विवि निर्मय ।।

भावर-भाजात, ज्ञनय-भादः ।

थमन व्यस्थ कृत्व विवादक ॥

किन्तु (यह स्थ, कहेन जात ।

रम स्थ श्रीवन, वस कि ब्यात ।।

श्रीकांकत यहन, श्रीकांभ भास ।

श्रीलांकत यहन, श्रीकांभ भास ।

শরৎ এখন, পাইয়া ভবন,

মিলিয়া স্বজন-সঙ্গে।

সঙ্গেষসহিত, গৃহি-জনোচিত,

ব্যাপারে ব্যাপৃত, তজে।।

এই বিবরণ, লিখিয়া লেখন,

কটকে প্রেরণ, করে।

সাধুর সদনে, সংবাদ প্রেরণ,

এতদিনে মনে, স্মুরে।।

ক্রাসীমবাজারে, বিচারকাগারে,

লিপি প্রেরিবারে, চায়।

কেহ সেই ক্লেণ, আসিয়া সদ্মে,

কছে হৃষ্টিমনে, উল্লেখ্য "ভোমার প্রেরিভ: সেই দুশ্ররিভ, মাধ্ৰে বিহিত, দও। চির-নির্বাসন, উদিত শাসন. সে কি সাধারণ, ভণ্ড !! 'বিচারের পতি- তব বন্ন অতি. ভাবে অবগতি, হ'লো ৷ ভোষার কারণ, সচিত্তিভ মন. किरव नवसन ज्या। ফহিলা আমায়, আসিয়া হেথায়, প্রেরিব ভোনায়, সেথা। ना शिल जार्थनि अभित्य यथनि. আলিবে ভখনি, ছেখা॥" এ কথা প্রবাদ, পত্রিকা প্রেরণে, काख क'रहा मत्न, कृदि । 'সুহ্লদের কথা, করিলে অনাথা, মনে বড় ব্যথা, পাবে ॥ অবশ্য সে জন, করেছে শ্রেণ, विश्म-घडेन, या । আমার জীবিত, রয়েছে সঞ্চিত. শুনি দে সুখিত, কত !!

विद्रमंथ आयात्र, नव नमांहात्र.

শুনি আরো তাঁর, স্থ। বাড়িয়া উঠিবে, বাইন্ডে হইবে,

দেখিয়া কমিবে, হুখ।। তিনি সুষমার, পিতা যে প্রকার, দেখিনো তাঁহার, মুগ।

প্ৰমা যেখানে, ছিল সেই স্থানে. দেখি পাব প্ৰাণে, সুখ ৷৷

চ'লে যাই আজ. করিয়া সুসাজ,

বিলক্ষের কাষ, নয় ।" ইফা বিভারিয়া, মায়ে প্রণিনিয়া,

বিদায় চাহিয়া, লয় ।! বাহক ডাকিয়া, শিবিকা আদিয়া,

ভখনি চলিয়া, যায়। বিবা নানি ছিল, তাই নিবর্তিল, অসুখী হইল, তায়।।

यक्षे मर्ग।

এখন বসন্ত নাই, ঐাত্যের পর্যায় ।

কিবা বড় জাগা রাছিয়ান, এক মুন্দে রাজি অবসান,
দেখিতে দেখিতে, উয়া উদিল ধরায় ।

শততের নিজা ভাঙ্গে প্রভাতের বায় ।

শয্য ত্যজি গুড-যালো করে ক্রেমে নিবা নোবভাব বা
ধ গতুতে ও সম্যায়, নাগে চনা নাগ গ

নিবাব থাণের প্রান্ত, বজুর সমান্তর ।
ভালার বাদেন, কার্যাগুলিন ভালারি মানন,
থমন জ্বল্প গুণ, ঋজুতে কি সাজে ন দেখা দেখি এ মুদ্ধান্ত, আইল কি কাবে।
সকল জগণ-অভিরাম, অজুল মুখের প্রিমধ্য চ্রিখার করিল ভেমন ঋতুরাজে।

কে বা ওরে সেধেছিল এস এস ব'লে।
এসেছে আত্মক নমু-ভাবে, ভাহে আরো সমাদর পারে
ভা কোথায়, উপ্রমূর্ত্তি, দেখে অস জ্বলে।।
বদ্যপি ও জ্বোরজার, চিরকাল চলে।

दिने मार्थक महेरल भिष्ट, उ मूथ ल्काट करद लिएह, कृत भार्य थर्क, वर्श ममाभाक केरल ॥

সাত্প ছুবিছে হেন, উপারে বসিয়া।

নামনি দিনের শমন, পাবনের মুপারে মাজন,
জগাম জীবন তরু, লারে ঝলসিয়া।।
জীবন কেবল বাঁচে, জীবন চাহিয়া।

ানের কালে যে তাঁবন, শতিল খাকেন। সর্বাজন,
শীক্ষা হা থাকে, ভাও পারে লুকাইয়া।

বাহের কি নাচি, রুই পুরের ভিজার।
পি অন্তর দায় জলে, আই ডাই করি ফেন-জলে,
রাথে প্রাণ পাখা, বিনা পাকে কি অস্তরে না
ভাতত্ত্বে এমন, আহা, বাহিত্তে যে করে।
বিবাধন ভীত হয় মুন, দেখা হ'লে মুদ্রে নয়ন,
বাধি কেমনে ও তর বুণি বৈশ্য ধারে।

শিরে ভারু, পদতলে তথ্য-খোলা ধরা।

ন বলদে উন্ধ বাতে, গাছুকা, ভানুত্র, পদে মাথে,
তথাপুিচ ঘর্মবেগ, নাহি যায় ধরা।।
জুডা, হাডা, কোথা পাবে, হঃধী ছঃখে জুরা।

দুড়ি কিরে উভরায়, বিটপির ছায়া ভরসায়,

সরিষার ফুল দেখে, চারিদিগে ভরা!

যুগকুল আকুল, কান্তারে ক্লান্ত-কায়।
ভক্ষ সরঃ নাহি পায় জ্বল, নরীচিকা দেখিয়া চক্তল,
জ্বলাশয়ে ধায়, কিন্তু জ্বল নাহি পায়!।
চাতক জ্বদে বলি, জ্বদেরে চায়।
ভক্ষ কঠে ডাকে গাভীগণ, সকাতর স্বারি জীবন,
বক্তগায় কভ জীব, জীবন হাবায়!

কিন্তু কিবা, বিধিন বিধান চমংকার। **ইকালেও হেন তুথ পাই, অন্য কালে** তেমনটী নাই.

> ফলভঃ প্রান্তেরি প্রথ, স্বারামে সপার ৷৷ কুপোনক, বট-চ্ছায়া, শীতল-স্বাগার.

জলকণাসহিত সমীর, দিবা-নিজ্রা, সতুষার নীর,

निराप कि स्थी करत, नर्ट टनियात !!

নিদাখের দিবাভাগ, ভীষণ রেমন।
রক্ষনী ভেমন যদি নয়, রেজি বিনা কিছু পিঁও রয়ভথাপি পরাণ করে, কেমন কেমন।।
ঘর্মে ভিজা শয্যা, ছট্ ফট্ করে মন।
মুশা ছারপোকার দংশন, সর্বা অক্ষে করে জ্বালাভন
হ্যনিটো না হয়, সারারাত্তে এক কণ।।

3:

কেবল বিহান, সন্ধ্যা, জীতে মনোহর !

সংগতে বাচুর সঞ্চার, কায়া প্রাণে আমার অপার,
নান মনেও স্থা, লভবে বিহুর ।।

এ স্মরে বেই জন, ল য়ে অবসর ।

াকুল, সরোবর-ঘারে,উপাবন, ফানন, কাম্বারে,
বেজায়, সে পায়, সুদ্ধ সভ্তেব-সারেব!!

মানব-শ্বভাব, করে গাডাপুদেশাসন ।

াই মনে পড়ে এ সময়, অনিল, সলিল, শীভ, জেয়,
শিশিরেতে বিষ, এাজে মধুর মতন।।

অনা সময়েতে হবে, অবশা আরণ।

দাযের দুই সন্ধিকাল, কিন্তু খেদ আর রেজিলাল,
ভূলেও পড়িলে মনে, কাঁপিবেক মন।।

ববে, প্রথর ভাস্করে, পশ্চিম ভ্ররে,

ক্লিতে ভূচরে, দৃষ্টি করে।
হেন সময়ে পুকর, উদিয়া সত্তর,
ছাদিল ভাস্কর, দিবাকরে।।
যেন, ভূবনে কাতর, দেখি জলধর,
ঢাকে ভানু-কর, দরা কারে।
রুঝি, ভানুরে এমন, হলোনা সহন,
আরম্ভিল রণ, ক্রোহভরে!।

JAN.

30

ভাই, ছাড়ি ভুত্ত্কার, খড়ের আকার, भक्ति वाशनात्र, श्रकानिता থড়, করি আরহর, নাশিতে অন্বর, অতি ঘোরতর, গরজিল '। (वर्षा উथन् माध्य, काँ शिल ख्रव, ধরণী কাতর, অতিশয়। কত তক উপাড়িল, মন্দির ভান্দিল, ভরণী ডুবিল, জলময় !! **फीर, घानक महिल, या एक व्यामित.** কাঁদিয়া ফেলিল, পেয়ে ভগ্ন। धुना, ध्रम छेडिन, अस्मिक छादिन. ধরা ওঁডাইল, নাহিরয় !৷ হলো এমন আঁধার, সব একাকার, চিনেল ওয়া ভার, ধরাকাল! এযে, মহৎ উভয়, সুান কেছু নয়, মধ্যে থাকি হয়, ধরা নাশ !। ঝড়ে, এত যে যুঝিল, উড়াতে নারিল, व्याकां म चित्रिल, जलक्रता ! শেষে, মানি পরাজয়, লুককায়িত হয়, (यथ दब्रवज्ञ, अब अदि ।। আর ক্ষারিতে নারিল, লক্ষিত হইল, चांत्र थारिनिन, अखांहतन ।

छातू, लुकहिल (यह, (नँटा शिल मिह, कि कतिङ धरे, त्रग-चुला ॥ যেগ, গৰ্জ্বৰ করিছে, বিছাৎ ছুরিছে, হাদঃ কাপিছে, দেখে ওনে ! ভারু, এখন থাকিত, হইত চূর্নিত, ভাই পলায়িত ভয় গুণে !৷ মেন, ভাষান ধরায়, ফার্ণেকে ভিজায়, युवा तड ब्याह, छल-शाद्ध । ননি- ভারার পাইভ, তেজ, কি রাখিভ ? নিভায়ে ফেলিভ, একেবারে ।। लारक, ताल विवयर, वज्हे भहर, विभागात मर, कांग (मर्द । একি মহতের গুণ ? যেমন আগুণ, রাগে করে খুন, থেকে থেকে ! দেখ, গুণ জলধুরে, ধরা দন্ধ করে, मिथि छातू-करत. चाक्कानिल। बर्ड, कड वियानिल, डाइाउ गहिल, वत्रि मिलल, गुड़ाईल !।

हत्ना, पूर्वगांश ध्यम, भत्न ध्यम, निविका श्रादाही हत्न। धना, प्रःथी विद्यातात्र, প्रांग तांथा गांस,

শিविका दाविए तल !। কিন্তু, আর কভকণ, রাখিবে ভেমন, मिनां उन्धिन, बाउ। (भरम. विशंप (निविधा, निविधा का जिल्ली, শারং লাফায়ে, পডে।। হলো, ভার দুদে ভায়, ঝড়েতে ঘুরায়, শিবিকা চড়কা, প্রায়! কাঁপে হাখিতে না পারে, ভ্যাজিয়া ভাষাকে, বেহারা প্লায়ে, যায় ॥ -মিলি সকলে সভরে, সাঁকোর ভিতরে, शिशा दाँ। हार लाग । (स्था, शुक्तिशा धुक्रिशा, त्राक्टि वानिशा, শিবিকাও পায়, জাণ ॥ व्यात्भा, तराएत मगरत. मारकात वा भारत. मित्रांभित मत्त्र हिला। পরে, বরবিয়া জল, কাডি নিল স্থল, क्षांट्ड त्यमारेशा, मिल ।। নাতি আশ্রের স্থল, শরৎ চঞ্চল, শিবিকা ভিতরে, যায়। ভগ্য-শিবিকা-ভিডরে, জল বার্যারে। পভিতে লাগিল গায়।

আহা, বডেক বেছারা, ডিজি হয় সারা,

শেষে সবে, বিচারয়। रकन, माँडाह्य डिक्रिय, मञ्जूश महिद्र, 5'ल याहे. (लाकालग्रा लक्ष्याः भिविका कार्यास्त्रः शिलका व्यक्तिस्त নিকটে পাইল, গ্ৰাম ৷ भिथा एक (कह नाहे, हेएत नराहे, शर्मत कृष्टित, भाग ॥ थारक, विशान एक कात्र, छाडिश विष्ठात. পরিপাটী হছে: আশা 🤊 ্সই, নী5-নিকেতন, স্থারে ভবন, ভাবিয়া लहेल. दामा ॥ লাবে, পাইল আন্তার, মের হ'লো কয়, আকাশ বিকাশ, পায় ৷ (দ্ধে, দিবা নাহি অরে, চক্র অবভার, क्षिप्रेनी क डिल्स, जारा। তাছে, গাহার আশ্রয়ে, দেজন বিনয়ে, ° কহিল, "অস্তাজ, আমি। আমি কেমনে বলিব, আভিথা করিব, ছব কি নিরয়-গামী।? ভবে, বাসনা আমারি, আজা হ'লে পারি, कन, मुन, व्यानिवादत ।

ভাঙ্গা করিছে:তাহণ, থাকিলে দুক্

রহ তবে, দেবাগারে ১ অই. কর নিরীকণ, দেব-আয়তন व्यादलांक चुलिएह, (यथा) धामा, लाह्य याचे मान श्रमयक्त জাভিথা হইবে, সেথা।" দেখি, অস্তাজে ভক্তরা, গুলির দতভ भार मध्योति, शार ! জান্তি, মহৎ-আপ্রায়ে, ভাবিয়া সদয়ে, সাদরে কহিলা, ভায়। 'লাধ: মেনন হইকে আছিল ক্রিপে यायमा कारमात शारम । ভূমি, প্রকৃত সজ্জন, ভাবিনা দুষ্ণ धमन माधुत दारम ॥" গুৰী, কুভার্থ মানিয়া, খড়ন করিয়া, থাওয়াইয়া ফল, মূল্য হলো, এমন স্থিত, মনের সহিত, না হয় ভাহার, তুল।

বোর-রজনী, স্তব্ধ-ধরণী।
গৈছে অস্তাচলে, চ'লে নিশামণি।।
নিটো নাহি শরতে, দেখিতেছে জগতে,
ভনে সহসা যেন, বীণা হেন ধানি!

ভাল কারে শুনিল, নীণা নতে বুঝিল, ডুছ মুদ্ধ প্রত্তে, কাঁনে কোন গুলী !!

্সালি জীবনে, বিব জীবনে।
নারি লুঝাইছে, আশা দিয়া মনে।
আশা কছু গোচেনা, মন ভাবে বোজেনা,
বিনা আতারে ভারে, রাগিব কেমনে ।
ভাবনার আকাশো, যদি পাই আখাদে,

আয় কভ ভ্রমিবে, বিশ্রোম বিহরে 🕡

ধরি জীবনে, অভি যতনে।
ভাৱে ভালবাদি, নহে দে কারণে।?
ভালবাদি কারারে, যদি পাই ভাহারে,
প্রাথমত সম্প্রীতি, এই আকিঞ্চনে।
পুরিলনা বাসনা, কেন সব যাতনা,
বাতনাও নাশিব, কায়া-প্রাণসনে।

বিনা প্রাণান্ত, দে প্রাণ-কান্ত।
নহে পাইবার, বুঝেছি একান্ত।।
প্রাণান্তে যে মিলিবে, সে আশাও নাশিবে,
হেন ভাবে যদ্যপি, থাকিব জীবন্ত।
কত দিন হইল, এবিছেদ ঘটিল,

প্রাণাত্তেও নিরাশা, ঘটেনা নিতান্ত।।

ক'রে সঞ্চিত, হই বঞ্চিত।
পুনঃ পাব আশা, ছুরাশা নিশ্চিত।
ছুরাশাও পুরিত, তাগ্যে যদি থাকিক
এ জীবন থাকিতে, হইবেনা হিত।
মন্দ ভাগা জীবনে, ভাল, হবে মরণে,
ধেপা মনে ও আশা, হভেছে উদিত।

ভারে পাবনা, মিছে ভাবনা।
হ'লে পাইবার, এমন হ'ভোনা।।
বিধি ভারে দিবেনা, চাহিলেও পাবেনা,
ভাই নিল হরিয়া, করিয়া ছলনা।
যদি ল'য়ে পলালি, ভবে কেন দেখালি,
বিধি হ'য়ে করিলি, একি বৈবেচনা।

কোথা রহিল, কার হইল।
সে ধন অমূল্য, কার ভার্মো ছিল।
জামাহ'তে ছিনারে, কেবা দিল বিলায়ে,
আমি কার ল'রেছি? তবে কেন নিল?
কার ভাগ্যে কে খেলে, কার ধন কে পেলে,
কেহ মুখে ভাসিল, কেহবা কাঁদিল।।

শক্তে যে ছিল, বাদ সাধিল।

শক্ত যোর, ভারে- কেন ছখ দিল।

বটে সেত আমারি, আমিও যে ভাহারি,
ভার ধনে ভাহারে, বঞ্চিস্ত করিল!

কেটে মরি ভাবিয়া, অভাগীর লাগির।
ভাহার কি কপালে, এড লেখা ছিল।

?

ওরে আশারে আর আমারে!
বালোনারে পাবে, আবার ডাছারে।'
ভার তই কগানে, পাইবার ত্বাতে,
ফাটিরাও হ্লার, বাঁগে আপানারে।
সংক্রিণ আশারে, ব্যাইছ আঘারে,
বারিবিশ কথাতে, ত্রা যেতে পারে গ

तक्किमी काल यहि. काँदि (कर इति । लाहा जरुना जिने, वादक स्थि रुटन ॥ एरेन्ना (नाकाजूना, कान मोत्री कींदि । छनि कठिन मदन, मोदि देश्या वादि ।। এভাবে वित्रदिशी, काँदि चानि स्थे। छनि कारिमा स्था, (हन कान प्रक ।? वित्य वित्रद्रिण, (भार्ष मन बान । स्रामा कि स्थान करु, स्थ दन छोत ।।

काँ पिट्ह विविहिती, उक्तमी भगरत। কৃতি বেদনা যাহা, বিধিছে হৃদয়ে 🖂 ভানিয়া শরতের, কেঁদে ওঠে মন। त्यम काँ निन् निष्ठ है महत्न अक जम ।। जशास, श्रामांदाथा, दिवह अश्रम যেন খেদেতে, এক আত্ম দুইখান র্ঝিল শরতের, ব্যথিত হ্রয়া 'লাহি বিরুষ্ট মম, সম তাও নল 🖟 পেছেছি, আজি আমি দ্য সুখে এখী, त्वादक ऋकृत्व केंग्नि, क्टा इटकाम्या ॥" इलिल भौति भौति मक शकूमारत । ণাভি বাধিল আসি, সেই দেবাগারে ।। দেখিল খোলা আছে, মন্দিরের ছ'র ৷ দীপ জলিছে, কিন্তু জ্যোতিঃ নাহি তা?। কি রূপ দেব-মূর্ত্তি, প্রকাশ না পায় ৷ कर्ल श्रकारण, प्रति रेखंद्रदेश ज्थात ॥ লুটিছে ধরাসনে, একের মূরতি। বসি দ্বিভীয়া পাশে, শোকাকুলা অভি। হ'য়েছে নিবর্ক্তিত, বীণাসম স্বর। এবে ক্রিছে, অন্য স্বর স্বভন্তর। দ্বিতীয় স্বরে সেই, দ্বিতীয়া রমণী। ধীরে কৰিছে, মোর কথা রা**শ** ধনি !৷

ংসাণার অঞ্চেতে গুলা, মে'ধনা গো মে'ধনা। অধীর হইয়া, এমন করিয়া, গুলায় পডিয়া,

(श'कना (शा रथ'कना ।!

ক। দিলে কিছবে আর, কেদনা গো কেদনা। যন্তই কাদিবে, শোক উথলিবে, ভেডই বাভিবে,

বাদ্ৰনা গো হাত্ৰা ।

কাঁদিলে বিচ্ছেদ ছেড়ে, ফারেনা গো ফারেনা। কাদাতে যে চায়, শুনিলে করোয়, দ্যা কড় ভায়,

करतमा तो। इत्यमा ॥

ে আছে লংবেণ ভাত, রবেনা গোরাবনী ৷ অভিনেত্রির যে বেথি আকার, জীবনেরে ভারে,

नरवना ला मर्बना॥

গ্রেনা উপায় স্থাপু, কাঁদিলে গো কাঁদিলে। ে দে কেঁদে গায়, পেলেয়ে দশায়, নাহি চেনাযায়,

(मिश्ल भा मिश्ला

कतिदव (भा कतिदव ।

वाहिएक वामना लागि। क'इना शा क'इना। दन्दे रेभर्या धदा रूपित स्क्रमात श्रीत श्रीत कंत्र,

भातना भा भारता ।।

ভাবিছ, বাহারে পাওয়া, যাবেনা গো যাবেনা।

3/4

महिवादि हां अवि खिदि शीख, याँदल शदि खाँद शादिका शीप शादिक को ॥

কেন ভাব ভারে আর, পাবনা গো পাবন:)
ভয় মোর মনে, পাবে সেই জনে, পাইবে কেমনে,

ভাষনা গো ভাষনা ৷

अकारस नेचंद्र कतः नाममा-(भा नापमा । माग अहे वत्र, भारे (महे वत्र, भृताद नेचंत्र,

कांभना (भा कांभना ॥

অথবা ছজনে চল, ভ্ৰমিয়া গো ভ্ৰমিয়া। কোণায় সেজন, কৱি অস্থেবণ, সকল ভ্ৰন,

চাহিয়া গো চাহিয়া।

কৃতিরু যে যুক্তি দেখ, ভাবিয়া গো ভাবিয়া। এই সুযুক্তি, শুন গুণবৃতি ! যাবেনা দুর্গতি,

कें पिया शा कें पिया !"

এই সব কথা ৰ'লে, বাসনা ধার্রিয়া ভোলে,
গায়ে হাত দিয়া দেখে, নিজিতের প্রারা।
মুমায়েছে সহচরী, ইহা ভাবি ক্রোড়ে করি,
শ্যার উপরে ভায়, শোয়াইতে চায়।।
ক্রোডে করি দেখে ফেন, কার্চের পুড়ুল হেন,
ভাহা দেখি ভারে "একি, হ'লো আচ্ছিত।
'মুমাইলে হ'তো কায়, এল খেল লভা প্রায়,

এগে দেখি শ্বসম, হ'রেছে স্তম্ভিত।" ধীরে ধারে শোঘাইয়া, নাশিকায় ছাত নিয়া, (नर्थ "करे वरंद्रनाज, नियाम शवन ?" ভৈরবি ! ভৈরবি ! ব'লে, ভাকিলেক ধরি গলে, উত্তর না পেয়ে হলো, ব্যাকুলিভ যন !৷ কি করিবে সছুপায়, ভাবি কিছু নাহি পায়, **একে একাকিনী ভায়, নিশীথসম**য় : विजीश टिबर्ग बाद्य, बंदर भागनिमी शाह. "कार कि कहेल" र'ट्स किट्न भारा करा !! उत्क (जिस धराभाव, करूना रहना कांद्र ? শরভের হানরেতে, দরা উপজিল। "कि इंता कि इंता वन," धरे विल महक्षन, रिशदा रेख्यवी-शार्म, जामि प्रशं मिल ।। ভিরবী পাইল বল কাছে দেখি অনুবল, পরিচয় বা লইয়া পরিচিত গ্রায়। কিছিল বিনয় করি," যাতে বাঁচে সহচরী, উপায় করত ভার, হইয়া সহায় !! कान द्वारा नाहि हिल, गहमा थ, कि इहेल, যদি কিছু জান এর, কর প্রতীকার।" শর্থ সাহস দিয়া, ভৈর্বীরে বুঝাইয়া, আলোক নিকটে আনি, দেখিল আকার ৷৷ शतिशान त्रकांच्य, कि लावण मरनांच्य,

আহা যেন কাঁচা সোণা, অনল ভিডরে ৷ অভিনয় শীর্ণকায় যৌবনের প্রতিভার र्थात्रान्त कृति एम. ब्रन्थन करता। ইহা কি পরাণে সগ্র? হেন মূর্ত্তি পদি রয়. চঞ্চলতে অচাঞ্চল্য, একি বিভন্তন ' ইহ' ভাবি বড হুখে, জন দিয়া ভার মুখে, करिला पर उपनि कहा राजन रीजन ॥" এই মত প্রভাষ্ণ, নিশ্বাদ বভিল কাণে, ভর্মা জন্মিল ভাবে, র'য়েছে জীবিন্দ। मीतरराज प्रदेशमा जाति करत मितीयान. শ্বজের দৃষ্টি কিন্তু, চাঞ্চল্য রহিত ॥ ब रूप्टिंड मुक्ति शाह, विवित्तिहा छेट्ठे कांग्र. আশ্চর্য্য লামগ্রী দেখি, হয় যে প্রকার 🗓 " गांभाना जान्हरी नयं. शास्त्रक अवहे स्य, সুষ্মার ভূলনার, অভিন্ন আছেরে।। চিত্তে জাঁকা সুষ্মার, সঙ্গে এই ললনার, বেশ আর শীর্ণ কায়, ভিন্ন তুলা সব! কেবল সুষ্মা ভার, জীবিত নাছিক আর. এই জ্ঞানে এই সেই, ভাবা অসম্ভব ।। স্বমা এই আমার, এ বিশ্বাস হ'লে ভার; কি আনন্দ হ'তো ভাহা, ভাবিয়া না পাই। इः थ ना इ'ला विषुध, किताल आंत्रित छथ?

नम्भ (एथि (य सूध- इत्ना कहे छाहे।। 'বরঞ্চ দেখিয়া ভায়, চিন্তা করি স্থানায়, বিষম বিরহ-ছঃখ, বাজিয়া উঠিল। कंटिनाब काल मन्न, कर्यों देशरी पनि हरा किस गर्भ मुहिएशा, जिक्कित लागिन।। (न(थ राज भारत जोत्त, "वु विलोग अनु कारतः समया-दिवस्य सात्र वाथिक मिथिया। বিধি হয়ে দরাময়, ভূষিতে মোর হৃদ্র, श्रमात वर् भा जार्था गिरिशा। कार्यकत अवसास गाउँहा य श्रमतीय, ইছারে সুখ্যা ক'রে, দিকেও যে পারে। হনি বিধি ভাই করে, রেখে দিই বক্ষোপরে, 🗋 গ্রাণসভে স্থানান্তর, করি কি এবারে গ अथवा निर्द्धान हो। य. मच थ विमरा थाकि. দিলানিশি **স্থশশী, হেরি তৃও হই।** ·श्रदारम नामना नारे, गृहि श्वानाश्वरत यारे, ভায়ার সমান ক'রে, সঙ্গে সঙ্গে লই ।। রখা করি আকিঞ্চন, বিধাতা নহে তেমন, म'त्त পরে ফিরাইয়া, দেয়না কখন! श्वीरत महा नाई, नजुबा कि इःथ शांहे, পার-ছঃখে ছঃখী নয়, বিধিও এমন ।। कड इःथ পाइ यामि, जात्म म अखरीयी,

मानूष अपन चुला इश कि निर्मश ?

महाएउ भन डे. (त. कि. (त. ए. ए. ए.) के. (त. कांडर डांडांत भीरण, कि. (त. विनश्वा को.).

अपन विश्वित आकि, (त. कांडल विनश्वा को.).

स्थात जूला मूर्डि, (पारत (पथाडेल ।

आकि उच्चरण (पात. तकनी करहरू (चार एडेवीत पत्रणाम, श्वाण मूर्डिंग ।)

डालिलाम निर्म्मारम, श्वाण मूर्डिंग ।

डालिलाम निर्म्मारम, श्वाण कांडिंग ।

डालिलाम निर्म्मारम, श्वाण कांडिंग ।

द्विशांत खबूत्रण, अने दिख्यीत तथा, दारिशांत खेशियान, स्थित कतित ॥ अने यह विद्यानान, अने धांत्र अक यान, भारत विद्या (गहें दिख्योत श्रीख । अने दाह्य खान (शहर, मिस्सीय पूर्ण (वृह्य) नियोग्यत मह पूर्णा, खाल्य त्रुल्यकी ॥ नेवा पार्चि महोनीत, नप्तान विद्या मीत, गूँ जि थात किंग्य वाल, 'कि व'त्वाह वेल था। । श्री साम! कल्या कथा, खान वाल यान। वाथ (कात मना प्राथ शहर, खान वृद्धि वन शा। ।'' स्वयाद महान्यान, खान नाहरूव यह,

व्यक्तिश अद्यव्यक्तिः मिक्क स्वाधः श्री।

व्यवसङ्ख्याकात, शंक्षि इंदल भेष्ट्रा श्रीहर

यरम थाकि लूजिकिया, शिख्नि धताम ॥

ভিত্তি অকস্মাৎ, একি গতিল।
প্রতিবাদী কেন ড'লে পড়িল।
প্রগো ড়ুমি কেন, এমন ছ'লে ?
মুমের ঘোরে কি পড়িলে ড'লে ?
ভরে যে বাঁচিনা, ভনাত ব'লে,
এই বনেথাকি কিবা হছল ।
ফ্রমা-সঙ্গিনী, যভ স্থায়,
না পেয়ে উত্তর, ভাবিষা, দার,
কিংলো বিশেষ, বুঝি আশায়,
আলো ধরি, মুখ পানে চাহিল।।

সঙ্গিনীর লাগি ব্যাকুল ছিল।
ভাই আংগেঁ দেখি, নাহি চিনিল।।
• আলোকে আকার, দেখি এবারে,
সে জন শরৎ, চিনিতে পারে,
আশ্রেণ্য ভাবিয়া, ব্যস্ত-আকারে,
''এই যে শরৎ'' এই ভাবিল।
গুহা হ'তে বাযু হ'লে কোচন,
বেগেতে ধ্বনিত হয় হেমন,

खानामात्र धानि क'दत्र উठिल ।।

त्म कथा खिनिहा, स्वया धनी।
निक्र विक्रिके क्रिया खमि।
विक्र विक्र स्था शिन हु हि हा।
स्था खिन खान, जन कि विद्या ।
स्वयक्षीवनी, यक्ष खिनिहा,
स्व खन वाँ कि, केराना एक मिने।
''वित्र कि । कि कथा, खनानि वाँ ति,
स्ना कं ति कि, यूष्टानि खीरा ।
कहे कहे," विन हारह राश्वान,
भ'एड खोरह खाइ, हारह-मिन।।

महाजन करत कति यंजन।
नम्रान नम्नन ह'टला शिलतः।।
मूथ कथा नाहे क्विल होसः
ट्रिन ब्लाम हम, दिश्व दिम्ना गोमः
स्थ चारम, हथ नहिम्ना गोमः
स्म व्याप्त, हथ निम्ना नहिन्
स्म थातात हिम्माना नहिन्
स्म थातात हिम्माना नहिन्
स्मन मिना भूदम निम्ना

जीथि-भथ निया करत कंत्रण ॥

মনঃ ব্রি করি, বছ যতনে ।
শরৎ কহিল, 'হে বরাননে !।
তুমি কি স্থমা সেই আমার,
নারে পাব আশা, ছিলনা আয়,
নামি কি শরৎ, সেই আকার,
কিয়া আহি, আর কোন ভূবনে গ্
অথবা এও কি, সেই অপন,
প্রতিরজনীতে দেখি যেনন,
কিয়া বিধি মুঝি, পুনঃ সূজন,
করিলেন ভোমা, আমা, ছজনে ॥"

শরতের রূপ, দেখি নয়নে!
শরতের রূপী শুনি প্রাবণে!!
ভূথাপি স্থবনা, বুঝিডে নারে,
শরৎ এসেছে, সাক্ষাৎকারে,
যানে ভাবে বুঝি, এই প্রকারে,
দেখে, শোনে, লোকে মোহ-যোচনে!
প্রাই হইয়া, কণকাল পারে,
বাস্ভভাবেতে, প্রিয়-হাডে ধরে,
হারীন রুডে, পুনঃ দৃতি ক'রে,

যেমন ভাষারে, ধরে যতনে !!

লাশানুতবে, শারং বুনাল।
"দাৰণ বিরহ আজি ঘুটল ॥
প্রেয়সী আমার জীবিত ছিল,
ভাত্তি মিহামিছী, বাদ সাধিল,
বিধি এত ছুখ, ভালে লিখিল,
'এই কথা বলি কেনেউচিল।
অহমাও সেই ছুখে ছুখিনী,
ধানিল হইয়া, অনুতাপিনী,
ভাব দেখে শুনে, কাঁদে সৃদ্ধিনী,
কাঁদি যেন ছুখ দূর হইল॥

শারং জুস্থির ইইয়া, রোদনে বারণ করিয়া, নিজ বস্ত্রে প্রেরণীর, অঞ্চ-বিন্তু মুছিয়া। জ্বাডে লাগিলা চিবুক্ধানী, বামহন্তে ধরিয়া।

ভিমন বিগদে কৈমনে, ফিরিয়া পাইলে জীবনে, বেঁচেছ ভূমিই কি**য়া, পিতৃ কন্যা ছুজনে।** কি ভেতু ভৈরবি-বেশেতে হেথা;ভাজি নিজ ভবনে।

[ু]পুন: কি আমারে চা**হিয়া, খুজেহিলে সেথা** জমিয়া,

কি মনে করিলে মোর, দেখা নাহি পাইয়া। বল বল প্রিয়ে ! সে সব কথা, শুস্থ হুই শুনিয়া গাঁ

বাম্পুসনগদ বচনে, কাহে রামা প্রিয়-সদনে, "পাইব এমন দিন, শুনার দে কথনে। প্রাণনাথ। ইহা: হ'ডোনা মনে,জাগি কিলা স্থানে।

এননো দে কথা করিয়া, ভয়ে উঠে প্রাণ করিয়া, দর্গর সমরে ভোষত ভূমিশাখী দেখিয়া। লুকাইনা পিড়া, শিবিকা-মধ্যে, গুপ্তভাবে স্পাসিয়া।

বাংকেরা ভয়ে ভাগিল, দন্ধারা স্থাবধা পাইল, শিবিকা লইয়া কাধে, ক্রডগতি বাইল ৷ কাতর হইয়া কাঁদিমু কড়, দয়া নাহি করিল !৷

নেধিয়া সে ভাবে তেমিনে, তুঃধ জুলে হাদি মাঝারে, দেখিতে দেখিতে আসি, মূর্ছা ধরে আমারে। হাগতে দেখি, এদেছি যেখা দেটা বন আকারে॥

ভোষার সে দশা ঘটনে ভন্ন না হইল মরণে, বৈধনা হইতে ভন্ন, নারীর কি যরণে ! সংরিবে বলিয়া, ভোষার শক্র, মিত্র ভাবি কেণে ্রাঃ বাহনু চাহিয়া মরণে, কিন্তু নেই সব জন্জনে, না মারিয়া সমর্পিল, নিজ প্রাভু-সদনে : প্রাহু ভাহাদের, মাধন মূর্ত্তি, ব'মোছিল নিজন্তি '

মাধ্বে পার্নি চিনিছে গবেখেছ রোঘাটে বসিংক সুবাচার ইক্সা করি, মোর পতি কইছে : লাটিয়ালগণে, পাঠায়েছিল, তব প্রাণ নাশিচে চ

আক্রিয়া পিডেবে সন্দো কছিল সংগ্ৰহদনে
ভব জাতি ধর্ম রিকঃ, হ'লো আজি বডনে
যে সংগ্রহমা নেখিলে সবং তব ছিড-কারণে ৷

মাধ্য একথা কহিলে, পিতা ভাষি ছুখ-মলিলে কহিলা, "মাধ্য তুমি একি কর্গা করিলে ? নিষ্ঠ্য কইয়া, তেমন ধীয় জনে, প্রাণে নাশিলে !!

निनाकन कथा छनिया, अस्ति इहेनू कॅमिता.

মাধ্যে দিভেছি গালি, স্বতি ক্রোগ করিয়া। এমন সময়ে, আসিল সেখা। বহু লোক গাইয়া।।

> 'বিখন ভোমারে, সেরপ প্রকারে, করে ধরাশায়ী, শক্তর দলে ৷

À.

পবিত্র প্রেণ্যা

(महे अपमार्त, वाह्कनिकात,

कागीमवाज्यात, किरियावरताः

মাইটা ভথায়, কলে সমুদায়,

व्यागीतम्ब स्मरे, निश्म-कथा । कृति निश्चक, लीस नक् लाक,

আপ্নি সত্র, সাইলা ভবায়

কাদিতে।ছ আমি- শদ- অনুগামী,

श्रेशः, त्यांशन ख्राम्हा श्रा

प्रियोश भारत, रालाश योबर

ক্ষিণে ভার, পশ্চাতে ধার ৷:

করি মার মার, বিচারক ভার,

পাছে পাছে, জ্ৰুত গমনক'রে : পোলেনা মাধ্যে, আর সঞ্চিস্থে,

दक्रन कदिशा, खानिल धंदत ॥

मिर जिस भूरत, शिल कामां **ब**रत.

মাধব, ধরা না পড়িল আর। পরে তুমি যেখা, প'ড়েছিলে দেখা,

अरच्यन इ'ला. अरमक वात।।

ना পেয়ে ভোমারে, সকলে বিচারে,

দস্যাগণে শব, ভাষায়ে দিল। এ কথা প্রবণে, আমার ক্রন্দনে,

नकल अध्दित, इहेग्राहिन।।

ভ্যক্তি নিজ শোক, মোরে বিচারক, যতন করিয়া, পিডার সনে। शार्वाद्य (भाषाद्ये, शिला निक शाद्ये. সঙ্গেতে লইয়া, ডাকাতগণে!। গিয়া পিতাল্যে, পাগলিনী হয়ে. मिवा मिनि कंति, जाशन मन । আহার নিজায়, ত্যাজিলাম প্রায়, বাঁচিতে বাসনা, ছিলনা ক্ষণে ।৷ धरे वित्रकात, लागि शुनर्सात. वामात की दिल. (मिश्ल कार्ट) কৃত্তিত স্বাই, তব প্রাণ নাই বিরজা কহিত, "অবশ্য আছে"।। বিরজা কাইড, "যদ্যপি মরিড. भव-अनम्ब इहेर्द क्रम । नशा भागष्टिल, भारत लूकाहेल, भारेल कथम, मगरा (हर्न १। लग्न (यात यान, (शाल मयाशार्व-नद्र (इडना, शाहेहाहिल। वाँ हाट की वन, कृति भनाश्चन, গোপন স্থানেতে, আপ্রয় নিল।। कोविक त्राह, गुरश्क अर्गह, (शत्म नयांकात्र, जानित्य रह्या ।

প্রেরি দূভগণ, পোলে করেষণ, করিব গমন, থাকিবে যেখা ॥" বিরজার কথা, না করি অন্যথা,

হ'লে হ'তে পারে, ভাবনা করি । করি **আজ কাল,** গেল কভ কাল,

স্থুই আশায়, জীবন ধরি।। বহু অমেষণ, করিয়া যখন।

क'त्लामा मञ्जाम, चाक्र कि नाहै। य'दब्र ভाविशा, स्माद वृक्षाहेशा,

বিবাহ দেওয়াতে, চাহে সকাই।! ভোমারে ভুলিব, অন্যেরে বরিব,

ইহা কি কথন করিতে পারি ? সবে একমত, বিষম বিপৎ,

গৃহে থাকা দায়, হইল ভারি।। গোপন করিয়া, ভবন ভ্যাজিয়া,

বিরজার সহ তৈরবী হ'য়ে। জমি নানা দেশ, বিরজাই শেষ.

হেথা আনে, সংযুক্তি করে।। দেবভার সেবা, সদা করে যেবা,

ভানি এই ভাষ- সকলের পার্ম :"
ভাজি বুঝিলাম, বিফল নয় ৷:"

ও সব বার্ডা কহিলে স্ত্রীপরৎ শুনে খ্রংবিত শক্তি,
কহিলা, বিত্ত পেয়েছ তুখ, পেয়েছ তুখ !
দেখিলে মোরে কি পাপ ক্রনে,
এত যে তুখ মোর কারণে,
শুনিহা তুখ, ফাটিছে বুক, ফাটিছে বুক।।
বিপদ এত যাহার জন্য,

ভাষারি বিনা জাননা অন্য,

ৰতও গুণ, ভোদার আছে, ভোদার আছে। বিশেষ আমি হ'য়েছি হ'ত, জেনেও মোর প্রণয়ে রভ,

এমন সভী, আর কে আছে, আর কে আছে ।৷ ভেমন দায়ে পেয়েছি প্রাণ, ভোমারি পুন্যে হেতু কি আন ?

স্থামিও ধন্য ভোমারি ভরে, ভোমারি ভরে। যাহার সৃষ্টি এমন রত্ন,

দেই দে করে এড অব্দু,

বুঝিডে নারি, কেন যে করে, কেন যে করে।। পেরেছি প্রাণ পোরেছ প্রাণ,

वित्रद् छेट्र निलाक क्षेत्र, । देशे अली क्लालि हिल, क्लालि हिल ? সময় মন্দ হইলে পরে,
 তুর্মল শক্ত প্রবলে ধরে,
 তুর্বা তুঃখ, মাধব দিল, মাধব দিল !!
 জানিলে শক্ত মাধব ভণ্ড,
 তুখনি ভারে দিভাম দণ্ড,

এ কথা বলি, রাগেতে কাঁপে, রাগেতে কাঁপে। স্বমা কহে ছাড় সৈ কথা, পাপির শান্তি এড়াবে কোঁথা,

ভূগিবে দণ্ড, আপন পাপে, আপন পাপে।। এখন বল সে বিবরণ, মাধব-চক্তে হ'য়ে মোচন

কেমন করে, কোথায় ছিলে, কোথায় ছিলে ই আমার দশা কি হলো পরে, বেঁচেছি কিয়া গিয়াছি মারে,

কিরিয়া ভূত্ব, কেন না নিলে,কেন না নিলে ?।*
একথা ভনি শরৎ কয়,

বধন যেই ঘটনা হয়,

तकल कथा दिल्लंग क्र'टड, दिल्लंग क्र'रत ।

खवाक इह जाकर्त्र गृनि, निह्दत উঠে वृहेना खुंदत, वृहेना चांदत है।

সপ্তম সর্গ।

হলো কথার কথার, রজনী প্রভাতপ্রায় কহিলা শরৎ, যদি হয় মভ, লয়ে আদি শিবিকায়। কাদীমবাজার, বিচারকাগার, সত্তর যাব ভথায়।

ভূথার ছুদিন রব, ইভিহাস সব কব, গোলাটে বাইয়া, বিবাহ করিয়া পরে স্থী হবে হব। আমার ভবনে, বাব শুভক্তে, সাজিয়া মু**গল** মুব্

ন্ত্ৰমা সন্মতি দিলা, বাহক ডাকি আনিলা, স্বমা দোলায়, পাছে বিরজায়, স্থিনী করি, চলিলা। দিবা প্রকাশিল, প্রহর বাজিল, প গ্রামান্তরে উত্তরিলা। বিশ্রাম আশে তথার, চাহিয়া ফিরি বাসার, দেখিলা মন্দির, সেই বিদেশির, বিদেশী চিনিয়া তাঁর। চমকি উঠিয়া, নিকটে আসিয়া, আদর বহু জানায়।

সন্তোষে কথার ছলে, ব'স পাক নাহি-বলে,
শরতের আশা, ভারি গৃহে বাসা,
লইয়া রব সকলে।
সেত না বলিল, আপনি কহিল,
বাসনায় স্থকোঁপলে।।

বিদেশী লজ্জিত হ'য়ে, বাসা দিল গৃহে ল'য়ে,
কিন্তু অনুচিত, হইল কুপ্তিত,
বেন. ঞ্ড্সড় ভয়ে ৷
হত-ধন ধরে, সাধু দেখি ভরে,
বেমন চোর হাদরে !!

বিদেশির প্রণারিণী, অন্তঃপুরে ছিল। শুনিশীসন্ত্রীক কোন, অভিথি আইল।। দেখিতে কৌতুক-পরা, বহিংকোঠে আসি মুন্না, একেবারে শরভের, সন্মুধ্যে পড়িল। 'n

শরৎ ভাষারে দেখি, কহিলা "চপলে! একি বি ভোষার এখানে আসা, কৈমনে হইল ?।"

অপ্রতিত হ'রে রামা, কাটিয়া জিহ্বার !
আমতা আমতা করি, কেলফেল চায়।।
বিদেশী নিকটে ছিল,তাহারেও জিজ্ঞানিল,
দেও নিকওর হ'রে, মাথা চুলকার!
শরং বুঝিল মনে, "সেই প্রেমে দ্বই জনে,
মজিয়া, দম্পতীভাবে, রয়েছে হেথায়!!

বিদেশির প্রতি করি, বছ তিরস্কার ।
কহিলা "ভোষার নহে, ভজ ব্যবহার ।।
পাঠালাম কুলজারে, পতি-গৃহে পাকিবারে,
তৃমি কি না ধর্ম নাশ, করিলা ইহার ?"
বিদেশী ভয়েতে ত্রস্ত, ধরি শুরুতের হস্ত,
বলে "অপরাধ ক্ষমা, করহ আমার !।"

শরৎ কৰিলা, "দোষ, ক্ষমিবার নয়। ক্ষমি যদি বেশি দোষ, চপালার হয়।" জিজ্ঞাদিলা চপালায়, "বথার্থ বল আমায়, ভূমি কি খেলুায় কুল, ভাজেছ নিশ্চর? অথবা বিদেশিসনে, মঞ্জিয়াছ প্রলোভনে. कुलै, १र्फा, याम, ७३ क'(त्रष्ट् निगद्र ।?"

নখে মাটি থোঁটে রামা, লজ্জার পড়িয়া। ইহার উত্তর দিবে, কেম্ন করিয়া।? আধোৰননেতে রহ, শর্থ আবার কয়

'বল বল না বলিলে, দিবনা ছাডিয়া।' দেখি পীড়াপাড়া বড়, শরং না ছাড় দড়, উত্তর করিল রামা, সরম খাইবা।।

'প্রণার কি হয় কভু, একের বতনে ?
প্রথমেতে অনুরাগী, দেঁছে মনে মনে ॥
অনুরাগ হ'লে পারে, যতন মিলন তারে,
সাধ অনুসারে যত, করে তুই জনে ।
ভূমিত আবর লও, বিবেচনা ক'রে লও,
হ'তে পারে এবীন দোব, কাহার কেমনে ॥"

চপলার কথা শুনি, শরৎ বুঝিল।
"এখানে মুর্বিরপনা আর না সাজিল।
জ্ঞানিত চপলা সেই, আমারেও জানে এই,
আমারে নাপেয়ে শেষে, এ প্রেমে মজিল।
মিহা গওগোল আর, জেনে লই সমাচার,
কি প্রকারে ছুই জনে এখানে মিলিল।।"

বাসিয়া কহিলা, "ভাল. কহ বিনোদিনি! কাপায় কেমনে ভোমা, পাইলেন ইনি গা" নেথি শরতের হাস্যা প্রকাশ করিয়া আসা, "কহিল, জানত আমি পতি-বিরহিণী। কপালে জাছিল যাহা, কালেতে ঘটেছে ভাহা, সুধু আমি নহি এতে, রাধা কলক্ষিনী!!

শুনিতে চাহিলেঁ কহি, শুন সে ব্যাপার।
তুমিত পাঠায়ে দিলে, শুগুর-আগার।।
পাডেছি বিদেশি-প্রেমে তুমি বুরোছিলে জ্বেম প্রে আসি মিলিলাম, হুজনে আহার।
সেই হ'তে এই স্থলে, আছি যেন হুধে জ্বলে,
বন্ধভাবে এই দোষ, ক্ষম্থ আমার'।।

সুষমা বসিয়া ছিলা, ঘরের ভিতর।

এ সব রতান্ত করি, প্রবণ-গোচর ।

দেখিতে হ'লো বাসনা, কে বা বটে এ ললনা,

মুখ বাড়াইয়া দেখি, কহিলা সত্তর।

"একি বিচারকার্জে! তুমিই এ কায়ে ম'জে,
কলব্রিনী হ'লে? ছিছি একি দুণাকর।"

সুবমার কথা, শুনিয়া প্রবিশে,
কৰিলা শরৎ, "পুমি, চিনিলা কেমনে ।"
স্বমা উত্তর করে, "বিচারক স্বেহভরে,
কাসীমবাজারে মোরে, রাখিলা ভবনে!
দেখিয়াছি চপলায়, তথন ছিল তথার.
সখীভাবে, হাসিত ধেনিত মোর সনে ।

তথন শুনেছি, এর বিবরণ।
বিবাহান্তে পতি-সঙ্গানা পার কখন।
ইচার শ্বভর-ধান, দেবীপুর নাম আন্ন চতুর পভির নাম, করেছি প্রবণ।
তুনি গোলে যে সময়ে, চপদা ছিল আলয়ে, কাসীয়বাজারে বাসা, নহে সে ভবন।

চিনেছিলে তুৰি, শুনি যার শ্বর ।
শ্বরে পিতৃতুলা হবে, ইহার সোদর ।
ভিনি যুবজানি হ'য়ে, থাকেন আপনালয়ে,
চপলাও ভধায়, থাকিভ নিরস্তর ।"
এই বার্ত্তা শুনি কাণে, শ্বং আশ্চর্য্য মানে,
বিদেশির প্রতি ক্রোধ, বাড়ে অভঃপর ।

किला, "विस्ति । क्योंति मास्यक ।

শ্বলা সরলা মগ্ন, এ পাথ-পক্ষেতে । তব পাপ-চেষ্টা ক্রমে, চপলা প'ড়েছে ক্রমে, নতুবা অবশা বেত, বামি-ভবনেতে। অভিশয় পাপী তুমি, লোকে অবিশ্বাস-ভূমি, আমিওত পর, বেখেছিন্ন সংখ্যেত।

ভদের আকারে অভদে বাচার।
কুলজা কুলটা, ভিন্ন করনা বিচার।।
হোকনা চপলা মন্দ, ভাঙ্গিত কি লজ্জা-বন্ধ।
প্রালোভনে মুক্ষমন, না হ'লে উহার ?।
জেনে শুনে পাপ কর, লোকধর্মে নাহি ভর,
হেন বাভিচার দোঘ, নহে ক্ষীব্রে ।।

বিদেশির প্রতি, এরপ প্রকারে।
ভিরক্ষার করি, নিরখিলা চর্যালারে।
ভাহারেও ভিরক্ষার, করিতে বাসনা তাঁর,
মুখরা ভাবিয়া কিন্তু, ভরিলা ভাহারে।
বথার নাহি মাদনা, ভবার মুর্কিপনা,
খাটিবেনা জেনে শুনে, কে করিতে পারে গ্র

যদিও চপলা, মুখরা বিষয়। ভাজেছে দারীর বোগ্য, সরম সম্ভব ।। পরিচয় বাক্ত হ'লে হেঁটমাথা নাহি তে'লে,
চনা লোকে নোমী হ'লে, বড়ই সরম।
মুখে কথা নাহি ফোটে, পদ নথে মাটী থোঁটে,
বুকে সরমের চেঁকি, পড়ে দম্দম্।

বিদেশির নির্দ্রো হেন, ভাকিল এখন :
ক'রে স্থমার বচন প্রবিণ ।।
না বুঝি করিয়া পাপ, পরিণামে পেয়ে ভাপ,
থেমন মনের উচাটন ।
ভেমনি হইয়া মন, অস্তরেভে চিস্তে ঘন,
ফেল ফেল নয়নে ঈক্ষণ ।।

তথবা যে পার্মর, ভাবি নিজমরে।

তমে অনল লাগারে দক্ষ করে।
শেষে অম মুচে গোলে, নিজগৃহ টের পেলে,
থেলেভে যেমন ফেটে মরে।
বিদেশী ভেমনি ধারা, হ'লো ঠিক বোকা পারা,
চমংকার ভাবিয়া অস্তরে।

জ্ঞানাঞ্জনে হ'লে পরে নির্মাল নয়ন। বেন দেখায় নধীন পুরাতন।। হ্রমার সে কম্মা, নিষ্মেশির জ্ঞানীঞ্জী। চপলায় দেখায় সুতন।
চপলারে দেখে কণে, কণে চিস্তে মনে মনে,
এই ভাবে গেল বহু কণ।!

বিদেশির ছেন ভাব কেন বে হইল।
দেখি শরৎ বুঝিতে নাপারিল।।
"বিলয়ে নাহিক ফল, কাসী্মবাজানে চল."
বিদেশির প্রতি আজা দিল।
"বদি না যাইতে চাও, জোর করি লব' ডাক,
মুখে মুখে ভাকিয়া কহিল।।

"এদেশের শান্ধিরক্ষা, যেই জন করে।
তৃমি লয়েছ তাঁহার কন্যা হ'রে।।
তিনিই করি বিচার, যে শান্তি হয় ইহার,
আপনি দিবেন ভবোপারে।"
ইহা বলি সন্ধিগণে, বলে, "উঠ সর্বজনে,
শাহি রব চলহ সন্ধরে।!"

সরমেতে বিদেশির, বাক্য নাহি সরে।
কিন্তু না কহিলে নয় কিবা করে।
ছেটিমাথা করি কয়, "শুন শুন মহাশয়।
শাক্তি হিজে হইবেনা শুরে।

বাহার যেমন কর্মা, ভাষারে ভেমনি ধর্মা, শান্তি দেন মরম-ভিতরে ॥

থাকিবেনা ছাপা, তাই কহি প্রকাশিয়া।
ত্রম স্থানতাবেতে মন দিয়া।
ঘটিয়াছে এ সকল, বছবিবাহের কল,
নিজ-মৃত্যু স্থাদে তুবিয়া।
তব সন্থিনীর বাক্যে, চেতন পেলাম লক্ষ্যে,
ছিছি লাজে মরি গুমরিয়া।

ভানিলেন যে চতুর, চপলার স্থামী।
সেই পামর চতুর এই স্থামি।!
বিবাহ করিয়া পরে, না যাই শৃত্তর-স্থরে.
বহু ভাগ্যা এতে নহি কামী।
ঘটনা ক্রমে ইংগর, পতি থাকি হই জার,
শ্যাতি হ'লো দশ্দিক্-গামী।।"

শ্বন বিদেশির বাণী।
শবং কহিলা, "তুমি চতুর তা জানি।।
চাতুরী করিয়া, চতুর হইরা,
ফাকি দিবে অনুমানি।
লম্পাটেরা অভি, উপাক্তমতি,

ভাল হে ভাল বাখানি !!'

মে নিৰেশা পুন: কহে !

"শুনিলে যে কথা, ভাহা সভা, নিখা।

মিখা ভাব কেন, কে বা আছে হেন
গ্ৰানি কহি, প্লানি সহে ?

মা কহিলে নয়, ভাই সমুদয়,

হখা, ওপ্ৰ নাহি বহে !!"

সংশ্ আশুর্য্য মানিল।
শবং, সুষ্মা বিরজা, আর যে ছিল।।
আকাশ হইতে, পড়িল এমতে,
চপলাও চম্কিল।
অধিক লক্তায়, উপরে না চায়,
মাটিতে মাটি হুইল।।

"সভা হ'লে হ'তে পারে।"
ইহা ভাবি শরৎ, প্রমাণ লইবারে॥
নানা প্রশ্ন করে, বিদেশী উত্তরে,
রুঝাইয়া দেয় ভারে।
কহিল বিদেশী, "বুঝিবে বিশেষি,
গোলে বিচারকাগারে॥

তিনি চিনেন আমারে।
ইহা হ'তে আর কি, প্রমাণ হ'তে পারে।?"
শুনি এ কথায়, হ'য়ে স্ফীপ্রায়,
শরৎ মনে বিচারে।
"কথা মন্দ নয়, বিচার নিশ্চয়ন হ'য়ে যাবে একেবারে॥"

বিদেশী কহে আবার।
"শুন এক অনুরোধ আছ্রে আমার॥
করহ হীকার, দব সমাচার,
হবেনা কভু প্রচার।
হলে প্রচার, বহি লভ্যা-ভারদেশে থাকা হবে ভার॥

শরৎ ক্রে স্নীকার।
'বদ্যাপ চতুর হও, হবেনা প্রচার।"
সন্তুষ্ট হইয়া, বিদেশী ধাইয়া,
করেতে ধরিল, তাঁর।
পারে স্বাকার, অভিথিসৎকার,
করে করি সদাচার॥

পরদিন প্রভূয়েতে।

208

কাসীমবাজারে সবে, চলে একজেতে।
আসি উত্তরিল, ভৃত্যে বার্তা দিল,
বিচারক সম্ভানেতে।
আসি আতিবাড়ি, লায়ে বাড়ী,
সুধ লভি হানয়েতে।

শর্ৎ সহিত, দেখি আচম্বিত, चूराग, इलला, विद्याली । বিচারের পতি, চমকিত অতি, জিজ্ঞাসে সমাদ বিশেষি ।। "শরৎ ভোমার, বিপদ ব্যাপার, শুনিয়া ভোমার জীবনে। नत्मह कतिया, पूर्धिक इरेया, ভেবেছি জাণ্ডাতে স্বপনে ॥ পরে সমাচার, পাইয়া ডোমার, (मिटिंड वामना कतिशा। , ভাবিতেছি মনে, তব বিবরণে, व्यान्धरी यानिय छनिया । आम्बर्ग (यमन, करत्रिक् विसन, ভভোধিক দেখি ঘটনা। চণলা চতুর, হ্বমা বধুর, সাক্ষাৎ আশ্বর্যা যোটনা।

চপলা কেমনে, চতুরের লনে, মিলিল নাপাই ভাবিতা। वल दल दल, एन कथा मकल, 📑 অখিত হইব শুনিয়া॥ একথা ভানিয়া, হানয়ে ভাবিয়া, भावत विकात कतिल । "तिरानी, छङ्त. भक्का र'ला पृत, প্রভিন্তা পালিতে হইল ॥" শরি এই কথা, করিয়া অন্যথা, ধারতা চপলা ঘটিত ! থড় ব্যক্তিচার, নাক্রি প্রচার, অন্য ভাবে করে রচিত দ महर कि वाल, ভादि विसामाल, চপলা চতুর ভুজনে। विश्व नाशिन, नर्म यूपिन. ভরে काँशि डेट मध्य ।।

বিচারকে সম্বোধন করিয়া।
চপলা চতুরে চাহিয়া।
কহিলা শ্রৎ, য**টে** য**থাব**ৎ, প্রথম স্থাপ্ৎ,
স্মরিয়া।

শ্রন্থাতে দেরিল. সমর বাধিল, মুক্তি ভ ইল, যুঝিয়া ।!"

বিচারক এই কথা শুনিরা। দশনে অথর চাপিরা।। ক্রোধভরে কয়, "অরে তুরাশয়, মাঘব নিন্ধু,

इडेर्!।

ै गि**लि तथकान, शी**फ़िलि (कश्रान, अभन क्राक्रास धतिशा।"

্র শরং কছিল, 'থেয়ে চেডনে। দেখি কেছ নাহি সে ক্রে। বিপদ দেখিয়া, ব্যকুল ছইয়া বেড়াই স্থানিয়া, স্থানে।

मक्कान शंलोगा, शंला विविद्याः, शंहरह ललरः वृद्धांन ॥ •

কণপরে পাইলাম দেখিতে।
পড়িয়া রয়েছে ভূমিতে।।
স্থমার প্রায়, চিহ্ন সমুদার, রুক ফেটে যায়,
ভাবিতে।

निक्त हरेल, **डांकांटड या**जिल, व श्रांग वाहिल, कांनिटड ॥ কাঁদি আর হায় হায় করিয়া।
ভাষিছি বাতৃল হইলা।
বেখিয়া নয়নে, মেখলা বসনে, তুলিয়া যভনে,
লইয়া।

ক্লেরাখি ভাই, জীবন মুডাই, দোজাপথে ফাই, চলিয়া ুঃ

বিচারক কছে, দুখো অমিলে :

রুখা ওত ছখ সহিলে !:
অমেতে ভুলিয়া, আমারে শারিয়া, কেননা কিরিয়া,
আসিলে দ হারায়ে পুরোগ, ঘটিল মুরোগে, কপালের ভোগ,
ভূগিলে !:"

শর কহিল শকাল নাহ'লে।

অস্থ জ্ঞাজিবে কি ব'লে।

সেল'য়ে চলিল, বেগ না ফিরিল, আনিয়া ফেলিল,

যে স্থলে।

সে ফল-কানন, দেখি স্টমন, পাতিরু আসন,

विज्ञाल ॥

অভি ছংখি-বেশে মোরে দেখিয়া।
চপলা নিকটে অংশিয়া।
আভিধ্য কাবে, কাওল বতন, ভালে নাবি মৰ্ বুৰিয়া।
চপলা গলিল, সন্ধ্যাও কইল, বিশ্ব আইবং

शहिता !!

জনকত অন্চর সাহিল।

ছলে নোরে তাকি লইল ।।

কিছু না বলিয়া, একগৃহে হিচা, আবদ্ধ করিয়ারাখিল।

দর্শ-মূর্তিমতা, এই গুণবাহী, দেইদে মুক্তি,

হটল।।

সনে সেমায়ে, মধ্য গজনী।
বৈগৈ পলাইনু অমনি।।
চপলাও ধায়, পাছু নাহি চায়, জিল্ডাসিনু ভাঁয়,
ভখনি
ভূমি কোধা যাওঁ ৪ কেনবা পলাও, গৃহে ফিরি যাওঁ

তাহে এই প্রত্যুত্তর, করিল :

"চপলা মরিতে চলিল ৷

এখনি

কালি ভবসঁনে, সাকাৎ কারণে, ভ্র**ষ্টা সর্ব্ধ জনে,**-ভাবিল। সহি পরিবাদ, বাঁচি নাহি সাধ, বাঁচিবার সাধ, নিটিল।

ষ্ঠিতাম কালি, জলে তুবিয়া।
ছিন্তু তব মুক্তি লাগিয়া।
ভাষার মোচন, হইল এখন, চলেছি মরণ,
চাহিয়া।
ভাষা এই মত, বুঝাইলু কতা, নাবুঝে বিরত্ত হুইয়া।

ক হিলাম মৃত্যু-ইচ্ছা ছাড়িয়া।
সামীর ভবনে বাইয়া।
থাক মনস্থে, এদোনা এ মুখে, মরিবে কি ছুখে,
ভাবিয়া।
এ কথা শুনিয়া, নিস্থাস ভ্যাজিয়া, কহিল কাঁদিয়া।
কাঁদিয়া।

"আছে কি, না আছে, খামী কে জানে গ বেড়ায় বেখানে সেখানে ।। বিবাহ করিয়া, গেছে যে চলিয়া, না এল কিরিয়া,

এখানে :

কোণা পাব ভারে, হাব কোপাকারে, ভাজিব এবাটে পরাধে ।

এই শেষকথা, শুনি এবিংধ।

ক্ষান্ত করি আশু মরণে।
শ্রমি নানা দেশা, চতারের শেষা, পাইবা উদ্দেশ।

বজানে।

6र्शनाह निशा, मिल्फिस धरेशा, गाँवे शालाँगेशा.

अग्रा!!

চপালার বিবরণ, শ্রবণে। মনের সন্দেহ ক্ষেদনে।। চপালার প্রীক্তি, বিচারের পাতি, হয় ভূফ অভি. এক্ষণে।

ভয় গেল দূরে, হর্ম আনি স্কুরে, চপলা চভুরে. ছজনে ।।

"কহিলাম মিথ্যা বিবরণ। চপলা-চতুর-ভজ্জ, করিয়া গোপন।। জানিয়া শুরিয়া শব, করিলাম অপহ্নব, পরিণামে ভাপ শব, বুঝি এ কারণ। অথবা পারোপকারে, মিথ্যা বলা হ'তে পারে "
চিন্তে ইহা বারে বারে, শহতের মন ।৷

পুনরায় কথা আরম্ভিল।
"অবিরভ র্নেগণের, ইচ্ছা নির্মিল।!
এক স্থানে বসি শেষ, ধরিলাম যোগি-বেশ,
নিজ্জাভার সমুদ্দেশ, সে বেশে করিল।
মাধ্য ধরিয়া স্থান আসে হ'লে গ্রে পুত্র,
ভিনি মাভা আসি পুত্র, প্রাক্ষাশ হইল।

বিচারক হাউ হ'য়ে কর।

"কি স্থা হ'লাম ভাহা বলিবার নয়।।
বিধি হ'য়ে অনুকুল, এত দিনে দিলে কুল,
ভোমার ছুংখের মূল, এইবারে ক্ষয়।
ফিরিয়াছে ভভাদৃতি, হঠাৎ পাইলে ইফ,
আর না হইবে কইট, জানিবে নিশ্চয়।

শরং কহিল, "ভার পর।
তব আবাহনে আসি, হইয়া সহর॥ "
সম্মা জীবিত নাই, বিশ্বাস আছে ইংছাই,
পথেতে হঠাৎ পাই, এ আন-সোসঃ।,
স্মামীসহ চপলালে, সঙ্গে ক্রি একেবারে,

সঙ্য সর্গাঃ

জাসিলাম ভেটিবারে, তুদীয় গোচর ॥"

স্বমার প্রতি দৃটি করি। कहित्न विषातक, वलह दिवति ॥ क्रम क्रम कि छेक्स्ट्रम, ध्रिया रेख्य दो-तिर्म ছিলে কটে সে বিদেশে, গৃহ পরিহরি यूगमा नौतरव दशः भंदर (म कथा करः. यमन (स পরিচয়, ব'লেছে রুন্দরী।

বিচারক হ'য়ে আনন্দিত। নানাকখা বার্ত্তা কছে শরৎস্থিত ।। जनूरताथ कति छोत्र. इनिनं तथि छथात्र, शोघाटि करत विमात्र, जुधि यथाविछ । स्वमा विद्रका मदन, श्रीषाटि, श्रीदिन द्वापूर, হ'লো শরভের অকে, পুলম পরিত।।

সুষ্মার মাতা, পিতা, সুষ্মা বিহনে ৷ ष्यविधाम कारन (मार्ट, विन नित्रांनरन ।। দাৰ্যকাষী যন্ত্ৰ, নয় বটেডভ, শোকেভে নিয়ভ, তাপিত মনে ৷ क्ष्याणि ज्ञानग्र, एषि यत ६म, (भारकम निलम्र,

वह वक्ता

গিরাছে হ্রমা ভার, হ্রসমার দান।

কাকাশে কি শোভা পাকে, চন্দ্রমাবিসনে?।

ধনী এল ঘরে, গর স্থালো ক'রে পুনঃশোভাধরে,

সেই ভবনে।

মেণে থাকি ঢাকা, পুনঃ দিল নেখা, গগণের রাকা,

যেন গগণে॥

বহণা হ্যম। আসি, করে সংখাধন।

মৃত-কাবে হ'লো বেন, হ্রধা-বরিষণ।
ভাবে সে প্রকার, মাতা পিতা তার, চমকি দোহার,
মন নয়ন।
নেখে দাড়াইয়া, স্বেমা আসিরা, শরতে লইয়া,
ভাকে স্থন।

• "আজি শ্রকি সুষ্যা, আমার এল ঘরে।

একা নয় হারান শরতে, সঙ্গে ক'রে।।

হিলনা অন্তরে, এক হবে পরে, সুখের উপরে,

কুখ নিগরে "।

এ কথা বলিয়া, উভয়ে মিলিয়া, কন্যাবে টানিয়া,
হসুদয়ে ধরে॥

श्रिवानी (यह श्राम, वह समाहा ।

নেই জানে থেয়ে, রমাপতির জাগার।।
সকলের মন, জানক্দে নগন, ভাহাতে হথন.
ভানে জাবার।
উভয়ের শাশ, সব ইভিহাল, অনিক উল্লাস,
হয় সবালে।

রমাণতি পেয়ে, শহতের পরিচয়। কহিল জায়াতা খেন, তার্গো কারে। হয়। সাহর হইয়া, স্থানিন দেখিয়া, কন্যা সম্পিরা,

गरकार्य अस् ।

নিবর্তিল ছখ, প্রবর্তিল স্থ, হ'লো কি কেতিতুক, কবার নয়।

কিছু দিন বাস করি, প্রশুর-সদ্নে ।

শরৎ ইচ্ছিলা সাই নিজ নিকেওনে ॥

শুণুরে তুষিয়া, বিদায় লইয়া, স্প্রীক হইয়া,
আসি ভবনে ।

বধুর সহিত, হ'য়ে উপনীত, করে হরবিত,

মাহের মনে ।

नगरा ।

শুদ্ধিপত

7 के।	পণক্তি	य ७६	35
ર	2.4	नद्र कटलवत	नदक(लक्त
34	50	उक्षा दब	ड्रमारम
39	ŧ*	श्रीद्व	भाटत .
; }	4	স্পার্টিক	न्स् विक
3 0	\$\$	A300	425
20	হ্ণ	সেন্ন '	সেগা
2,5	51	सङ्	A m
ক>	3	अस्तिर्द्धः ीर	॰ मिर्क्टनीस्
৩৪	45	माग	यांच
ু প	ও	स्रान्	नाम-
85	>>	क्लिशार शना	কেশাপনা
& 8	22	मिष्गी	मिक्री
84	્૭	वावना	लावना
Altr	•	<u>সোনা</u>	टकाना
2b.	\$0	म जिली	मांक्नी
SD S	J 25	গিলি 😗	ি গিন্নী
45	२१	গিলি	शिकी
98	>4	शोषोटत .	शाका रत
5-5	2P.	আশা	আসা"
20	.54	ভোলেন।	ट्डारममा '
్దే ప		THE .	MAS
2 F	i i	ভাগু	
46,		1	

i n	•	1 M. M
~		

	· •	o ** 1	
50£ -	. 38	शासूती	[্] শাছুড়া
>00	50	ভাগুতে	ভাকুতে
400	\$0	কুঠির	কুটির
>>9	50	कारम	क्रीटल
; 3 5	27	हश ीरताह	চণ্ডালের
:84	b -	कौटम	काटन
300	ં ફ	প্রতি পরিবয	ঞাতি পাতি রয়
243	38	ক্টাৰ্ছ	छे: €
३ न्द	2 %	বিরশ	বিবশ
₹0₹ -	\$ "	পুর:৩	भूद छ
200	8	भासि	भारित
255	36139	শ্ৰন্থিত	এগৰিয়ু ভ
258	5.	धूमंत	ৰূস র
રર≹ે	>	আমাৰ	জারে হ
રર્જી	હ	আর্থর	অ (ড়েম্ব
***	9	डॉक्स्ट	ভাহিল
रंक		क्षत	क्रम्य
293	. se	स्य 🦄	• মুখ
₹89	. 8	কাতি	হ্যান্ত
280	39 .	খুতি	পু ডি
280	-३१।५२।२५	· C711	Name and Asset
380	>	नाथा	ব্যথা
₹8•	🦭 २५	র ভিত্	সমিত
386	ર ર	্ৰেণ্ড স	ं ट्राक्ट
3		্বাহে-আংহ	काट्ड-कार
260		The state of the s	भू रण